कवि दयारामनो अक्षरदेह

रचनार,

सद्गत् साक्षरे

श्री. गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी

एन. एम. त्रिपाटी एँड कंपनी.

१२८/-

રા. રા. ગોવર્ધનરામ માધવરામ ત્રિપાઠી, બી. એ. એલ. એલ. બી.

નિવૃત્તિનિવાસ—નડીયાદ.

જન્મ સંવત્ ૧૯૧૧ વિજયાદશમી. ઈ. સ. ૧૮૫૫ તા. ૨૦ મી ઑક્ટોબર.

અવસાન સંવત્ ૧૯૬૩ પોષ વદિ ૫, ઈ. સ. ૧૯૦૭ તા. ૪ થી જાન્યુઆરી શુક્રવાર.

कवि दयारामनो अक्षरदेह

अथवा

गूर्जरभाषाना प्राचीन महाकविओमांना छेल्ला महाकविना
हृदयना उद्गारोना मर्मभागनुं शोधन.

रचनार,

सद्गत् साक्षर श्री गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी.

बी. ए. एल्. एल्. बी.; वकील, हाईकोर्ट. मुंबाई.

प्रकाशक,

रमणीयराम गोवर्धनराम त्रिपाठी.

'सर्व अधिकार स्वाधीन.'

मुख्य एजंट, एन. एम. त्रिपाठी ऍंड कंपनी.

मुंबाई.

संवत् १९६४. सन १९०८.

मूल्य रु. १-४-०

मुंबाई,
(निर्णयसागर प्रेसमां मुद्रांकित)

प्रस्तावना.

अमदावादनी गुजरात साहित्यसभाना अधिकारीओनी इच्छाथी आ लेख तैयार कर्यो हतो. परंतु सभामां वांचवाने माटे योग्य विवेचन करतां लेखनो विस्तार वधी जवाथी एना केटलाक भागने ज वांची बताववा योग्य लाग्या. ते पण लेखकनी शरीरप्रकृतिनी अव्यवस्थाने लीधे बन्युं नही. अंते गूर्जर साहित्यना सर्वांगना शोधक रा. रा. केशवलाल हर्षदराय ध्रुव बी. ए. ने गया भाद्रपदमां लेखके आ लेखना उक्त भागोने उक्त सभा पासे वांची आववा विज्ञप्ति करी ते तेमणे कृपा करी स्वीकारी. हवे ए भागो समेत सर्व लेख आ ग्रन्थद्वारा गूर्जर विद्वानोनी सेवामां मुकवामां आवे छे.

कलकत्तानगरीमां त्यांना अने अन्य देशोना विद्वान अने प्रतिष्ठित गृहस्थोनी "एकलिपि विस्तार परिषद्" नामनी सभा स्थपाई छे. तेना उद्देशने अनुसरी आ लेख देवनागरी लिपिमां मुद्रांकित करावयो उचित धार्यो छे. आटला प्रयोगना अनुभवने अंते बीजा म्होटा गूर्जर ग्रन्थोने पण आ लिपि अनुकूळ पडशे के नही तेनो विचार थशे.

गो. मा. त्रि.

नडीआद, विक्रमार्के १९६२.

" दयारामनो अक्षरदेह " ए संबन्धी केटलांएक छुटक स्मरणो.

ज्यारे कॉलेजमां रजा पडवाथी हुं नडीआद जतो त्यारे म्हारा समयनो म्होटो भाग गोवर्धनभाइनी साथे भिन्न भिन्न विषयो उपर वातो करवामां जतो. त्हेमां त्हेमना लेखनवाचन विषे पण घणीवार वातो थती. ते प्रमाणे " दयारामनो अक्षरदेह " ए संबंधी पण त्हेमणे म्हने प्रसंगे प्रसंगे वातो करी हती. ते वातो विगेरेमांथी म्हने जे थोडुंघणुं स्मरणमां छे ते अत्र एकत्र करवा प्रयास करुं छुं. " दयारामनो अक्षरदेह " ए पुस्तक केवी रीते लखायुं? त्हेमां पूर्वे केटलुं लखवा विचार हतो ने ते आ रूपमां केम लखायुं? ते लेखनो म्होटो भाग पुष्टिमार्गनां रहस्यो समजाववामां केम रोकायो?—ए अने एवा एवा जिज्ञासाना अनेक विषयो विषे जाणवाकरवामां जो आ नम्र स्मरणसंचय काममां लागशे तो हुं कृतकृत्य थइश. खास विज्ञप्ति मात्र एटली ज के आ स्मरणसंचय वांचतां नीचेनी बाबत उपर ध्यान आपवा जेवुं छे. जे जे थोडुं घणुं मने याद छे, जे ताजा संस्कारो म्हारा स्मरणपट उपर पडेला छे, त्हेनुं यथास्थित प्रतिबिंब वाचकनी समक्ष धरवा हुं म्हाराथी बनी शके तेटलो प्रयास करीश तथापि गोवर्धनभाइए म्हने जे कांई कह्युं हतुं ते हुं म्हारी बुद्धि तथा दृष्टि अनुसार समज्यो होइश; एटले त्हेनी विश्वासपात्रता केटली गणवी त्हेनो निर्णय वाचके करवानो छे.

१ गोवर्धनभाइ डायरी तथा "स्क्रॅप" बुक् राखता अने त्हेमां जे अनेक बाबतो लखता ते साथे पोतानी करेली, कराती तथा करवानी प्रवृत्तिओ संबन्धी पण लखता. ते प्रमाणे ईसवी सन १९०६ ना संबन्धनो कार्यक्रम लखी रह्या ते वखते हुं मळवा गयो हतो. त्हेमणे म्हने कह्युं के " आ वर्षे गुजराती साहित्यनी सेवाखाते ' साक्षरजीवन ' तथा ' दयारामनो अक्षरदेह ' ए बे लखवा विचार छे. दयाराम तो महिनामासमां लखी नांखीश ने

पछी साक्षरजीवन पण बनशे त्यां सुधी आ वर्षमां ज पुरूं करीश. अमदावादवाळी गुजरातसभाने घणा वखतथी म्हें दयाराम संबन्धी लखी मोकलवा कह्युं छे एटले हवे ते ऋण माथेथी प्हेलुं उतारवा विचार छे." आ उपरथी जणाशे के अमदावादना केटलाएक उत्साही साहित्यप्रिय जनोए स्थापेली गुजरात-सभाना स्तुत्य प्रयासनो आ "दयारामनो अक्षरदेह" एक शुभ परिणाम छे. साहित्यपरिषद् जेवा महारंभ माटे, तेम ज अनेक गुर्जर साक्षरोनी जयन्तीनिमित्तना लेखसंग्रह माटे, जेम ते सभाने अभिनंदन घटे छे, तेम ज 'दयारामनो अक्षरदेह''ए पुस्तकनुं कारण थवा माटे पण ए सभाने ज मान घटे छे.

२. म्हें एक दिवस पुछयुं के "अक्षरदेह" एवुं नाम शा माटे राख्युं हशे? त्हेमणे जवाब दीधो के "ते संबन्धी म्हें लख्युं छे एटले ते वांच्याथी तमने बराबर समज पडशे. सगवडनी खातर लेखकोना हुं त्रण विभाग पाडुं छुं. प्रथम वर्गमां एवा लेखकोनो समावेश थाय छे के जेओना लेखोये सारा होय छे ने जेमनां जीवन पण सारां होय छे, त्हेमना आचारविचार बन्ने सात्त्विक होय छे ने त्हेमना लेखोमां पण सात्त्विकता ज दृष्टिगोचर थाय छे. तेवा लेखकोनां जीवनचरित्रो तथा पुस्तको ए बन्ने संबन्धी बहु लखावुं जोइए, जे वांच्याथी लोकोनुं हित थाय. तेवा लेखकोना संबन्धमां जेटलुं लखाय तेटलुं ओछुं. बीजा वर्गमां एवा लेखकोनो समावेश थाय छे के जेमनां पुस्तकोमां सारा हितकर विचारो प्रकट करेला होय छे पण गमे ते कारणथी त्हेमनुं जीवन राजस के तामस होय छे, तेवा लेखकोनां पुस्तको संबंधी ने त्हेमना विचारो संबन्धी पुष्कळ लखवुं परन्तु त्हेमना जीवननी प्रमाणमां उपेक्षा करवी. तेवा लेखकोनां जीवनो संबन्धी बहु विस्तारमां लखवाथी लोकोने लाभ थवाने स्थाने हानि

विशेष थवा संभव छे. परन्तु त्हेमने अन्याय थाय ते ठीक नहि माटे त्हेमना सद्गुणो संबन्धी तथा त्हेमनां पुस्तको संबन्धी विस्तारथी लखवुं जोइए अने त्हेमना दोष उपर बहु लक्ष आपवुं न जोइए. लेखकोना लेख सारा हितकर विचारोथी पूर्ण होय ने कदाचित् त्हेमनुं जीवन बहु प्रशंसा करवा योग्य न होय तो तेवा लेखकोना लेख पण न वांचवा ए म्हने बराबर लागतुं नथी. दुनिआमां एम तो कोण बधी वाते संपूर्ण छे ? कोई-नामां गुण वधारे होय ने कोइनामां ओछा होय. संसा-रमां तो सारासारनां, गुणदोषनां, मिश्रणो जणाय छे ने फ़ेर मात्र अंशनो ज र्हे छे. माटे म्हने तो उत्तम मार्ग ए लागे छे के सार-ग्राही थवुं. जेटला गुण होय त्हेनुं ग्रहण करवुं ने दोषनी उपेक्षा करवी. आपणे हाथे अन्याय न थइ जाय त्हेनी बहु संभाळ राखवी. त्रीजा वर्गना लेखकोनां तो लखाणो तेम ज जीवन बन्ने लोकोने अहित करे तेवां होय छे. तेवा लेखकोनी तो उपेक्षा ज करवी. संक्षेपमां एटलुं ज के जेथी लोकोनुं हित थवा संभव छे ते उपर वधारे ध्यान आपवुं ने जेथी लोकोनुं अहित थवा संभव छे त्हेनी उपेक्षा करवी.

दयारामना संबन्धी हजी सुधी जे कांइ लखायुं छे ते उपरथी म्हने ने बीजा वर्गना गणवा जेवा लागे छे. कोइकने त्रीजा वर्गना पण लागता हशे. हवे दयारामना जीवनना संब-न्धमां जे कांइ लखायुं छे त्हेने ज जो खरुं मानीए तो दयारा-मनुं जीवन जाण्याथी लोकोने कांइ बहु लाभ थाय तेम जणातुं नथी. जे लखायुं छे ते खरुं छे के नहि त्हेनो निर्णय करवाने जे साधनो जोईए ते मेळववाकरवाने जे श्रम करवो पडे ते म्हाराथी बनी शके तेम नथी. एटले म्हें तो मात्र त्हेमनां छपा-यलां काव्योना संबंधमां लखवानुं उचित धार्युं छे. त्हेमनां जे

लेखो विगेरे छे त्हेने हुं ' अक्षरदेह ' नुं नाम आपुं छुं. तम्हें रघुवंश भण्या हशो तो तम्हारा वांचवामां सिंह अने राजानो संवाद आव्यो हशे ने त्हेमां राजा सिंहने कहे छे के ' यशः-शरीरे भव मे दयालुः' ए तमने स्मरणमां हशे. त्हेणे जेम यशः-शरीर कल्प्युं तेम हुं आ अक्षरशरीर कल्पुं छुं.

३. एक दिवस म्हें ज्यारे पूछ्युं के ' केम दयारामनो अक्षर-देह समाप्त थयो ?' त्यारे त्हेमणे उत्तर आप्यो के " प्हेलां म्हारा मनमां एम हतुं के गुजरातसभाना प्रयोजन माटे बस थइ रहे.. तेटलुं ज लखवुं परंतु जेमजेम हुं दयारामनां काव्यो वधारे ने वधारे वांचुं छुं तेमतेम म्हने वधारे ने वधारे रहस्य जणाय छे ने तेथी वधारे ने वधारे लखवानुं मन थाय छे. हमणां हुं एवा विचार उपर आव्यो छुं के दयारामनां काव्योमां समा-यलां पुष्टिमार्गनां रहस्यो खास विस्तारपूर्वक समजाववा जेवां छे तेथी दयारामने वधारे न्याय थशे. तेम ज म्हने एम लागे छे के वैष्णवमार्गनां आधारभूत तत्त्वो तथा सिद्धान्तो पण समजा-वाशे. वळी ते द्वारा भक्तिमार्ग संबन्धी पण कांईक म्हाराथी लखाशे. एटले हवे तो टुंका निबंधने स्थाने पुस्तक लखवा विचार थाय छे."

म्हने एम लागे छे के आवा विचार उपर आववामां नीचेनी त्रण बाबतोनी असर पण थइ हशे.–

(क) एक दिवसे त्हेमना टेबल उपर श्रीमद् वल्लभाचार्यना भाष्यवाळी भगवद्गीता पडेली जोइ, म्हें पुछ्युं के " आ वळी अंहीआं क्यांथी ? तम्हें आ वांचो छो के शुं ? " त्हेमणे उत्तर आप्यो के " हा. " म्हें पुछ्युं के " शा हेतुथी? " त्हेमणे जवाब दीधो के "आपणा गामना रा.रा.लल्लुभाई प्राणवल्लभदास हमणां वल्लभाचार्यना संप्रदायनुं ज्ञान प्रसारवाने शां साधनो

योजवां त्हेनो विचार करे छे. त्हेमणे म्हने एम कह्युं के ' शंकराचार्यनां ने रामानुजाचार्यनां पुस्तको युनिवर्सिटीमां चाले छे त्यारे वल्लभाचार्यनां केम दाखल न थाय? कांइ वल्लभना अनुयायीओनी संख्या ओछी नथी. शुं वल्लभाचार्यना अनुयायीओए ते पुस्तकोनो युनिवर्सीटीमां प्रवेश कराववा प्रयत्न न करवो जोइए ?' म्हें उत्तर आप्यो के ' जेने वल्लभाचार्यना सिद्धान्तो बराबर लागता होय त्हेणे तो तेवो प्रयास करवो ज जोइए, बाकी हुं पोते तो ते संबन्धी वांचुंकरुं त्यार पछी शुं करवुं ते कही शकुं. " पछी त्हेमणे ते संबंधी शुं वांच्युं ते म्हने खबर नथी पण एम अनुमान थइ शके के कदाचित् त्हेमणे ते संबंधी जे कांइ वांच्युं हशे तेथी ते संप्रदायना संबन्धमां त्हेमनी माहितीमां वधारो थयो हशे अने दयारामनां पुष्टिमार्ग संबन्धीनां काव्यो समजाववामां ते कामे लाग्युं हशे.

(ख) त्हेमनो पोतानो योगनो अभ्यास पण त्हेमने कामे लाग्यो होय एम अनुमान थाय छे, अने त्हेनां चिह्नो त्हेमना लेखमां पण जणाय छे. पोतानी "स्क्रॅप" बुकमां पण तेओ लखे छे के " My paper on Dayaram has revealed to me the all-absorbing Yogic element in his works over which my own practice has thrown new good light. "

(ग) आ उपरान्त त्हेमनी भक्तिमयी प्रकृति पण भक्तिमार्गनुं विवरण करवामां साधनभूत थइ हशे. गोवर्धनभाइ एक पक्षे वेदान्तदर्शनना अभ्यासी हता अने त्हेमना विचारोमां तत्त्वशास्त्रना अभ्यासनी असर स्पष्ट रीते देखाती, परन्तु बीजे पक्षे कोइ हरिभक्तनामां अथवा तो कोइ आरूढ (theist) मां ज आशा राखी शकाय तेवी ईश्वरश्रद्धा त्हेमनामां दृष्टिगोचर थती. " ईश्वर करावे ते करवुं छे, " " प्रभुनी इच्छा (Great Will) हशे ते थशे " एवां एवां वचनो ज्यारे ते बोलता त्यारे ईश्वर-

स्वरूपनी त्हेमनी कल्पना अंग्रेजीमां जेने personal कहे छे ने जे भक्तिमार्गनी पोषक छे तेवी होय तेम लागतुं. त्हेमनी आ विचारश्रेणीनी पण'दयारामनो अक्षरदेह'लखवामां असर थइ हशे.

(४) म्हने एम स्मरणमां छे के **गोवर्धनभाइए** आ विषय संबंधी लखवानुं शरू कर्युं त्यार प्हेलां **दयारामनां** काव्यो तेओ ध्यानपूर्वक वांचता हता, अने घणुं खरूं त्हेमां उपयोगी लागे ते भाग उपर नीशानी पण करता. हुं एम धारुं छुं के आम वांचतां वांचतां तेओ केटलीएक कल्पनाओ (theories) रचता अने त्हेमनी कल्पनाओना पक्षमां के विरुद्धमां शां शां प्रमाण मळे छे ते एकठां करता, नें त्हेने अनुसरीने जरूर पडे त्यां पोतानी कल्पनामां फेरफार करता. आटले सुधीनी क्रिया घणुं खरूं मनमां ज थती. बधां साधनो (data) एकठां करी ते संबन्धी सर्वदेशीय विचार करी, ते लखवा बेसता अने पछी त्हेमनी लेखिनी पाणीना प्रवाहवत् चाली जती. वच्चेवच्चे ज्यारे खप पडे त्यारे पुस्तकोमांथी अवतरणने अर्थे वा बीजा कोइ कार्यने अर्थे पुस्तकनो आश्रय लेता. तेओ त्हेमना दिवानखानामां हिंचका उपर एक बाजुए बेशी पुस्तकना मर्मभागनुं सत्त्व चुशी लेवामां तल्लीन न थइ गया होय शुं, तेवी रीते एकाग्र चित्तथी वांचता, ते समयनुं तादृश चित्र म्हारां नेत्र समक्ष खडुं थाय छे. तेओ एक पग हिंचका उपर मूकता अने बीजो पग अर्धो सपाटमां ने अर्धो व्हार रहेतो ने तेवडे धीमे धीमे हिंचको खाता. हिंचकाना बीजा भागमां त्हेमनी सामे ज बीजां पुस्तको, केटलांक उघाडां केटलां बन्ध, केटलामां कागळना कडका मूक्या होय तेवां, विगेरे पडेलां होय. वळी एम वांचते वांचते कोइ वखते लांबो श्वास लेता ने मूकता, तो कोइ वखते 'हुँ' करीने विरामदर्शक अवाज करता,जे उपरथी एम जणातुं के त्हेमनी कल्पना खरी पडी हशे. केटलीक वखत त्हेमनुं म्होडुं बहु गभरायेलुं देखातुं ने तेवी

वखते केटलीक वार बे हाथे बधुं म्हों चोळी नांखता ने खास करीने कपाळ उपर भार दइने हाथ घसता. ते उपरथी एम अनुमान थतुं के त्हेमनुं चित्त हजी शंकासमाधान करी प्रसन्न थयु नथी, परंतु अंतिम शान्तिनी पूर्वेनी मन्थनदशा अनुभवे छे. तेओ वांचतां ते समयनुं सर्व चित्र यथास्थित म्हारा मन आगळ तरी आवे छे, अने पुनः ते दिव्य मूर्तिनां दर्शन चर्मचक्षुवडे नथी थवानां ते मर्मभेदक विचार शोकग्रस्त करे छे.

(५) पुस्तकनो केटलोक भाग त्हेमने पोताने त्यां लखायो हतो ने बाकीनो भाग पांटीआमां लखायो हतो. पांटीउं ए नामनो नडीआदना देसाइकुटुंबनो बाग छे. त्यां गोवर्धनभाइ प्लेगना समयमां रहेवा जता. त्यां तेओ एक भागमां पोतानो तंबु बंधावता ने त्हेमां रहेता. म्हारा जाणवा प्रमाणे " दयारामनो अक्षरदेह " ते स्थानमां समाप्त थयो हतो. पांटीउं नडीयाद गामथी आशरे माइलेक दूर छे. एक वखते म्हने पांटीआमां जमवा बोलाव्यो हतो ते वखतनुं त्हेमनुं चित्र म्हने हजी याद छे. ते वखते " दयारामनो अक्षरदेह " लखातो हतो. उन्हाळाना दिवस होवाथी सवारमां व्हेला जवानुं म्हें धार्युं, जेथी तडको वेठवो न पडे ने गोवर्धनभाइनी साथे वातचित करवानो लाभ मळे. आशरे सवारना आठ वागे हुं पांटीआमां त्हेमना तंबु आगळ पहोंच्यो. ते वखते तेओ कांइक लखवामां तल्लीन थइ बेठा हता. आशरे वीशपचीश कदम दूर उभो रही घडीभर त्हेमने हुं निहाळतो उभो हतो ते वखतनुं चित्र म्हारी स्मृतिमां ताजुं छे. स्थाननो देखाव बहु रमणीय लागतो हतो ने प्रातःकाळनो पवन मन्द मन्द वायां करतो हतो. तंबु व्हार कंतराणनी खुरशी उपर बेशी, एक बांक जेवुं कांइक स्हामुं हतुं तेना उपर कागळ मूकी एकाग्र चित्ते तेओ लखता हता. त्हेमनी सौम्य, सात्त्विक अने विचारशील मुखाकृति, त्हेमनुं भव्य, तेजस्वी अने स्हेज हिंग-

ळोकी रंगनुं ललाट, ह्हेमना नाकनी दांडीना मध्य भागनी अने टेरवा वच्चे मूकेलां चस्मां, ह्हेमनो विचित्र वेश, ह्हेमनी चोबा जेवी मलमलनी टोपी, ह्हेमनुं बे चार गंजीफ्राक प्हेरेलुं शरीर, ह्हेमना बे त्रण मोजांनी जोड पहेला ने सपाटमां अर्धा मूकेला पग, ह्हेमनुं अर्धुं थरडाई गयेलुं 'फायर्पेन'नुं आणियुं, ह्हेमनुं शाहीथी खरडायेलुं सफेत होल्डर, ह्हेमना फ्रेन्च पेपर, अने ह्हेमनो छापी छापीने पातळा ब्ल्यू शाहीथी रंगाई गयेलो रातो ब्लॉटींग पेपर ए सर्व म्हने बराबर सांभरे छे. हुं छेक पासे गयो ने पासेनी खुरशी उपर जइने बेठो त्यां सुधी ह्हेमने म्हारा आव्यानी खबर न पडी. म्हने जोइने पूछ्युं के "आव्या?" म्हें उत्तर आप्यो " जी, हा " पछी म्हें पूछ्युं के " दयारामने रजा क्यारे आपवी छे ? " उत्तर मळयो के " हवे तो दश के बार दिवसमां. " एप्रिलना अन्तभागमां ते लेख पूरो लखाइ रह्यो एम म्हारी जाणमां छे.

(६) दयारामनामां जे भाग बहु सारा लागे ते कोइक प्रसंगे म्हने तेओ वंचावता. ईश्वरलीलानुं दयारामे वर्णन केवी अद्भुत रीते कर्युं छे ह्हेनो एक नमुनो म्हने एक प्रसंगे वांचवा आप्यो ने पछी पूछयुं के "समज्या ?" म्हें उत्तर दीधो " जी ना, समजण न पडी." पछी ह्हेमणे तरत वात गळे उतरी जाय ने मनमां ठशी जाय. तेम समजाववानी ह्हेमनी रीतेए बराबर समजाव्युं, ने तेम करते करते दयारामनी अद्भुत शक्तिनां, ह्हेनी विचारपरंपरानी त्वरिततानां, ह्हेनी भाषानी छूटनां, ह्हेनी बंधबेसती उपमाओनां, विगेरेनां उत्साहथी अने आवेशथी वखाण करता करता ते कविताना रसमां निमग्न थइ गया हता, ते प्रसंगनुं चित्र पण हजी म्हने बराबर याद छे. पछी ते कविता उपरनी पोतानी टीका वांचवा म्हने कह्युं. ह्हेमां ह्हेमणे एवो विचार दर्शाव्यो हतो के जेम

बराबर तपी गयेला कलेडामां रातडीओ के जार पडतांने वार ज सुन्दर अने खवाय तेवा रूपमां जोतजोतामां धाणी ब्हार पडे छे तेवी ज रीते दयारामना मगजमां कोइ विचार पड्यो के तरत ज बहु रमणीय अने उपभोग करवा योग्य रूपमां ते विचार प्रकट थाय छे. बधी क्रियाओ वच्चे अन्तर एटलुं तो थोडुं रहे छे के ते एकी वखते थतुं होय एम जणाय छे. आ उपमा सांभळतां ज म्हाराथी कहेवाइ जवायुं के "जेवी कविनी कृति तेवी ज विवेचकनी टीका! दयारामनी उपमा अद्भुत कहेनारनी पोतानी ज उपमा क्यां ओछी अद्‌भुत छे?" गोवर्धनभाइनी बंधबेसती उपमा आपवानी शक्ति त्हेमनां पुस्तकोना कया रसज्ञ वाचकथी अजाणी छे?

(७) छेल्लो प्रसंग म्हने एटलो याद छे के म्हारे वीक-एन्ड-रीटर्न टिकेटनो लाभ लइ बे त्रण दिवस मुंबाइथी नडिआद जइ आववानो विचार हतो, ने एम सांभळ्युं हतुं के एक शनिवारे गोवर्धनभाइ दयाराम विषेनो लेख वांचवा अमदावाद जवाना छे एटले म्हें धार्युं हतुं के गोवर्धनभाइ अमदावाद जवाना हशे ते शनिवारे हुं जइ पहोचीश जेथी ते भाषणनो म्हने लाभ मळी शके. पछी दिवस नक्की थयेलो जाणी हुं आव्यो त्यारे तो सांभळ्युं के गोवर्धनभाइनी तबीयत ठीक न होवाथी हमणां बन्ध रह्युं छे. थोडा दिवस पछी सांभळ्युं के गोवर्धनभाइथी जइ शकाय तेम न होवाथी रा. रा. केशवलाल हर्षदराय ध्रुव जइने ते लेख वांची आवशे, ने आखरे तेम ज थयुं.

म्हने जे थोडुंघणुं याद छे ते अत्र लखी आ नम्र स्मरण-संचय वाचक समक्ष धरूं छुं, अने आशा राखुं छुं के जिज्ञासुने ते थोडी घणो लेश पण उपयोगी थशे.

चन्द्रशंकर नर्मदाशंकर पंड्या.

कवि दयारामनो अक्षरदेह.

अनुक्रम.

		पृष्ठ
१	उपोद्घात.	१
२	दयारामना अक्षरदेहनां विशेषण.	७
३	कथाओ अने दृष्टान्तो.	११
४	कविनी ईश्वरभावना.	१४
५	राधाकृष्णमां कविना रसविषय.	२८
६	भक्तिप्रकरण.	३२
७	आवरणदोष.	३८
८	विक्षेपदोष.	४४
९	नवधा भक्ति.	५०
१०	भक्तियोग अने योगना अन्य प्रकार....	५८
११	कविनी पुष्टिभावना.	६५
१२	कविनो शृंगाररस.	७२
१३	प्रेमयोग अने तेनी परिभाषा.	८०
१४	प्रेमसमाधि अने सिंहावलोकन.	९७

संक्षेपाक्षरनुं सूचन—उदाहरण.

र. व.–रसिक वल्लभ. पद ५,६–पद पांचमुं, कडी छट्ठी.

र. प्रा.का.मा.५.–प्राचीनकाव्यमाला (वडोदरा संस्थाने प्रसिद्ध करेली,) ग्रन्थ बीजो पृष्ठ पांचमुं

द. का. सं.–दयारामकृत काव्यसंग्रह. (नर्मदाशंकरनो संग्रह, गुजराती प्रेस.)

बृ. का. दो.–बृहत्काव्यदोहन.

१ बृ. का. दो. ५४४,- बृ. का. दो. पृष्ठ ५४४ वगेरे.

द.का.सं५४४ग.५,६–द. का. सं. पृष्ठ ५४४. गरबीओ पांचमी अने छट्ठी.

शु. सि. प्र. १०.–शुद्धाद्वैत सिद्धांत (गुजराती) पृष्ठ १० रा. रा. मगनलाल गणपतराम शास्त्रीकृत.

कवि दयारामनो अक्षरदेह.

१ उपोद्धात.

१ विक्रमार्कना ओगणीशमा शतकना उत्तरार्धमां अने ईसवी ओगणीशमा शतकना पूर्वार्धमां गुजरातना साहित्यनो रात्रिकाळ हतो अने ए साहित्यना गगनांगणमां मात्र ताराओनो ज प्रकाश हतो एम नही पण ए तारामंडळ वच्चे तेनो नायक थई दयाराम कवि चन्द्ररूपे प्रकाशी रह्यो हतो तेनुं वर्णन म्हें अन्यत्र करेलुं छे. (इंग्रेजीमां गुजरातना प्राचीन कवियो विषयेनो म्हारो निबंध, पृष्ठ ६१-६३ अने तेनो गुजराती सार पुरुषोत्तम विश्राम साहित्यमाळा, अंक ४, पृष्ठ २७–२८).

२. जेम चंद्रबिम्बमां सामान्य दृष्टिने कलंक देखाय छे तेम दयारामना लेखोमां अने जीवनमां पण देखाय छे. दयारामना स्थूलदेहना अने सूक्ष्मदेहना बनेला जीवनमां आ कलंक वस्तुतः शाथी अने केवुं हतुं तेनुं शोधन आजना भाषणनुं अंगीभूत नथी. एना स्थूल जीवननो इतिहास आपणा अन्य लेखकोए लखेलो छे, अने तेमां छेलामां छेलो लेख शेठ त्रिभुवनदास जमनादास बी. ए. ना हाथथी लखायलो छे तेमां जाणवा विचारवा योग्य अनेक वृत्तान्तोनो संग्रह छे. सामान्य मनुष्योने मात्र स्थूल, सूक्ष्म, अने कारण एवा त्रण देह होय छे एवी व्यवस्था आपणा लोकने परिचित छे. ते उपरांत महापुरुषोने कीर्तिदेह होय छे जेने उद्देशी महाकवि कालिदासे रघुवंशना एक राजापासे उद्गार कराव्यो छे. ते राजा पोताना व्रतने अनुसरी अस्त्र सजी पोतानी अभिमत गायना रक्षण माटे तेनी पाछळ पाछळ जतो हतो अने

ए गायने मारवाने सज्ज थयेला वाघे राजाने कह्युं के, "गायनुं रक्षण करवा जतां त्हारा पोताना देहने संशयमां नांखवो ते न्हाना पदार्थने रक्षवा म्होटा पदार्थने भयमां नांखवा जेवुं तुं करे छे तेथी मने तुं मूर्ख भासे छे." आनो उत्तर राजाए एवो दीधो के 'हे वाघ, हुं एथी उलटुं मानुं छुं, के स्थूल देह करतां बीजो उत्तम देह पण छे माटे जो तने म्हारी दया ज आवती होय तो म्हारा स्थूल शरीरनी नही पण यशःशरीरनी दया राख"—**किमप्यहिंस्यस्तव चेन्मतोहं यशःशरीरे भव मे दयालुः ॥** साक्षर लेखकोने आवा कीर्ति-देहना उपरांत अक्षरदेह होय छे जे तेमना बाकीना सर्व देहोना अवसान पछी पण चिरंजीव रही शके छे. ज्यारे स्थूल सूक्ष्म अने कारण देहोना इतिहास अक्षरदेहना कारणभूत होवाथी ते इतिहास अक्षरदेहना मर्मभागो उपर नवा प्रकाश नांखी शके छे त्यारे कीर्तिदेहना इतिहास अक्षरदेहना कार्यरूप होइने ए देहोना देहीना देशकाळना मर्मभागो उपर प्रकाश नांखी शके छे. अमुक साक्षरनो अक्षरदेह भव्य होवा छतां ते देहीना देशकाळे तेनो कीर्तिदेह केवे रूपे बांध्यो ए जाणी ए देशकाळनुं मूल्य करवानुं साधन प्राप्त थाय छे. कवि दयारामना अक्षरदेहनुं निरीक्षण करवा जनारने माटे आटले अंशे एना अन्य देहोना इतिहास जोवानुं प्राप्त थाय छे, परंतु एना स्थूल देहनो इतिहास विवादग्रस्त छे अने तेना सूक्ष्मदेहनो इतिहास तेटले अंशे दुर्लभ छे. आथी आजना विषयमां ए कविना लेखोथी बंधायला तेना अक्षरदेहनुं अने तेनी साथे ए लेखोमां जणाई आवती एना सूक्ष्म तथा कारणदेहोनी छायानुं अने ए लेखोथी बंधायला तेना कीर्तिदेहनुं निरीक्षण करवामां प्रस्तुत विषयनी मर्यादा राखीशुं. आवा समर्याद निरीक्षणने अंगे आपणा कविने शिर आरोपायला कलंकनुं अने एना बाकीना तेजस्वी भागनुं निरीक्षण शुद्ध करवानुं साधन आपणे शोधवुं पडशे. जेम खगोळवेत्ताओ चन्द्रबिम्बने

दूरदर्शक वगेरे यन्त्रोथी जाणी तेना तेजनुं परप्रकाशरूप जाणे छे अने तेना कलंकने स्थाने अनेक ज्वालामुखादिक पर्वतोनी स्थितिने जोई लेछे तेम आपणा कविचन्द्रना तेज अने कलंकनां शुद्धस्वरूप जाणवाने आपणे पण कोई मार्ग अने साधन शोधी क्हाडवां पडशे.

३. आ प्रवृत्तिमां पडवाने माटे कविना स्थूलदेहनी वातो केवळ दूर राखीने ज शोधन करवानी आवश्यकता उपर प्रमाणे छे. तेम एनां लेखोमां कोईपण स्थाने ए देहने उद्देशीने करवामां आवेला उद्गार भासता नथी एटले ए वातो दूर राखवामां कांई प्रतिकूलता नथी एटलुं ज नही, पण कोई पण कविनी तुलना न्यायपूर्वक करवी होय तो प्रथम आ पद्धतिथी अने आडी आवती शंकाओने वर्ज्य गणी जे जे लेखमां जे वस्तुनो समास होय ते उपर ज दृष्टि राखी जोई लेवुं एमां साहित्यना पूजकोए स्वीकारवा योग्य पूजाविधि छे, अने तेथी ज ए पूजाना उद्देशनुं फलित छे. प्राचीन लेखको जेवा के आ देशमां कालिदासना अने बाणना अने वीलायतमां बाईरनना लेखनुं तेज आपणे तेमनी जीवनकथाओ तपास्या विना स्वीकारी शकीये छीए, तेम अर्वाचीन ग्रन्थकारोनुं तेज स्वीकारवामां बाध नथी. ईंग्रेजीमां एक वाक्य छे के The man wont pray to God if it is the devil that asks him to do it—ईश्वरनी प्रार्थना करवानी सूचना सेताने करी एटला ज माटे आ माणस ईश्वरनी प्रार्थना करतो नथी, अर्थात् ए माणस एवो शंकाशील अने मूर्ख छे. समर्थ ग्रन्थकारो स्थूल जीवननी नीतिमां शिथिल होय तेटला ज कारणथी तेमना ग्रन्थोना उत्तम अंशोनी अवज्ञा करनारने आ ईंग्रेजी वाक्य लागु पडवानो प्रसंग छे. **विषादप्यमृतं ग्राह्यम्**—विषमांथी पण अमृत शोधी लेवामां सुज्ञता छे. सत्य छे के ज्यां लेखमां ज विष अने अमृत भेळां छे त्यां तो क्षीर अने नीरनो विवेक करनार चतुर हंसो विना बीजाए

पडवुं भयभरेलुं छे, पण ज्यां अक्षरदेह अने स्थूलदेह नीरनीराळा रहेला छे अने अक्षरदेह जाते दूषित नथी त्यां तो सामान्य मनुष्यो पण तेवा लेखमां निर्भय प्रवेश करी शके छे. दयाराम जेवा कवियोनां जीवननी खरी अथवा कहेवाती वक्रगति उपर केवी दृष्टि राखवी उचित छे तेनी चर्चा साक्षरजीवनना निबंधमां यथामति करेली छेः जुवो समालोचक, पुस्तक ५, सन १९००, पृष्ठ ५३–५५ अने ९४-१०२, साक्षरजीवननां भयस्थान. ए चर्चानी पुनरुक्तिनुं अत्र प्रयोजन नथी, परंतु दयारामना स्थूल जीवननी अधोगति थई हती ए वात सत्य होय तोपण उत्कृष्ट जीवनथी संपन्न जीव आवा अधोगत जीवना उत्कृष्ट लेखोनो हृदयपूर्वक सत्कार करे ते ज उचित छे तेनुं कारण साक्षरजीवनना उक्त प्रकरणमां आपेलुं छे. बाकी सामान्य संसारमांथी दृष्टांत शोधीए तो पण जाते युवावस्थामां व्यभिचारने वश थयेलां पण अंते तेना भयंकर परिणामथी विपन्न थयेलां मातापिता पोतानां सुखदुःख विचारी एमांथी पोतानां प्रिय बालकोने मुक्त राखवानी आतुरताथी जे अनुभवसिद्ध उपदेश करे तेवी ज आतुरताथी तेवो ज अनुभवसिद्ध उपदेश करी शकनार साक्षरोना स्थूल देह गमे तेवा होय तोपण तेवाओना लेखमां कांईक अपूर्व संगीनता संभवे छे तेनी अवज्ञा तो अहंताममतानुं परिणाम होवानो संभव छे. दयारामनुं स्थूलजीवन दूषित हतुं के नही ते विषये उक्त कारणोने लीधे केवळ तटस्थता अने उदासीनता राखी एना भव्य अने मनोहर अक्षरदेहने हवे दृष्टिगोचर करीशुं, अने ए देहनी चिकित्सामां तेना जे गुण के दोष प्रत्यक्ष थाय ते सर्वनुं निरीक्षण संक्षेपमां पण तीव्र न्यायथी करवानो संकल्प राखीशुं, कारण एवी तीव्रता सही लेवानी शक्ति पण आवा समर्थ कवियोना ज लेखोमां होय छे.

४. दयाराम पोताने कंई कंई स्थाने दयाशंकर कहेछे अने तेमना उपर प्रीति राखनार मंडळ हजी तेमने दयारामभाई कहे

छे. एमना लेख आपणा आ युगना पूहेलांनी रीतिने अनुसरीने पद्यात्मक छे. तेमां एक भाग गुजराती भाषामां छे तो एक एवडो ज भाग हींदी, व्रीज, अने मराठी वगेरे भाषाओमां छे अने तेमां मुख्य भाग हींदी छे. हींदी भाषामांना लेखोमां एक भागे सतसैया छे अने बाकीनो भाग ए भाषाना ज रागोथी समृद्ध छे. गुजराती भाषामां लघु काव्यो, गरबीओ, अने पदो छे. कवि बहुश्रुत हता ते एमनां हीन्दी काव्योथी समजाय छे अने तेमां भक्ति, नीति, अने धर्म उपरांत भक्तिथी अमिश्रित एटले केवल शृंगारनो भाग पण छे. गुजराती काव्योमां केवळ शृंगारनो भाग नही जेवो छे. पदोमां धर्म, नीति, वैराग्य अने शृंगारविनानी भक्ति छे. गरबीओमां शृंगाररूप भक्ति छे. शृंगाररूप भक्ति, शृंगारसहित भक्ति, शृंगारविनानी एटले केवल भक्ति, श्रीकृष्णचरित्रना केटलाक प्रसंगो, धर्म, नीति अने वैराग्यः आ सर्व ओछां वत्तां लघुकाव्योमां छे. म्होटामां मोटुं काव्य "रसिकवल्लभ" छे तेमां कविनी श्रद्धावल्ली बीजथी फल सुधीना विकासवाली समाई छे तेथी कविनां अन्य काव्योनी कुंची जेवुं आ काव्य छे.

९. आ सर्व अवयवादिकथी रचायलो कविनो अक्षरदेह तेना कीर्त्तिदेहरूपी मन्दिरमां हजी प्रकाशे छे. साक्षरोनी अक्षररचनाओ तेमनां मस्तिकमांथी टपकी टपकी पुस्तकोमां लेखरूपे संगृहीत थाय छे. ए लेखरूप वेदिउपर आ अक्षराग्नि एकांत चिरंजीवित्व पामे छे अने उपासक अग्निहोत्रीओए करेली ए उपासनानां प्रमाणमां संकोच–विकास पामेछे. आ अक्षराग्निनी आ लेखरूपे चिरंजीव अवस्था तेज ए लेखकोनो कीर्तिदेह छे अने ए अवस्थाना संकोच-विकास प्रमाणे ए कीर्तिदेहना संकोच–विकास थाय छे. आनुं दृष्टांत दयाराम कविना लेखना इतिहासथी घणुं स्पष्ट थाय छे. गुजरातमां ईंग्रेजी पद्धतिनी शाळाओ आरंभाई अने कवि दलपतराम अने नर्मदाशंकरना लेख प्रकट थवा लाग्या ते काळनो

આરંભ એ હાલના આપણા પાશ્ચાત્ય યુગનો આરંભ હતો અને એ યુગના ઉદયના પ્રમાણમાં તે પ્હેલાંનો યુગ—જેને આપણે પ્રાચીન યુગની છેલી અવસ્થાના નામથી ઓલખીશું તે યુગ—ધીમે ધીમે અસ્ત થતો ગયો છે. દયારામકવિ આ છેલા પ્રાચીન યુગનો તેજસ્વી ચંદ્ર હતો અને, પ્રાતઃકાળ પછી પણ ચંદ્ર દેખાયાં કરેછે તેમ, એ ચંદ્ર ઝાંખે રૂપે આપણા આ પાશ્ચાત્ય યુગમાં પણ દેખાય છે અને કેવળ અસ્ત થયો નથી. પરંતુ કવિચંદ્ર પોતાના કાળમાં રમણીય લાગતો હતો અને તે કાળના લોકને તેની ચંદ્રિકા—ચંદની—જેવી ઉપયોગી થઈ હતી તે સર્વ હવે બંધ થયું છે. અર્થાત્ એ કવિનો કીર્તિદેહ તેના પોતાના કાળમાં હતો તે હવે પલટાઈ ગયો છે. આપણા પોતાના યુગમાં પણ એ કવિના અગ્નિહોત્રી કવિ નર્મદાશંકરે જેવી તેની ઉપાસના કરી હતી તેવી આજ થતી નથી અને "દયારામભાઈ" ને નામે પોતાના યુગમાં કવિરાજરૂપે, ભક્તરૂપે, અને મહાત્મારૂપે પૂજાતા એ કવિનો કીર્તિદેહ ધીમે ધીમે આજ એટલો તો સંકુચિત થઈ ગયો છે કે તે માત્ર દયારામને નામે ઓળખાય છે, તેનો શ્રૃંગાર નિન્દાય છે, અને તેનાં અનેક કાવ્યો નર્મદાશંકરના "દયારામકૃત કાવ્યસંગ્રહ"માં, બૃહત્કાવ્યદોહનના અનેક ભાગોમાં અને પ્રાચીન કાવ્યમાલાના બે ત્રણ ભાગોમાં, અક્ષરરૂપે વિદ્યમાન છે. તેના વાચકોની સંખ્યા જે હોય તે ખરી પણ તેના શુદ્ધ રસના ભોગી તો વિરલ જ છે. એક કાળે જેની ગરબીઓ ચારૂત્તરથી તે સુરત મુંબઇ સુધીની સ્ત્રીઓ કિન્નરકંઠોથી પ્રસિદ્ધપણે છચોક ગરબે મળીને ગાતી હતી અને ઘરમાં હરતાં ફરતાં પણ ગાતી હતી અને જેનાં પદ અનેક ભક્તોને રસમાં લય પમાડતાં હતાં અને શ્રોતાવક્તાઓનાં હૃદયમાં કવિના હૃદયનું આવાહન કરતાં હતાં, તે કવિના આવા વિકસિત કીર્તિદેહને સ્થાને હવે માત્ર પુસ્તકોમાં સંકુચિત કીર્તિદેહ અને તે પણ અપકીર્તિના કલંકવાળો થઈ હાલમાં માત્ર અસ્તિત્વ જ ભોગવે છે. આટલા પચાશ વર્ષના અરસામાં આ કવિના કીર્તિદેહનો આવો

संकोच थई गयो छे तेनां कारणो अने कार्यो उपर आज विचार न करीये तो-आपणो विषय अधुरो ज रहे, परंतु हालनो प्रसंग ते विचार पूर्णपणे करवानां शोधन तथा साधननुं दिग्दर्शन करवा जेटलो छे ते प्रसंगोपात्त यथाक्रमे करवानुं राखी ए साधन शोधन पूर्णपणे करवानुं काम आपणा साहित्यपूजकोने आगळ उपर करवानुं सोंपीशुं.

६. आजना विषयनुं उपरप्रमाणे उपोद्धातरूप सूचन करी हवे आपणे कविना अक्षरदेहनुं निरीक्षण आरभीशुं. "निरीक्षण" संज्ञा वापरवानुं प्रयोजन एवुं छे के कविनी अथवा तेनां काव्योनी परीक्षा पुस्तकपरीक्षारूपे करवी अत्रे धारी नथी. आवा प्राचीन साक्षरोना कीर्तिदेह संकुचित थई गया होय छे तेथी तेमना अक्षरदेहनुं तारतम्य अलक्ष्य थई गयलुं होय छे. माटे आवा अक्षरदेहना शुद्ध स्वरूपनुं समीक्षण एटले संपूर्ण निरीक्षण ज्यांसुधी थई रह्युं नथी त्यांसुधी तेनुं तोलन अथवा परीक्षण करवानो अधिकार प्राप्त थतो नथी, अने आज तो मात्र आरंभकाळने उचित उपर उपरनुं निरीक्षण करीने ज संतोष मानवानो प्रसंग छे तो पछी समीक्षण तो हवेना साक्षरोए करवानुं बाकी छे. परीक्षाने अंगे जे गुणदोषनी तुलना थवी जोईए ते अत्र आ प्रमाणे असंभवित होवाथी तेवी तुलना जेवुं जे कांई बोलवामां आवे तेनी मात्र आवी आरंभावस्था ज गणवानी छे.

२ दयारामना अक्षरदेहनां विशेषण.

७. प्राणीओना देहमां एक पासथी देहनुं धारण करनार सप्त धातुओ होय छे, तो बीजी पासथी ते धातुओमांनां जड पंचभूतोने देहवस्तुरूप रस-रक्त-मांसादिकना धातुप्रवाह चलवनार त्रिदोप शक्तिओ होय छे. दयारामनां काव्योमां, गरबीओमां, अने पदोमां पण श्रीकृष्ण अने अन्य विषयनी पौराणिक कथाओ अने भक्तमाळादिक दन्तकथाओ अस्थि अने चर्म पेठे अन्य सर्व

धातुओना आधाररूपे दृष्टिगोचर थाय छे. ए भाग गरबीओमांथी जतो रहे तो शेषभाग छेलबटाउनी लावणी अने गुजरीनी गरबी जेवो थई जाय. पदोमांथी ए भाग जतो रहे तो तेमांनो शेष भाग गद्यात्मक कहेवतो जेवो थई जाय अने छुटक काव्यो तो ए भागविना मांसरक्तना ढगला जेवां ज थई जाय. दयारामना अक्षरदेहनां आ अस्थि चर्म एना अन्य भागोनी स्थिति टकावनारं आधाररूप छे, पण ए भागने आधारे रहेला अन्य धातुओ विना आ अस्थि अने चर्म केवळ शुष्क अने निरुपयोगि पडी रह्यां हेत. ए पदोमां, काव्योमां, अने गरबीओमां मोक्षशोधिनी प्रेमभक्तिनो रस तद्दैहिक रसरक्तादिक भिन्नभिन्नरूपे परिणाम पामी आ अक्षरदेहना सत्वने पोषे छे अने पोताना प्रवाहोना चमकारा ए देहमां निरंतर भर्यां करेछे. ए प्रेमभक्ति अनेक भक्तोनां हृदयोमां होय छे, तेओ तेने अक्षररूप देह आपता नथी अने आ कवि तेवुं रूप शाथी आपे छे? सांसारिक विषयो उपरनी प्रेमभक्ति सउ संसारीओमां होय छे पण तेने अक्षरदेह आपनार कवियो कोईक होयछे तेम ज ईश्वरादिक विषयो उपर प्रेमभक्तिना संबंधमां पण छे. संसारना अने मोक्षादिकना भक्तोनां सूक्ष्म शरीरोमां तेमनी प्रेमभक्तिओ उभराय छे अने तेमनी वाणीमांथी अने क्रियामांथी नवीन उद्गारोने वर्षावी रहेछे. पण आ वर्षाद रात्रिना झाकळ पेठे एकांतमां प्रकट थई एकांतमां शमी जाय छे त्यारे कविओना उद्गारोना वर्षाद रात्रिए के दिवसे थयेली पण मेघनी वृष्टि पेठे एकांतमां के वस्तीमां प्रकट थई चार पासनी वस्तीमांथी कोईना पण हृदयमां सरी जवा अने फलदात्री थवा पामेछे. कविजनोना सूक्ष्मदेहोमां जीवती प्रेमभक्ति मेघवृष्टिनी पेठे तेमना. अक्षरदेहमां आवे प्रकारे प्रकट थई साकार थाय त्यारे तेनुं कारण ए मेघनी कोई अंतःशक्ति होय छे तेम तेनी बहारना पदार्थोना संयोगवियोग पण होय छे. घणे उंचे चहडेलुं अने

वराळरूप थई गयेलुं जळ जाते ज आत्मस्वभावथी शीत अने गुरु बनी मेघने चळकावे छे अने ए मेघ वृष्ट थवा तत्पर थाय छे तेम कविना सूक्ष्म शरीरना उंचा भागोमां व्हडी व्यापी रहेली प्रेमभक्ति आत्मस्वभावथी चळकवा मांडे छे अने पृथ्वी जेवां अन्य हृदयो उपर वर्षा पडवा मांडे छे. आवे समये बाह्य पवनना झपाटाओ आ मेघनी वृष्टिने आम तेम प्रेरे छे तो पर्वतोनां शिखर मेघमाळाने रोके छे अने उंचां घाडां जंगलो वृष्टिने पोताना उपर खेंची ले छे. जेम शरीरना सउ धातुप्रवाह वातपित्तादि त्रिदोषथी तेम बाह्य सृष्टिनां सत्वोनी शक्तिओथी परिणाम पामे छे अने प्रवर्ते छे, जेम मेघमांनुं जळ अंतःशक्तिथी तेम बाह्यशक्तिओथी वर्षे छे; तेम कविओनां सूक्ष्म शरीरमांनी सांसारिक के मोक्षशोधिनी प्रेमभक्ति आत्मशक्तिथी अने बाह्यशक्तिथी उद्गारोना प्रवाहोने वर्षावे छे, प्रवर्तावे छे, अने ते द्वारा पोताना शरीरने साकार अने परभोग्य करेछे. आ साकार अने परभोग्य थयेला प्रेमभक्ति–धातुओ काव्यमात्रना देहरूप छे. ए धातुओने वर्षावनार, साकार करनार, अने भोग्यरूप आपनार अंतःशक्ति ए काव्यना कर्ताओनां सूक्ष्म शरीरमां निराकाररूपे रहेछे, अने कविओना स्थूल सूक्ष्म मृत्यु पछी पण ए निराकार शक्ति निराकार प्रतिबिम्बरूपे ए काव्योमां चिरंजीव रही जाय छे अने, वातपित्तादिक शक्तिओ साकार देहधातुओने जीवता राखे छे तेम, अक्षररूपे साकार थयेला प्रेमभक्तिधातुओनी चमत्कृतिने सदाकाळ एवी रीते जीवती राखे छे के तेने भोगवनार मळतां तरत पोतानुं भोग्यरूप प्रकट करेछे. दयारामनां काव्योमां केवी प्रेमभक्तिनुं केवुं निराकार प्रतिबिम्ब चिरंजीव रहेलुं छे, ए प्रतिबिम्ब कविनी केवी अंतःशक्तिनी छायाथी छायारूप छे अने केवी बाह्यशक्तिओनुं आधेय थयेलुं छें, ए प्रतिबिम्बना प्रतापथी साकार थयेली प्रेमभक्ति केवा धातुओने रूपे कविना अक्षरदेहनुं धारण करेछे अने

तेमां केवा चमकाराओने भरेछेः आटला विषयना दर्शनविना आ कविना अक्षरदेहनुं शुद्ध स्वरूप समजाय एम नथी, माटे तेटलुं दर्शन करवानो आज उपक्रम छे

८. वल्लभाचार्यनो संप्रदाय आ कविना अक्षरदेहमां चारे पासे वातावरण पेठे रहेलो छे अने ए बाह्यशक्तिने आधारे कविनी प्रेमभक्तिनुं निराकार स्वरूप आधेयरूपे टकेलुं छे, अने ए आधारनुं स्वरूप जोई लेवुं ते आ आधेयनुं स्वरूप समजवा माटे आवश्यक छे. कविना अक्षरदेहमां ए संप्रदायनां ज्ञान, श्रद्धा, अने रस उभराय छे अने कविना सूक्ष्मदेहनी अंतःशक्ति ए ज्ञान, श्रद्धा, अने रसनां गूढ तत्वोने चुसी लेछे. आ अंतःशक्तिए आम चुसी लीधेलां गूढ तत्वो एना अक्षरदेहमां नवीन परिणाम पामे छे. संप्रदायमांथी मळेलुं आधाररूप ज्ञान कविना ज्ञानवृक्षनी रगोमां प्रसरी जायछे अने लौकिक श्रद्धा जे पौराणादिक कथाओने इतिहासरूप जुवेछे तेमां कविनी अंतःशक्ति शुद्धाद्वैतज्ञानना ब्रह्मस्वरूपने प्रत्यक्ष करे छे. कविनी श्रद्धा मूर्त्त पदार्थोना पूजनमां मूर्तिमती थाय छे पण तेनी अंतःशक्ति तेमांथी देवरहस्य शोधी लेवा सूक्ष्म प्रयत्न करेछे कविनी रसवृत्ति संप्रदायनी प्रेमभक्तिनां गान सांभळे छे पण कविनी अंतःशक्ति ए गान सांभळी नवां गान जाते गावा मंडी जाय छे अने तेमां भक्तिरहस्यनां सूक्ष्म तत्व स्थूल गानना सप्त स्वर पेठे परिणाम पामे छे.

९. केटलाक चित्रादर्श एवा योजवामां आवे छे के ते उपर एक पासथी दृष्टि करीये तो अश्वनुं चित्र देखाय, बीजी पासथी दृष्टि करीये तो सिंहनुं चित्र देखाय अने त्रीजी पासथी जोईए तो हस्तीनुं चित्र देखाय. एक आदर्शमां अनेक भित्तिकाओ उपर अनेक चित्रोनी कल्पना करवानी आवी योजना जेवी योजना कवि दयारामनी बुद्धिमां हती ते एनां काव्योमां एक पासथी जोतां केवळ पौराणादिक कथाओने विस्तारे छे, बीजी

पासथी जोतां पुरुषप्रकृतिना ब्रह्मरूप ऐक्यने दर्शावे छे, त्रीजी पासथी देषरहस्यमां अवगाहन करे छे, चोथी पासथी भक्तिरहस्यथी सजीव थाय छे, पांचमी पासथी ए सर्व प्रवाहोमां पोताना प्रेमरसना महाप्रवाहना सवेग संभारने भरे छे, अने छठ्ठी पासथी ए सर्व रसपात्रने पोतानी प्रेममूर्तिओनी प्रतिष्ठा आपी पोताना मनुष्यसंसारनां चित्रविचित्र वस्त्र अने शृंगार प्हेरावे छे.

१०. कवि दयारामना अक्षरदेहनी समृद्धिना अंशोनां आवां विशेषण हवेना सविस्तर दर्शनना उपक्रमना परस्पर संबंध जणववा आ स्थाने आपणे मात्र गणी गया जेवुं कर्युं छे. हवे ए अंशो एक पछी एक अनुक्रमे जोइशुं. अमुक अंशनुं निदर्शन करी ते पछी तेनां विशेषण तपासवामां आवे ते क्रम सामान्य रीते सुबोधक होय छे अने ते क्रम आपणे पण जाळवीशुं. परंतु ए अंशो अने विशेषणो केई माळाना सूत्रमां मणिका पेठे परोवाया छे अने कीयो मणिको कीया मणिका के मेरनी पासे छे ए प्रथमथी कांई कल्पी शकाय तो हवेनां अंशनिदर्शनना पोतपोताना आशय अने उद्देश जाते समजाता जाय एवा हेतुथी आ भाग आ प्रस्ताविक स्थाने मुक्यो छे.

३ कथाओ अने दृष्टान्तो.

११. रुक्मिणीविवाह आदि काव्योमां पौराणिक कथाओ आख्यानरूपे विस्तारेली छे तेमां लौकिक श्रद्धा इतिहासबुद्धिथी जुवे छे, परंतु कवि पोते प्रेमानन्दना नलाख्यानादिक काव्यों करतां आ काव्योउपर भिन्न दृष्टि नांखता नथी, अने पौराणिक पात्रोमां आपणा अर्वाचीन संसारनो आरोप करी ए कथाओ लोकप्रिय थाय ए विना आवां काव्योमां विशेष मर्मभाग नथी. आपणा संसारनां चित्ररूपे ए काव्योनुं निरीक्षण करवानुं काम आपणे आज माथे नही लेईए. आवां चित्र प्रेमानन्दे वधारे शक्तिथी आलेखेलां छे तो स्त्रीजनोने योग्य वधारे सरल भाषामां

अने अलंकारोमां दयारामे संतोष मान्यो छे. न्हानां बाळकने माटे बाळपोथी रचाय तेवी बुद्धिथी आ काव्यो लखायां छे, ते उपरथी कविनी पराक्रमशक्तिनुं अनुमान करवा जेवुं नथी. कविनां पदोमांना उपदेश स्पष्ट करवाने आवी ज कथाओना प्रसंगोने दृष्टांतरूपे इंगित कर्या छे त्यां कविनी शक्ति अधिक शक्तिथी खीले छे. संसारमां सर्वने प्रत्यक्ष थतां दृष्टांतो भेगां आ कथाप्रसंगोनां दृष्टांतो पण एक कुटुम्बनां बाळको पेठे भळी जाय छे अने पोताना उपदेशने वधारे वधारे स्पष्ट करवाने वसंत ऋतु पेठे कवि पोतानां आम्रवृक्ष जेवां पदकाव्योमां उपराउपरी संख्याबंध अने अनेकरंगी दृष्टांतोने म्होर, कळीओ, पांदडां, अने फळ रूपे उभरावे छे. ए दृष्टांत ऐतिहासिक छे के नही, तत्सम पदार्थ संसारमां छे के नही, वगेरे सत्यशोधन करवा करतां ए दृष्टांतोनां फलित शोधनारने कविना उपदेशनी समृद्धि वधारे रमणीयरूपे प्रत्यक्ष थशे. सत्यशोधन ए तत्ववेत्ताओनो उद्देश होय छे अने कवि तेने स्थाने कांईक जुदा ज रंगीला उद्देश राखे छे माटे ज आ पद्यो काव्यसंज्ञाने पात्र थाय छे.

१२. आवा रंगीला उद्देश राखतां राखतां कविना कवित्वने एवी ल्हेरो आवे छे के उपदेश अने उद्देश उभयनो संबंध भुली जई वातो करतां वाए च्हडे छे, अने कवि ल्हेरे च्हड्या छे जाणी आपणने एमना उपर दोष-दृष्टि करवा करतां एमनी पासेथी विनोद लेवो वधारे प्रिय थाय एम छे. जेम के वल्लभ अने विठ्ठल ए बे आचार्यो अने कृष्ण पोते एम त्रणे जणनो समागम थाय त्यारे ज वैष्णवरूप बने छे एम सिद्ध करवाने माटे कवि कहे छे के

“ विठ्ठल वल्लभ बे वकार आद्यंत रह्या छे,
मध्ये ष्ण कृष्णनो मळे वैष्णव ज लह्या छे.”

पुष्टिपथ रहस्य, श्लोक १६७. (२ प्रा. का. मां.)

अर्थात् विठ्ठलमांथी “ वि ” अक्षर, कृष्णमांथी “ ष्ण ” अक्षर,

अने वल्लभमांथी " व " अक्षर, ए त्रण जेनामां मळे तेने ज " विष्णव " कहेवानो छे.

१३. अन्य स्थळे कवि कहे छे के भक्तिवाळाने माया दमती नथी. तेनुं कारण ए के भक्ति स्त्रीलिंग छे अने माया पण स्त्रीलिंग छे एटले स्त्रीने स्त्रीउपर मोह थतो नथी तेथी भक्तिने माया दमती नथी, पण ज्ञान अने वैराग्य तो पुल्लिंग छे–हिन्दीमां पुल्लिंग छे तेथी तेने मायारूप स्त्री दमे छे, माटे भक्ति, ज्ञान–वैराग्य करतां वधे ! जुवो रसिकवल्लभ, पद ५५ श्लोक ३-५, (२. प्र. का. मा. पृ. ७७).

१४. कविना आवा खेलने खेल ज समजी तेथी विनोद पामी तेने भुली जवाना छे. अने आम ते भुली जवाना प्रसंगो अनेक आवेछे एटलुं भुली नहीं जइए तो कविना अन्यत्र गौर-वनी योग्य तुलना थशे. जेम के म्होटाओनी कृतिनुं अनुकरण करवुं ते मूर्खता छे अने अधोगति आपे छे पण तेना उपदेशने ज प्रमाण मानी वर्तवुं एवो धर्म छे. एटलो उपदेश करवानी सोळ कडीओनी गरबीमां सोळथी सवागणां पौराणिकादिक दृष्टांतो छे ते कडीए कडीए अने पंक्तिए पंक्तिए वेगथी एवा तो सूक्ष्म चमकारा करे छे के सामान्य वाचकनी दृष्टि थाकी जाय अने सूक्ष्मलक्षी दृष्टिने कांई नवो अने सन्तृद्ध प्रकाश मळेः जुवो बृ. का. दो. पृ. ८०६ गरबी ४. अंही आवां दृष्टांतो चमकारा करेछे तो इति " अलबेलानी अकळ गति " नुं पद (४ बृ. का. दो. पृ. ८०५ पद २४) एवां ज संख्याबंध सांसारिक दृष्टांतोथी एवी ज रीते उभराय छे तेना वेगनुं दिग्दर्शन करवा तेमांनी थोडीक पंक्तिओ अत्र उतारीशुं.

"बंदुक रंजक भडक भडाको अरुण गोळी अरिपाता,
पावक पलकमां, सहु एक संगे, अजब्र जंत्र विख्याता

कमळनाळ जळ संगे वाधे झाझुं थोडीवारे
गुप्त नथी ए प्रकट वात छे, कौतुक वडुं विचारे.
तुषार बाळे, नागवेली बळे, पत्र प्होच्युं शतकोशे,
कर्म करे समरण रही दूरे, पुष्ट बाळ वण-पोष्ये.
साधु दुष्ट-सुत, दुष्ट साधु सुत, उग्रसेन प्रल्हादा,
मणि सर्पथी, दीपथी कज्जल, मादा नर, नर मादा.
कौतुकरूप कृष्णलीला सहु, कहेतां पार न आवे
दयो कहे गातां अघ नासे, उर आनंद उपजावे."

काचा अनाजना कठण दाणा अग्निउपरना सामान्य हलका कलेडामां च्हडी ए अग्निनी शक्तिथी कलेडामां फडाफड फुटवा मांडे अने रु जेवी पोची धाणीना सुंदर धोळा राता दाणा बनी जाय तेवी ज रीते सामान्य दृष्टान्तोना ढगला अनुभवी कविना मगजमां चडी एनी प्रेमभक्तिना अग्निने बळे उपराउपरी परिपाक पामवा मांडे छे अने, आंखने भावे ते म्होंने भावे ए न्याये, दृष्टिने सुंदर लागी बुद्धिने बोधक अने हृदयने प्रिय थाय छे. "अलबेला कृष्ण" नी "अकळगति" नां आवां दृष्टांतो बीजाने मन वसो के न वसो, पण कविने तो "उर आनंद "उपजावे" छे. आ प्रेमभक्तिनो आनंद कविना अक्षरदेहमां स्थळे स्थळे उभराय छे अने कविनी अंतःशक्ति उल्लास पामती पामती नवा चमकारा करे छे ते कविना अन्य लेखोमां हजी वधारे स्पष्ट थाय छे.

४ कविनी ईश्वरभावना.

१५. जे वल्लभपन्थ कविनी आशपाश वातावरण पेठे रहेलो छे तेनी हालनी अवस्था गमे ते हो अने कविना काळमां पण गमे ते हो, पण ए पन्थना मूळ झरा जेवा सांप्रदायिक ग्रन्थो ए पन्थनी उत्कृष्ट अवस्थाने काळे उत्कृष्ट बुद्धिथी लखायला हता अने कविनी दृष्टि ए लेखोथी ज प्रधानपणे प्रोत्साहित थई हती

एटली वात एना "रसिकवल्लभ" वांचनारने स्पष्ट थाय एम छे. हालमां ए संप्रदायना सिद्धान्तोना उपोद्धातरूपे शुद्धाद्वैत सिद्धान्तप्रदीप नामनो संक्षेपग्रन्थ रा. मगनलाल गणपतराम शास्त्री एम्. ए. नो रचेलो प्रसिद्ध थयेलो छे तेमांथी थोडुं वांच्ये घणुं समजाय एम छे. आ संप्रदायमां "निर्गुण" ब्रह्मने सटे "आनंदरूप" "रसरूप" ब्रह्मनी भावना छे, अने ब्रह्मना देह अने आत्मानुं ऐक्य मनाय छे अने ए अंग सर्व अंशोमां आनंदरूप अने रसरूप छे (शु. सि. प्र. पृ. ३.) अर्थात् पुरुषसूक्तमां कहेलो पुरुष ते ज ब्रह्म छे, ते ज रस छे ते ज आनंद छे. जे धर्म संसारमां विरुद्ध लेखाय छे ते सर्व आ स्वरूपमां अने तेनी अवतार दशामां संगत थतां विरोधाभासरूप थाय छेः शु. सि. प्र. पृ. ६. शांकर वेदांतमां जगत् अने संसार मायारूप अध्यासरूप मिथ्या गणाय छे तेने स्थाने आ संप्रदायमां जगत् सत्य मनाय छे अने हरिनुं अने जगत्नुं एक ज लेखाय छे.

हरिरेव जगज्जगदेव हरिः ।
हरितो जगतो न हि भिन्नतनूः ॥

These are thy varied forms!
Almighty Father.

एवुं इंग्रेज कविनुं वाक्य छे ते ज वाक्य आ संप्रदाय हरिने उद्देशीने उच्चारे छे, पण विशेषमां कहेछे के "जगत् भगवत्कार्य छे, "भगवद्रूप छे,पण **संसार** अहंताममतात्मक छे ते जीवे अविद्याथी "कल्प्यो छे. संसारनो नाश ज्ञानथी थाय. कोटिशः ज्ञानीओनो "परममोक्ष थाय तथापि जगत् तो तदवस्थ ज रहे छे. जगत्नो "सर्व सुखावह लय तो आत्मरमणेच्छाथी भगवान् करे त्यारे ज "थई शके छे. **द्वैत** अविद्यानुं कार्य नथी पण द्वैतज्ञान अविद्यानुं "कार्य छे. द्वैत-जगत्-ब्रह्म कार्य छे, ब्रह्मरूप छे; परंतु द्वैत-

---

. शु. सि. प्र. एवी संज्ञाथी आ ग्रन्थने हवे ओळखीशुं.

"ज्ञान (आ पृथक् अने आ पृथक् एवी बुद्धि) अविद्यानुं कार्य छे.
"ए अविद्यावडे ब्रह्म नही पण जीव ज बद्ध थाय छे."—शु. सि. प्र.
पृ. ३०. अर्थात् कारणकार्यरूपे ब्रह्म अने जगत् एक ज छे. ए ज संप्रदाय ए ब्रह्मनां बे स्वरूप दर्शावे छे तेमांना एकने मर्यादा-पुरुषोत्तम अथवा अक्षर-ब्रह्मनी संज्ञा आपे छे अने बीजाने पुष्टि-पुरुषोत्तमनी संज्ञा आपे छे. मर्यादा-पुरुषोत्तम पालिकाशक्तिरूप लक्ष्मी साथे व्यापि-वैकुंठमां विहार करेछे, अने पुष्टि-पुरुषोत्तम गोकुलमां अने व्रजमां भक्तोसाथे विहार करेछे अने लक्ष्मी पण ए भक्तो भेगां दास्यभक्ति करेछे. मर्यादा-पुरुषोत्तम धर्मरूप अने दक्षिणांग छे अने पुष्टि-पुरुषोत्तम धर्मीरूप अने वामांग छे. शु. सि.प्र.पृ.८१.
मर्यादा-पुरुषोत्तम प्रमेय छे अने ज्ञान, भक्ति, अने साधनोथी साध्य छे अने मर्यादामार्ग अक्षररूपे ब्रह्मनी वाणीमांथी वेदमांथी प्रकट थयो छे; त्यारे पुष्टि-पुरुषोत्तम अथवा पुष्टपुरुषोत्तम तेना वेणुनादथी प्रत्यक्ष थाय छे, तेने प्राप्त करवाने "विप्रयोग रसात्मक सर्वात्मभावप्रदान"विना अन्य साधननी अपेक्षा नथी, "पुष्टिमार्ग" साक्षात् श्रीअंगमांथी ज प्रकट थयो छे, अने "रसरूप पुष्ट-पुरुषोत्तम" ए वेणुनादना फलरूपे आ पुष्टिमार्गथी "प्रमेय" छे. शु. सि. प्र. पृ. ७९.

१६. आपणे आ संप्रदायना सिद्धान्तोनुं रहस्य शोधवानो प्रसंग नथी पण आपणा कविए एमांथी केवुं रहस्य तारवी क्हाड्युं छे ते जोवानुं छे अने तेने अंगे ए सिद्धान्तोनुं जेटलुं स्पष्टीकरण आवश्यक होय तेटलुं ज जोवानुं छे.जेम एक देशनी भाषामां बीजा देशनीवातो भाषांतरथी अने रूपान्तरथी स्पष्ट थाय छे तेवी रीते पुष्टिमार्गना जे सिद्धान्तोनुं उपर प्रमाणे स्पष्टीकरण आपणे शोधीशुं ते लोकने परिचित शांकर वेदांतीादिकनी भाषाना तेम राजभाषाना विचारोद्वारा कोई स्थाने समजवानुं सुलभ हशे त्यां ते द्वारनो उपयोग करीशुं, अने ज्यां

अन्य कोई द्वार उघाडुं हशे त्यां तेनो उपयोग करीशुं. एटला उपरथी आपणे आ सर्व संप्रदायो ज के विद्याओनी परस्पर तुलना करवा के तेने उचुं नीचुं पद आपवा बेठा छीए एवी भावना करवी नही, कारण एवी भावना उत्पन्न करवानो मारो आशय नथी.

१७. आवी भावना दूर राखी प्रथम पगलुं भरतां ज मर्यादा-पुरुषोत्तम अने पुष्टि-पुरुषोत्तमनो विवेक समजवानो मार्ग शांकर वेदांतनी एक युक्तिथी शोधवानो प्रसंग प्राप्त थाय छे. वल्लभाचार्यना संप्रदायने संप्रदायनी संज्ञा आपवी अने शांकर वेदांतने हालमां परिचित वेदांत संज्ञा आपवी आपणने अनुकूळ पडशे जाणी ते संज्ञाओ वापरीशुं. वेदांतमां ब्रह्मज्ञानना बे मार्ग दर्शाव्या छे तेमां एक परोक्षज्ञाननी संज्ञाथी अने अन्य अपरोक्षानुभवनी संज्ञाथी ओळखवामां आवे छे. संप्रदायमां एटले वल्लभ संप्रदायमां वर्णवेल अक्षरब्रह्म अथवा मर्यादा-पुरुषोत्तम ते परोक्ष ज्ञानथी प्रमेय छे अने पुष्टि-पुरुषोत्तम अपरोक्षानुभवथी साध्य छे एवुं कहेतां ए बेनो विवेक स्पष्टतर थाय छे. ए उभय मळी मात्र एक ब्रह्मनां बे स्वरूप छे अने ए बेना सरवाळाने दयाराम "अखिल" संज्ञाथी ओळखे छे.

१८. अखिलनुं वर्णन करतां कवि कथे छे के

"आद्य स्वयंभू आत्माराम जी, मूळ पुरुष जे पूर्णकाम जी,
"प्रधान पुरुषेश्वर परब्रह्म जी, नेति नेति कहे निगम जी,
"पर अक्षरथी त्रिगुणातीत जी, गम्य न मन गो अकळ अजीत जी
"जे थकी कंपे माया काळ जी, एवुं अखिलनुं रूप रसाळ जी"

(र. व. पद १२; १–२)

अखिलना रसाळपणा विषये कवि लखे छे:—

"जे रसाळ नित्य नवीन मोहन आनंदमय सर्व अंग,
"नटवर ललित त्रिभंग छबी पर वारुं अनंत अनंग."

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"जे मूळप्रकृति महामाया, जे पुरुषनी किंकरी,
"ते दयाप्रीतम अखिल ईश्वर, गोपीजनवल्लभ हरि."
(र. व. पद १३, ३, ८)

कार्यरूप जगत्नुं स्वरूप पळे पळे बदलाय छे माटे तेनुं नाम क्षरब्रह्म, कारणरूप ईश्वरशक्ति ते क्षर नथी माटे अक्षरब्रह्म, अने तेनाथी विशेष अने अक्षरथी पण उपर ते निरक्षर अथवा अक्षरातीत ब्रह्म, आवा त्रण भेद संप्रदायमां छे ते वेदांतना माया, ईश्वर, अने ब्रह्म, ए त्रण भेदने स्थाने छे. वेदांत मायाने ईश्वरना महास्वप्नरूपे असत्य जेवी माने छे त्यारे ए स्वप्नने स्थाने क्षर ब्रह्म संप्रदायमां सत्य मनाय छे, अने अवतारदेह तेमां आवी जाय छे. अखिल अथवा रसाळ अक्षरातीत ब्रह्म नटवररूपे नट-क्रीडा करी रह्युं छे अने श्रीअंगने नामे समजाय छे ते महानटना अखिल अंगमां नटक्रीडा समये त्रिभंग पडे छे ते शाने उद्देशीने कहेला छे ते बहु स्पष्ट नथी; पण ते उत्पत्ति, स्थिति, अने लयने उद्दिशता होय एवो संभव छे, कारण एक स्थाने " पुरुषोत्तमे भ्रूकुटीभंगथी सृष्टि उपजावी " एवुं वाक्य छे. र. व. पद १४, ६. वळी अन्य स्थाने कह्युं छे केः—

"विश्व सकळ छे हरिनुं रूप जी,
"एकांशे व्यापक व्रज भूप जी,
"कर्ता हर्ता पोषक स्वामी जी,
"सहु घटवासी अंतर्यामी जी" र. व. पद २१;१.

एक अंशथी कृति, बीजाथी पोषण, अने त्रीजाथी संहार, एम अंतर्यामीनी लीलाना भंग समजाय छे. ए त्रण भंग वच्चे विश्वरूपे हरिनो एक अंश व्यापक थयेलो छे; अने बाकीनो अंश तेथी व्हार छे, विश्वनी व्हार छे, देशकालनी व्हार छे, अने पुरुषसूक्तमां **स भूमिं विश्वतो वृत्त्वा अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्** । कहेला परम पुरुषना

अंशने उद्देशीने ज आ बाकीनो अंश वर्णलो जणाय छे. श्रीकृष्णना अवताररूप नटवरने वेणुगान समये कंठ, कटि, अने चरणना त्रि-भंग ते आ महानरना त्रिभंगना संकेतनां स्थान होय अने ते सर्वना उपरनुं उत्तमांग ते उपर कहेला बाकीना भागनुं संकेतस्थान होय तो नवाई नथी.

१९. जे भ्रूकुटीभंगथी सृष्टिनी उत्पत्ति छे ते भंगवेळाना एक कटाक्षथी प्रभुनी प्रिया सुन्दरी भक्ति अने भक्त जीवो समेत दैवी सृष्टि उत्पन्न थई अने बीजा कटाक्षथी प्रभुनी दासी माया अने तेमां लीन थयेला जीवो समेत आसुरी सृष्टि उत्पन्न थई. ए प्रथम कटाक्ष ते कृपाकटाक्ष हतो ते "अक्षर" उपर पडतां भक्तिमां लीन वैष्णवो थया. र. व. पद २४. एक दृष्टिथी सृष्टिना आवा बे प्रकार छे तो नाम, रूप, अने गुण एवा बीजा त्रण प्रकार पण छे अने ते सर्वरूपे हरि ज छे.

"नाम, रूप, ने गुण करी भेद जी, सकळरूप श्रीहरि कहे वेद जी;
"विचित्र लीला रची समर्थे जी, रमण पोताने करवा अर्थे जी"

(र. व. पद ३५; १)

ए सउना सदृश हरि छे पण हरि अदृश कोई नथीः—

"सकळ सदृश हरि ले जोईजी, हरि सदृशता न मळे कोई जी;
"आद्यंते एक रहे हरि जेह जी, मध्ये बहुरूपे पण तेह जी.
"पोते ज रचनारूप हरि, पोते ज जोय अनूप,
"चित्तशुद्धि नीरखतां भास विलास छे तद्रूप."

(र. व. पद ३५; २, ४.)

सर्व सृष्टिमां एम हरि छे तो सारा नरसा सर्वनी भक्ति ते भक्ति केम नही तेनी समजण कवि आपे छे के गंगाजळ आखी नदीमां पवित्र छे, तेम जगत् पण प्रभुनुं मौक्तिकरूप सर्वत्र छे ते पवित्र ज छे; पण तीर्थ आगळ गंगाजळनो अध्यात्म महिमा छे अने

गंगादेवी अदृश्य अधिदैव स्वरूप जुदो महिमा धारे छे तेम अंतर्यामिन् अक्षरब्रह्म तीर्थजळ पेठे हरिनुं अध्यात्म स्वरूप छे अने पुरुषोत्तम ते अधिदैव स्वरूप छे एवो विवेक छे: र. व. पद ३५; ५–८. आ प्रमाणे भेद वस्तुत: न होवा छतां मात्र विवेकने माटे छे अने विवेकथी हरिपूजन करतां ज फळ छे, कारण एकनो एक अग्नि एक दशामां बाळे छे ने बीजी दशामां नथी बाळतो, अने वृक्षनुं सिंचन तो आखा वृक्षने सिंचन करवाथी नही पण थडने सिंचन करवाथी थाय छे.

"निरावरण अग्नि ज्यम बाळे जी, सावरण स्पर्शे त्यम न प्रजाळे जी
"एम हित हरिनुं संसृति टाळे जी, प्रीत प्रपञ्चे भद्र न भाळे जी;
"थड डाळां अळगां नही कोय जी, पण सिञ्चन ते थडने होय जी;
"ब्रह्म सत्य ने जगत असत्य जी, एम कहे काणा वणमत्य जी."

र. व. पद ३६; १–२.

२०. वेदान्तमां ब्रह्मने सच्चिदानंद-स्वरूप कहे छे. संप्रदायकवि ते त्रणने ब्रह्मना गुण गणे छे.

"निर्गुण सगुण श्रुतिनो अर्थ जी, एम कर्यो महामति समर्थ जी,
"प्राकृत गुण नही जेमां लेश जी, अप्राकृत गुण भर्या अशेष जी;
"सत्, चिद्, आनंद, आदि अनंत जी, ऐश्वर्यादि सह भगवंत जी;
"अगुण सगुण ए ब्रह्म विचार जी; केवळ निर्गुण कहे गमार जी:"

र. व. पद ४५; १–२.

२१. ए सद्, चिद्, आनंद वीशे कवि कथे छे के,
"सद् रूप समज विराट, अक्षरब्रह्म चिद् कहे छन्द
"छे नारायण आनंदमय, श्रीकृष्ण परमानन्द."

र. व. पद ८०; ६.

२२. अत्यारसुधीनां आपणां दृष्टांतोथी समजाय छे के वर्गीकरण शुद्धिने माटे कविने झाझो आदर नथी. जे सद् चिद् आनं-

दने उपर एक स्थाने कविए ब्रह्मना गुण गण्या छे तेने ज आ स्थाने ब्रह्मनां रूप गण्यां छे. ते रूप हो के गुण हो, पण विराट् अथवा विश्वरूप ते सद्, अक्षरब्रह्म ते चिद्, अने नारायण अने कृष्ण ए उभय आनंद, एटलुं फलित स्पष्ट थाय छे.

२३. नारायण अने कृष्णनी व्याख्याओ छे केः—

"परमात्म धर्मे करी जे सर्वना अंतर्यामी,
"श्रीनारायण भगवान धर्मे सकळकेरा स्वामी;
"आकृति शिशु, ने कुमार व्रज, पौगंड नंदकुमार,
"छे धर्मी नित्य किशोर केशव राधिका उरहार"

र. व. पद १२; ५,६.

२४. आमां परमात्मा, भगवान, अंतर्यामी, अने सकळकेरा स्वामी नारायणने कह्या छे अने तेने धर्मरूप कह्या छे, त्यारे श्रीकृष्णने धर्मीरूप कह्या छे अने तेनुं वर्णन ते तेमनी अवतारदशानुं छे के धर्मीरूप पुष्टिपुरुपोत्तम खंड १५ नुं छे ते विचारवानुं छे. उपरनी बे कडीयो उपर दृष्टि करीये तो तेमां पण संदिग्ध वचन छे केः—

"प्रतिरोम जे महापुरुष ब्रह्म, ब्रह्मांडकोटि अनंत,
"ते वामपद्मां बिन्दुरूपे, वसे राधाकान्त."

र. व. पद १२; ४.

२५. प्राचीन काव्यमाळाना टीकाकार आनो एवो अर्थ गणे छे के अनंतकोटि ब्रह्मांडने प्रतिरोम धारनार महापुरुष छे ते राधाकान्तना वामपद्मां बिन्दुरूपे वसे छे. बीजो अर्थ एवो पण थाय के उक्त प्रकारना ब्रह्मना वामपद्मां बिन्दुरूपे राधाकान्त वसे छे. आ उभय अर्थ संभवित छे ते कीया अर्थनुं ग्रहण योग्य छे ते जोवानुं छे.

२६. श्रीकृष्णनो अवतारी स्थूल देह आ पृथ्वीना परमाणुओ भेगो थई गयो छे, जे गोकुळ अने वृन्दावन तेमनां विहारस्थान

हतां ते नामनां स्थान हजी पण छे पण जे अनित्य पृथ्वी उपर तेओ उभां छे ते पृथ्वीनी अनित्यतामांथी ए स्थान उगरे एम नथी, जे गोपिकाओना स्थूल देह त्यां हता ते पण स्थूल पदार्थ-मात्रनी अनित्यताने वश थई गया छे, अने ते सर्वेनी आवी अनित्य ऐतिहासिक सत्ता-असत्तामां श्रद्धा राखी कवि श्रीकृष्ण, गोपिकाओ, वृन्दावन, गोकुल अने रासक्रीडानी अन्य नित्यस्थिति देखे छे. जेमां मुनिजनो लीन थाय छे एवा "कृष्णसदन"ने "आ-ध्यात्मिक श्रीस्वरूप" कही तेनाथी "पर" पदार्थ कवि दर्शावे छे के:–

"छे तेथी पर श्रीपुरुपोत्तम, ज्यां **आदि** वृन्दावन,
"लीला **अचळना** विहारी, ज्यां गम्य नही गो मन.
"श्रीअंगनी सृष्टि ज्यहां, सामग्री सहु निजरूप;
"आनंदमय त्यां **अखिल** क्रीडा, **नित्य** सत्यअनूप.
"जे थकी श्रेष्ठ न कशुं, **व्यापी वैकुंठ** वेष्ठित लोक;
"ज्यां थकी पुनरावृत्ति नही, ज्यां स्वप्नमां नही शोक.
"हर हिरण्यगर्भादिक न गति, ज्यां सकळ **सुन्दरी** ग्राम;
"छे दयाप्रीतम पुरुषोत्तम, पुरुषैक पूरणकाम.

(र. व. पद ८१; ५–८.)

त्यां पण यमुनादिक छे, त्रिविध पवन छे, गिरिराज छे, अने त्यां

"शतपत्र लोचन सुन्दरी श्यामातणां बहु वृन्द,
"ते मध्य विलसे लाल नटवर रसिकमणि गोविन्द.
"**नित्य** नवल **रास** विलास रचना, कथनमां क्यम आवे?
"छे **नित्य** लीला **अप्राकृत**, आनंदमय श्रुति गावे.
"ए पुष्टि सृष्टि सर्वेनी श्रीअंगथी उत्पत्य,
"जन दया प्रीतम कृष्णरूप विना ठरे नही मत्य."

(र. व. पद ८२.)

२७ कविए करेला आ विवेकप्रमाणे जे बे सृष्टिओ छे तेमांनी एक नित्य सृष्टि छे अने बीजी अवतार-सृष्टि छे. अवतार-सृष्टिमां कृष्ण, वृन्दावन, रास आदि अंशो छे तेमने आपणे अवतारकृष्ण, अवतारवृन्दावन, अवताररास वगेरे संज्ञाओ आपीशुं. नित्य सृष्टिमां नित्य कृष्ण, नित्य वृन्दावन, नित्य रास, वगेरे संज्ञाओ वापरीशुं. उपरनी छेली कडीमां आ नित्य सृष्टिने पुष्टि-सृष्टि कविए कही छे अने श्रीअंगमांथी एटले अखिलमांथी तेनी उत्पत्ति कही छे. ए उत्पन्न नित्यसृष्टि संबंधे छेली पंक्ति उपर आपी छे ते प्रमाणे ए नित्यसृष्टिमां पण मति ठरवानुं आखर ठाम तो श्रीकृष्णरूप ज छे. आ नित्य कृष्णरूप अने अखिलना वामांग (खंड १५) धर्मी पुष्टि-पुरुषोत्तम ते उभय एक ज सत्वनां भिन्न नाम छे ए हवे स्पष्ट थशे. उपर रसिकवल्लभना पद ८१ मांथी आपेली पंक्तिओमां जे अखिल क्रीडा कही छे ते तेना प्हेली ज कडीमां श्रीअंगनी सृष्टि कही छे एटले आ अखिल क्रीडामां अखिल शब्द श्रीअंगना पर्याय अखिलनो वाचक नथी, पण सामान्य भाषा प्रमाणे समस्त शब्दनो पर्याय छे. आ नित्य सृष्टि-रूप लोक ए पंक्तिओ प्रमाणे वैकुंठथी वेष्टित छे अर्थात् नित्य कृष्ण अने तेना वृन्दावननी आसपास तेमना धामरूपे ए कृष्णना सदनरूपे अध्यात्म श्रीस्वरूप एटले अक्षरब्रह्म (खंड १९) अथवा मर्यादा पुरुषोत्तम (खंड १५) जे व्यापि वैकुंठमां विहार करेले (खंड १५) ते स्वरूप ज नित्य कृष्णनुं धाम छे. अध्यात्म अक्षर ब्रह्म साध्य थया पछी एना पण मर्मभागमां प्रवेश कर्याविगर अनुभव-साध्य नित्यकृष्ण प्रत्यक्ष थाय एम नथी माटे ए कृष्णरूप अक्षर-ब्रह्मथी पण पर छे अने अक्षरब्रह्म मात्र कृष्णसदन छेः **र. व.** पद ८१; ४, ५.

२८. एक स्थळे कविए अक्षरब्रह्मनुं चिद्रूप, नारायणनुं आनंदमयरूप, अने कृष्णनुं आनंदरूप कहेलुं छेः (खंड २०-२१).

अन्य स्थाने नारायणने अंतर्यामी, स्वामी, परमात्म धर्म, अने भगवत् धर्म कहेला छे अने एमनाथी "नित्य किशोर केशव" ने जुदा वर्णवेला छेः (खंड २३). आ उपरथी एम समजाय छे के, मर्यादा-पुरुषोत्तम अथवा अक्षरब्रह्ममां कविए चिद्भाग अने आनंदमय भाग गण्या छे पण आनंदरूप भाग गण्यो नथी, अने आनंदरूप तो केवळ कृष्णमां ज गण्युं छे. नारायण जेम धर्मरूप छे तेम ज अक्षरब्रह्म पण धर्मरूप छे. (खंड १५,२४) अने पुष्टि-पुरुषोत्तम तेम "नित्य किशोर केशव" धर्मीरूप छे. ए सर्व उपरथी एम समजाय छे के नित्यकृष्ण अने पुष्टि-पुरुषोत्तम जेम एक ज छे तेम ज नारायण अने अक्षरब्रह्म पण एक ज छे अने ज्यारे ते परोक्ष ज्ञान प्रमेय (खंड १५ अने १७) थाय त्यारे तेनुं चिद्रूप स्पष्ट थवाथी अक्षरब्रह्म कहेवाय छे अने भक्तिसाधन (खंड १५) थी साध्य थाय छे त्यारे आनंदमय लागे छे अने नारायण कहेवाय छेः (खंड २३-२४). नारायण एटले "जीवसमूहनो आश्रय" एवो अर्थ आपी कवि तेनुं भजन करावेछे. १३ प्रा. का. मा. पृष्ठ ८६ पद ४०. सर्व जीवोनो आश्रय अक्षरब्रह्म अथवा नारायण छे, अने पुष्टिमार्गना रसरूप आनंदरूप पुष्टि-पुरुषोत्तमना भक्तो तो पुष्टि-सृष्टिना ज अंश छे ए विवेक अखिलनां बे स्वरूपोनो उक्त भेद लक्ष्यमां लीधाथी समजाय छे. नारायण अने अक्षरब्रह्मनो आनंद **गणी** शकाय **मापी** शकाय छे मुनिजनोने ए अध्यात्मस्वरूपथी आनंद प्राप्त थाय छे ते आवी **मर्यादा**वाळो होवाथी मात्र **गणितानंद** छे अने तेमने प्राप्त थतुं श्रीस्वरूप पण **मर्यादा**-पुरुषोत्तम छे त्यारे पुष्टि-पुरुषोत्तम अथवा नित्य कृष्ण परमानंदरूप पूर्णानंदरूप छे. **र. व.** पद ८०; ६–८ अने पद ८१;४.

२९. उपर प्रमाणे विवेक होवाथी **र. व.** पद १२; ६ मांना "राधिका उरहार" अने ए ज पदनी कडी ४ मांना "राधाकान्त" ते आ नित्यकृष्ण ज गणवानो प्रसंग स्पष्ट छे अने खंड२५–२६मां

ए कडीओ संबंधे उठावेला बे प्रश्नोनुं समाधान एवी रीतनुं प्राप्त थाय छे के (१) ए पदमांना धर्मी केशव ते पुष्टि-पुरुषोत्तम "राधिका उरहार" अने "राधाकांत" कृष्णना वामपदमां कोई नथी पण ए कृष्ण ज अखिल स्वरूपना वामपदमां वसे छे, अने (२) जे अखिलना दक्षिणांगमां अक्षरब्रह्म अने वामांगमां नित्य-कृष्ण वसे छे (खंड १५) अने महामाया जेनी किंकरी छे (खंड १८) ते अखिल ज वामपदमां बिन्दुरूपे राधाकान्तने धारनार महापुरुष ब्रह्म (खंड २४) छे अने तेने रोमेरोम अनंत कोटि ब्रह्मांड (खंड २४) पण क्षरब्रह्म सद्रूप विराटरूपे (खंड२१–२२) वसे छे.

३०. आ प्रमाणे कविनी ईश्वरभावना आवां वामदक्षिण अंग-वाळा अने आवां अनंत असंख्य रोमवाळा महापुरुष नटवर ब्रह्ममां समाप्त थाय छे. मनुष्यनी दृष्टि पोतानी शक्तिप्रमाणे ते महापुरुषनी भावना करी शके छे. ईश्वरनुं सद्रूप तेना स्थूल विश्व-रूप विराटमां आ दृष्टिनी स्थूल शक्तिने देखाय छे. मनुष्यनी बीजी दृष्टि अस्थूल–सूक्ष्म–ज्ञानरूप छे, चिद्रूप छे, ते दृष्टि चिद्रूप नियन्तारूप अक्षरब्रह्म ईश्वरने जुवे छे. मनुष्यनी प्रेमरूप रसरूप अ-नुभवदृष्टि आनंदरूप रसरूप नित्यकृष्णमां प्रवाहित थाय छे, रममाण थाय छे, अने पूर्णानन्द अनुभवे छे.

३१. पाश्चात्य दृष्टि प्रमाणे मनुष्य ज्ञानेंद्रियोद्वारा अने ज्ञाने-न्द्रियोनां दूरदर्शक यन्त्रादिक साधनोद्वारा दिशा अने काळरूप विश्वमां भरेली सृष्टिसामग्री जोवा पामे छे, तो ए मनुष्यमां जीवनी सत्ता माननारा पाश्चात्य विद्वानो आ सृष्टिसामग्रीने स्थूल गणी तेना मर्मभागमां रहेला अदृश्य नियन्ताने अनुमानथी, उपमानथी, अने श्रद्धाथी देखे छे अने भक्तिभावनाथी पूजे छे. पाश्चात्य शास्त्र आ सृष्टिसामग्रीमां "Monism" नामे अद्वैत सत्वने क्वचित् माने छे अने विश्वरूप विराटमां अने ए सत्वमां बहु

अंतर नथी. नियन्तानुं ज्ञान अने भक्तिद्वारा पूजन ए पाश्चात्योमां Monotheism अथवा एकेश्वरवाद नामे ओळखाय छे. संप्रदायमां पण ईश्वर अने जीवनो भेद अने सेव्यसेवक संबंध गणी आवो ज वाद मान्यो छे, परंतु तेमां जीवने ईश्वरनो अंश गणेलो छे, अने जगत् ब्रह्मनुं ऐक्य गणेलुं छे तेथी पाश्चात्योना Pantheism एटले सर्वेश्वरवादमां आनो समास थाय छे. बाकी संप्रदायनां तेम कविनां भजन-कीर्तनो तो आवा सर्वेश्वरवाद उपरनी तथा अंशाशीवाद उपरनी दृष्टिने केवळ दूर करी देइ मात्र एकेश्वरवादनां भजन-कीर्तनरूपे ज उद्गार करे छे. अवतारदशानी अने पुष्टि-पुरुषोत्तमनी भक्ति तो एकेश्वरवाद तेम सर्वेश्वरवाद उभयथी केवळ भिन्न छे. आपणा कविनां पदोमां तेम केटलीक गरबीओमां केवळ एकेश्वरवादीनी श्रद्धाथी प्रभुना दासरूपेज भक्ति भरेली छे.छुटक काव्योमां अवतारदशाना प्रसंगो छे.अने गरबीओना म्होटा भागमां पुष्टि-पुरुषोत्तम अथवा नित्य-कृष्णमां कविनो प्रेमरस संप्रदाय-प्रनालिकामां थईने निर्भर प्रवाहित थाय छे. पदोमां के काव्योमां के गरबीओमां सर्वेश्वरवादना उद्गार कोईक ज स्थाने जणाय छे अने ज्यां स्हेजस्हाज जणाय छे– त्यां अंते एकेश्वरवादना के कृष्णलीलानां उद्गारोमां, नदीओ समुद्रमां भळे तेम, भळी जाय छे.

३२. कविना सर्वेश्वरवादनो उपयोग आवी रीते एनां काव्योमां अल्प ज छे अने कविना रसोद्गारमां तो ते केवळ तिरोहित थाय छे ते एक ज दृष्टांतथी स्पष्ट थई शके एम छे. संप्रदायमां सर्व जगत्‌ने सत्य अने हरिनुं रूप गणेलुं छे अने संसारने जीवनी अविद्याए कल्पेलो, अहंताममतात्मक, जीवना बन्धनरूप, अने ज्ञानथी नाश करवा योग्य गणेलो छेः (खंड १५). कवि आवा बे पदार्थोनो भेद स्वीकारे छे तो कचित् जगत् अने संसार ए बे शब्दोने पर्यायरूप गणे छे तो कचित् मायाने नामे कचित् संप्र-

दायोक्त जगत्‌ने ओळखे छे, कचित् अविद्याने ओळखे छे, अने कचित् संप्रदायोक्त अहंताममतात्मक संसारने ओळखे छे.कीये स्थाने कीया अर्थमां कीया शब्दने प्रयोजे छे ते ते स्थानना विचारथी अन्वय करी शोधी न क्‌हाडीये तो गुंचवारो थाय एम छे. आ सर्व शब्दोमांथी कोईने कवि पोतानी परिभाषा करी देवा जेटलो आदर राखता नथी, अने जगत्‌ने असत्य क्‌हेवानी ना पाडे छे पण एमनी हृदयवृत्तिने के प्रेमरसने ए जगत् अने संसार उभय वेदान्तनी पेठे छेक स्वप्न जेवां नथी वसतां तो ए उभयमांथी एकनी पण एमने रज परवा पण नथी. संसारशब्दने जगतना पर्यायरूपे वापरी कवि तेनुं भगवद्रूपत्व दर्शावे छे के,

“ संसार सूक्ष्म बीजरूप सदा हरिमां सत्य,
“ ज्यम वृषा वीत्ये अभ्र अंतर्ध्यान होय सउ जोय,
“ क्यहुं हतां नही तो समय आवी कोण वरस्युं तोय?
“ भव लीला छे भगवंतनी, संशय न भगवद्रूप.”
“ छे कारण साचुं दयाप्रीतम, कार्य पण तद्रूप.”

र. व. पद ३४; ६–८.

ए ज संसारने मूळ प्रकृतिनुं अने महामायानुं नाम आपी अन्यत्र तेने कवि महापुरुषनी किंकरी क्‌हे छे (खंड १८) अने ए किंकरीनी सृष्टिने आसुरी कहे छे: (खंड १९). ए आसुरी रूपवाळी मायानुं काळरूप अखिलनुं रसाळरूप जोई कंपे छे:खंड१८. अर्थात् मायानुं स्वरूप आवुं निन्द्य अने बीभत्स छे. अन्य स्थाने वळी मायाशब्दने प्रकृतिना नहीं पण मोहना पर्यायरूपे कवि प्रयोजे छे अने तेनुं अने अविद्यानुं एकठुं निवास स्थान कामने अने दामने गणी त्यां आगळथी न्हासी जवानो उपदेश करे छे.

“ दुष्ट संग प्हेलो.परनारी जी, निजनी पण वहु प्रिय नही सारी जी,
“ काम दाम बे माया धाम जी, सदा अविद्या त्यां विश्राम जी.
“ विश्राम ज्यां नित्य अविद्या, त्यां सउ अमंगळ होय,

" श्मशान स्थळ त्यां प्रेत होय, कौतुक न माने कोय.
" तरुणी ज माया मोहनी, तरवा न दे ज्यां संग,
" अणमळ्या कदी को उगरे, मळतां सकळ बळभंग.
" ते माट एवुं न्हासवुं, ज्यम छाया स्पर्श न थाय,
" ज्यम छायामगरी छाया अडतां काया करडी खाय."

र. व. पद ७४, २–५.

३३. कविना स्थूल जीवनने कलंकित गणवुं के न गणवुं तेनी तुलना करनारने कविना आ उद्गार बहु मनन करवा योग्य छे. बाकी प्रस्तुत प्रसंगने माटे तो कविना सर्वेश्वरवादनी केवी मर्यादा छे ते समजाववा माटे आटलुं दिग्दर्शन करेलुं छे. ए मर्यादामां रहीने ए वाद सर्वात्मभावनी भावनारूपे कविना अक्षरदेहमां स्फुरे छे ते प्रसंग आव्ये जोईशुं. अत्यारे तो एटलुं जाणवुं बस छे के वेदान्त **आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति** एम कहे छे त्यारे संप्रदायनो सर्वभूतात्मभाव पण एवुं ज कहेछे, अने जे जगत्‌ने वेदान्त अध्यासरूप गणी माया नाम आपे छे ते जगत्‌ने दयाराम सत्य गणीने पण ते जगत्‌रूप फळना रसने मायानुं नाम आपी ए रसने अने कळीयाने तेम छोतरांने साथे लागा एक न्याये ज फेंकी दे छे अने सटे सर्वात्मभाव वगेरे नामवाळी भावनाओथी नवधाभक्तिनां स्वरूपने देखे छे ते प्रसंग आव्ये जोईशुं.

९ राधाकृष्णमां कविना रसविषय.

३४. अक्षरब्रह्मरूप जेनुं सदन छे एवा नित्यकृष्ण रसरूप पूर्णानंदरूप छे एवुं कविवचन उपर दर्शावेलुं छे. पण उद्बोधक शक्तिनो समागम ज आ रसरूप कृष्णने नित्य होय छे अने ए शक्तिने कवि राधानुं नाम आपे छे. अक्षरब्रह्म अथवा नियन्ता ईश्वरने आ राधाकृष्ण पोतानुं धाम करी ले छे अर्थात् स्थूल विश्वरूपनी नियामक शक्तिरूप ईश्वरना पण हृदयमां राधाकृष्णना विहार नित्य जामी रहेछे. ए हृदयमां पण रस अने रसोद्बोधक शक्तिनो

उद्धव अने समागम कवि राधाकृष्णना नामथी वर्णवे छे. अने राधाने स्वामिनीजीने नामे पण ओळखे छे. ए राधाकृष्ण अथवा रसशक्ति अने रसोद्बोधकशक्ति श्रीअंगमांथी साथे लागुं उत्पन्न थयेलुं वस्तुतः एक ज स्वरूप छे पण एक चणानी बे दाळ जेवुं होवाथी जुगलरूपे जणाय छे.

"श्री स्वामिनी शुं स्वरूप ते शुण कहुं सहितविवेक
"श्री कृष्णराधा नामे बे, वस्तुता जोतां एक.
"ज्यम अग्नि-ज्वाळा, चंद्र-कोमुदी, सिन्धु ने वळी छोळ,
"कहेवां भिन्न अभिन्न बन्ने वस्तु एक ज खोळ.
"जे "एकमेवाद्वितीय ब्रह्म" कह्युं श्रुतिए जुठा जाणी,
"नही तो थयुं ध्रुव "एव" शब्दे अद्वितीय शीद वाणी?
"भासे जुगल वै एक बे मळी, हेतु ए पुनरुक्ति,
"जन दयाप्रीतम कृष्णराधा एक बे ए जुक्ति."

र. व. पद ८६; ५–८.

"एक चणो ज्यम द्विदळ मळीने जी, स्वतःसिद्ध रह्या बे हळीने जी;
"सत्य चणो ज्यम भासे एक जी, द्विदळांतरमां विरल विवेक जी;
"त्यम अक्षर-वेष्टित जुगरूप जी, अनुभवी जाणे वात अनूप जी.
"एक रूपथी रमण न थाय जी, बीजुं इच्छु सम व्रजराय जी.
"व्रजराय समता अवर नही, निज सरीखा निज एक,
"स्त्रीरूप निज आत्मा हृदयमां, लीला नित्य विवेक.
"सहु विद्यमान हतो **उपस्कर रसोद्बोधक** जेह,
"श्री स्वामिनीजी सह प्रकट कीधो बाह्य इच्छा नेह.
"श्री राधिकाथी रमण **अचलित** करे सुन्दर श्याम,
"ए रीत वेदवचन साचुं, कृष्ण आत्माराम.
"भाती पटोळुं, रूप छाया, संग प्रकट्यां बेय,
"ज्यम दीपक दीपकथी हवो समरूप निःसंदेह."

र. व. पद ८७, १–६.

श्रीकृष्ण जेने पूर्वे रसरूप कहेला छे (खंड १५) ते अने तेमनी रसोद्बोधक सामग्री (जेने उपरनी पंक्तिओमां रसोद्बोधक उपस्कर नाम आपेलुं छे) आ प्रमाणे एक वस्तु छे अने ए सामग्रीमां मुख्य शक्ति स्वामिनीजी एटले राधा छे. ए कृष्ण अने राधा श्रीअंगनी पुष्टिसृष्टि छे (खंड २६–२७) अने ते युगलरूपे देखाय छे पण घडीमां कृष्ण राधा थई जाय छे अने घडीमां राधा कृष्ण थई जाय छे.

" श्रीकृष्ण होय कदी राधिका, थई जाय राधा कृष्ण;
" त्यां कार्य कारण कथन शुं! पूरण परस्पर तृष्ण.
" **आत्मा वै राधिका प्रोक्ता**, वेदनी श्रुति एह;
" जन दयाप्रीतम कृष्ण राधा एक निःसंदेह. "

र. व. पद ८७; ७–८.

तेमनां रूप अने अलंकारादिक कहेवाय छे ते सउ " साभिप्राय " छे. र. व. पद ६२; ७. अर्थात् सांकेतिक छे. जेम के राधा कृष्ण थई जाय अने कृष्ण राधा थई जाय एवी रीतना रसशक्ति अने रसोद्बोधक शक्तिना परस्पर आघात-प्रत्याघातने समये जे रस-प्रवाह नीकळवा मांडे तेमां स्नान थतां ज ते स्नान करनार भक्तो सांसारिक विकारोमां रच्यां पच्यां रहेवानो पोतानो स्वभाव बदली नांखे छे अने दुष्टता अने मलिनता छोडी साधु थई जाय छे. आ स्वभाव बदलावनार रसप्रवाह ते ज कृष्णभक्तनां यमुना मैया.

" जुगल रूपनुं स्मरश्रमवारि जी, ते श्री यमुनाजी सुखकारी जी,
" तुर्य प्रिया श्रीहरिनां कहावे जी, स्वभाव समता कोई न आवे जी.
" पियु आदि सउने सुखरूप जी, कोश कृपाना अत्य अनुप जी;
" **स्वभाव जीत्यानो न उपाय** जी, **ते जीतावे यमुना माय** जी.
" ए माई कृष्णा कृष्णरूपिणी करे उज्वल दास;
" सहजे थयुं पयपान पावी, त्होय नहीं यमत्रास.
" जन स्नान सकृत नुतन तनु, योग्यता सेवन कृष्ण,

"अहो ? सप्त सागर मेदिनी निज जन पूरक तृष्ण."
"सद्य स्मरण करतां मात्रमां लय पाप सउ संताप;
"श्री यमुनाजी बीजां नथी; श्रीकृष्ण पूरण आप."

र. व. पद ८८, १–५.

यमुना स्वरूपमां रसशक्तिना अने रसोद्बोधक शक्तिना आघातप्रत्याघातथी स्मरश्रमवारिरूपे उद्भवता नवीन रसप्रवाहनो आम समास छे अने ते प्रवाह मनुष्यना स्वभावनो उद्धारक छे तो ए रसोद्बोधक शक्तिरूप स्वामिनीजी राधिकाना अंगमांथी जे सुगन्ध प्रवाह निरन्तर प्रसर्या कर्या छे, ते सुगन्ध ज तुळसीनुं शुद्ध स्वरूप छे, ए तुळसी ते ज वृन्दाजी, ए तुळसीनुं वन ते ज नित्य वृन्दावन, अने ए वनना सुगन्धनो पास जे पदार्थमां नथी रसोद्बोधकशक्तिना सुगन्धनो अंश पण जेनामां जणातो नथी–एवा पदार्थनो रसशक्तिरूप श्रीकृष्ण कदी पण स्वीकार करता नथी. ए सुगन्धथी ज पतिव्रतापणुँ अने अनन्यभक्तिनी प्राप्ति छे. ए सुगन्धरूप तुळसी पण हरिप्रिया छे प्रभुप्राप्तिने माटे आवश्यक छे; र. व. पद ८८; ६–८. अवतार-दशामां श्रीकृष्णना प्रसंगमां आवेला अने सांप्रत वैष्णव श्रद्धामां स्थूलरूपे पूजनीय गणाता अनेक पदार्थो आवी रीते "साभिप्राय" छे. अने ते अभिप्राय शोधवामां अने कथवामां कविने ओर आनंद थाय छे, कारण तेम करतां तेनी दृष्टि स्थूल पडो भेदी सूक्ष्म नित्य पदार्थोमां प्रवेश करी शके छे.

३५. ज्यारे ज्ञानभक्तिथी प्रमेय करवानुं अक्षरब्रह्म सर्व जीवोना आश्रयरूप नारायण नामे कविए वर्णवेलुं छे (खंड २८) त्यारे रसरूप श्रीकृष्ण मात्र अमुक जीवोने ज "निज" जन गणी पोतानी समता आपे छे: (खंड ३४; र. व. पद८७:३.)ए "निज" जनमां "सुन्दरी श्यामा तणां बहु वृन्द" छे एटलुं ज ' नही पण जे छे ते "सकळ" वस्ती "सुन्दरी ग्राम" ज छे; खंड २६.

आ सुन्दरीओ ! निरन्तर रास विलास सर्वदा मची रहेलो छे, अर्थात् ए सर्व रसोद्बोधक शक्तिना अंश छे अने तेमां स्वामिनीजी राधा मुख्य छे. " राधा " शब्द आराधनमांना राध धातु उपरथी थयो छे. अने भक्तिवाचक छे. पण अक्षरब्रह्म उपरनी भक्ति कही छे तेनाथी श्रीकृष्णउपरनी गोपीओनी अने राधिकानी भक्ति विलक्षण गणेली छे. ते सर्व विवेक समजवा हवे आपणे कविनी दृष्टिमां वसेलुं भक्ति प्रकरण उकेलीशुं अने ते पछी क्रमे क्रमे रसशक्ति अने रसोद्बोधक शक्तिना संबंधनां रूपक स्पष्ट थशे.

६. भक्ति प्रकरण.

३६. जे भक्तोने अने भक्तिने प्रभुना प्रथम कृपाकटाक्षनी दैवी सृष्टि गणी अन्य जीवोनी अने तेमना संसारनी आसुरी सृष्टिथी भिन्न राख्यां छे (खंड १९), जे भक्तोने अने भक्तिने माटे पुष्ट-पुरुषोत्तमरूप नित्यकृष्णनी रसरूप भावना कविना हृदयमां महाज्वालाओने प्रकटे छे, ते भक्तिना विषय साथे कवि जेने नारायणमां सामान्य जीवोए करवानी भक्तिनो विषय पण संबंध राखे छे. माटे ए बे प्रकरणो भेगां विचारीशुं.

३७. कर्म, धर्म, अने ज्ञान ए सर्वेनुं स्थान कवि भक्तिथी नीचे गणे छे, सर्वना फळरूप भक्तिने गणे छे, ए सर्व विनानो पण भक्तजन चांडाल होय तो ते श्रेष्ठ छे एवुं कहे छे, अने भक्तिने माटे स्वधर्मनो त्याग करवानो प्रसंग आवे तो तेवा त्यागथी अकल्याण नथी एम कहे छेः र. व. पद ४८. ए भक्तिमा बे प्रकार छे. नियन्तानुं स्वरूप सुज्ञात करी तेना दास्यभावथी भक्ति करवी ए एक प्रकार, अने तेने माटे ज्ञान, धर्म, वगेरे साधनो आवश्यक छे, अने ए भक्तिनो मार्ग ते मर्यादामार्ग छेः शु. सि. प्र. ७४. ज्यां आमांनां कांई पण साधनविना केवळ पोताना स्वरूपना बळथी ईश्वर भक्तिसाध्य थाय छे ते भक्तिमार्ग पुष्टिमार्ग छे, अने ए स्वरूपबळ ते ज प्रेमबळ छेः ईश्वरनो भक्त उपर

प्रेम अने भक्तनो ईश्वर उपर प्रेम ए उभय स्वरूपना प्रेमबळथी जे ईश्वरसंयोग थाय छे ते पुष्टिमार्गनी मुक्ति छे. आ विषयनुं कवि दयाराम वारंवार चर्वित चर्वण करे छे. एना हृदयमां उभय प्रकारनी भक्ति स्फुरे छे. एनां पदो एनी दास्यभावनी भक्तिथी भरेलां छे तेमां अनेक प्रकारनी युक्तियोथी नियन्तानुं स्वरूप ओळखवाना स्पष्ट प्रयत्न छे, अने एवा प्रयत्नोथी जे ईश्वरस्वरूपनुं भान थाय छे ते भान ते ज संप्रदायोक्त ज्ञान छे. ज्ञान, धर्म, आदिथी भक्ति वधारे छे अने ए भक्ति साध्य करवा जेवी छे ए पण आ ज्ञान छे, अने वेदान्तनुं ज्ञान ते तो असत्य छे एवुं संप्रदाय मत छे. रसिकवल्लभना एक म्होटा भागमां वेदान्तनुं उपरा उपरी खंडन करेलुं छे, अने तेमां तेम बीजां स्थानोमां कवि योगाभ्यासनी मश्करीओ करे छे तो संप्रदायमत प्रमाणेना ज्ञानने पण भक्ति आगळ उतारी पाडवा चुकता नथी अने ए ज्ञानथी थनारी अनेक प्रकारनी मुक्तिने पण गाळो देई भक्तिने अने भक्तिना आत्मारूप प्रेमने पूजे छे.

" ल्हेवुं कठण सहु रीतथी, ज्ञानमां विघ्न अपार,
" ए घुणाक्षर न्याये सफळ कोकने कोईएक वार.
" ते लाभ पण वळी तुच्छ जोतां, **मुक्ति मृत्यु समान,**
" जे असुर अरिभावे मळ्या, सम ठर्युं वैर ने ज्ञान.
" ए **तत्वहुपणु** तुच्छ लागे प्रेमरस पीनार.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" ढोकळा सरखी मुक्तिथी जनप्रेत थाय प्रसन्न,
" जे भक्ति घेबर भोगीया, तेनुं न माने मन."

र. व. पद ५३.

जे ज्ञानने साधतां विघ्नो छे, जे ज्ञानथी मळवानी मुक्ति पण आवी क्षुद्र छे, ते ज्ञान जाते पण दीवानी पेठे पवनथी होलाई जाय

एवुं निर्बळ छे, अने भक्तिनी ज्योत्स्ना तो स्वयंप्रकाश रत्नप्रदीपना[1] पेठे कदी होलाय नही एवी छेः

" भक्ति मणि ने दीपक ज्ञान जी"
" अभय सभय आ कार्य मान जी "

र. व. पद ५५;२.

भक्ति आगळ योगने पण कवि निर्माल्य गणेछे.

" अजपा जपो, अनहद सुणो, पोपलां सघळां व्यर्थ,
" जन दयाप्रीतम कृष्णभक्ति विना न सरे अर्थ"

र. व. पद ५४; ८.

३८. शास्त्रविहित कर्ममार्ग पण नकामो छे अने प्रभुना नामनुं मात्र स्मरण थाय तो ते पापने धोई नांखे छे; र. व. पद ५९,७० अने ७१. प्रभुना केवळ नामस्मरणथी अनेक पापो जाय छे ए भावना आ युगमां एकदम समजाय एम नथी. जेनुं आज नाम-स्मरण थाय तेनो काल रंग लागे तो ए रंग लागवाथी पाप नष्ट थाय छे माटे ज नाम-स्मरण आवा फळनुं साधन छे. जेम कोई स्त्रीने जोवाथी कामीजनने तेनो रंग लागे छे तेवी ज रीते प्रभुना नामस्मरणथी कोई सुपात्र जनने मोडो व्हेलो के तरत प्रभुनो रंग लागे छे. आथी ज आ रंग लागे ते ज साधन छे अने अन्य साधन क्षुद्र छे जपतप आदि चित्तशुद्धिनां कर्मरूपसाधन ज्यां सुधी साधक तेनीपासे जन प्रभुथी विमुख होय छे एटले केवळ संसारना रंगवालो होयछे त्यांसुधी तेने फळतां नथी, अने संसारना रंगथी पुरेपुरो मुक्त थई शकेलो न होय अने तेटले अंशे मायाना आवरणने वश रही दोष करी बेसतो होय तेवा पुरुषने कांई पण साधन न होय पण प्रभुना प्रेमनो रंग थोडो घणो पण लागेलो होय तो ते रंगने बळे

१ रत्नप्रदीपनी आवी कल्पना मेघदूतमां पण छे,

अर्चिस्तुङ्गानभिमुखमपि प्राप्य रत्नप्रदीपान ।
ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणाचूर्णमुष्टिः ॥

मायाना आवरणने क्षीण करी शके छे अने दोषथी तेम तज्जन्य पापथी मुक्त थाय छे. आ ज अभिप्रायने उद्देशी कवि उद्गार करे छे केः–

तेवा हरिसन्मुखना दोष, साधन विमुख तणां,
जेम निष्फळ मृगजळ, तद्वत थोडां अथवा घणां.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

रागादिक तस्कर नही तेने, काराग्रह न भुवन रे.
मोहबेडी त्यां लगी तेने. ज्यां लगी नही हरिनो जन

४ बृ. का. दो. ८३९–४०

३९. सत्संगथी आ रंग लागे छे अने रंगथी पोते पापीजनने पण वश थाय छे एवो उच्चार कवि हरिमुखमां मुके छे.

"रोधाउ नही वेदाध्ययन आदि विना सत्संग,
वण धर्मसाधन थाउ वश हुं जो सुसंगे रंग.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

स्त्री वैश्य शूद्र ने अंत्यज जाति रज-प्रकृतिसपाप,
ते ते सउ मुज पामिया केवळ सुसंग प्रताप."

र. व. पद, ७०.

हरिए जन्म आप्यो, जन्म सफळ करवानी सेनानुं नायकपणुं आप्युं, पण ज्यां मनाजी सुबेदार ज दुश्मनने जईने मळ्यो अने बधी सेना फरी गई त्यां ए सुबेदार उपर हरि बे अक्षरनी आज्ञा मोकले तो ज सेनापति जीते माटे ए आज्ञा मागतां कवि कहे छे केः-

"सुनीये जु हरि हझरत के बंदेकी अरज हें;
बेदील हुई सब साही, साहेबकी क्या मरजी हें !
जीस कामकुं भेजाथा सो कुछ भी ना कीया,
में क्या करूं एकला ! कीसीने न तन दीया.
मनाजी सुबेदार सो दुशमनकुं जा मीला,
उमराव दसो थे सो उसकी संगते चला.

मानो नही कीसीने एक हुकम हमारा,
दगाबाज हुई फोज, कीया काम नकारा.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दो खतका खक लींखके मनाजी फीरावना,
नही तो हझुरकदम दयाकुं बुलावना."

द. का. सं. ६५४. पद ३७.

संसारमां जन्मसिद्धि करवा हरि हझुर पासेथी आ बे अक्षरनो रूक्को दयाने जोईये छीये अने ए रूक्का उपर हरिनुं नाम होय तो आ कलियुगमां बस छे.

" गोविंद नामको आधार, साधन ओर नही काम कलीमे !
रनते बेडो पार !

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

तृषा होय पीये यह अमृत तजी आलस हंकार;
यह अवसर नही बहुर मीलेगो खरचत लाख हजार.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दयाप्रीतम करुना जीनकेपर, तीनको लागे तार ! गोविंद."

(द. का. सं. ६५४–५ पद ३८)

मात्र गोविंद नाममां जेने रस होय छे तेने ते आम साधनरूप थई जाय छे अने तेनो "तार" लागे छे, तो पछी साधनविनानी आहीर जातिनी पण अत्यंत प्रेमबळवाळी गोपीओ जीती जाय तेमां नवाई शी ? तेमणे तो मथुराना बीरपेंडा जेवो प्रेमपेंडो चाखेलो छे एटले प्रभु जाते तेमने रास रमाडे छे.

" बीर पेंडो प्रेमको नोखो कहावे ज्याको बेदहुं भेद न पावे,
बीर०

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

अजीत स्वतंत्र अच्युत ब्रह्मचारी निगम नेति नेति गावे,

सब साधनतें रहित ज्युं अबला सो थेई थेई नाच नचावे!

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कोटि प्रयत्न करो दयाप्रीतम नेह बीना बस ना आवे,

द. का. सं. ६१८-९ पद ६१.

४०. साधनहीन अबळाओना प्रेमने वश थई जाते अच्युत स्वतंत्र ब्रह्मचारी प्रभु तेमना प्रेमनुं पोषण करी तेमने थेई थेई नाच नचावे छे अने प्रेमविना कोईने वश थतो नथी. ते प्रेम ए ज भक्तिनो आत्मा छे अने नामसरणादिक सर्व प्रकारनी भक्तिमां ए प्रेमनां झांखां पण किरण होय तो सफळ साधन थई पडे छे अने ते आगळ सर्व अन्य साधन नकामां छे. एवा प्रेमसाधनथी जे जीव हरिसन्मुख थयो नथी तेनां साधन नकामां छे अने प्रेमसाधनथी जे हरिसन्मुख थयो छे तेना "मनाजी सुबेदार" ने फेरववाने हरिना नामरूपी रूक्को तैयार छे तो मात्र नामसरणनी भूमिकाथी पण उपरनां सर्व पगथीयां च्हडी गयेली अने प्रेमभक्तिनी सीमाए प्होचेली गोपिकाओना "मनाजी सुबेदार" ने माटे हरिए केवी व्यवस्था करी होवी जोईए ते विशे कविनो भावार्थ न समजाय एवो नथी. अक्षरब्रह्मरूप सदन जेना मध्यबिन्दुमां नित्य कृष्ण रहे छे त्यां तेनो अने सुन्दरीग्रामनो प्रेमभक्तिनो रास नित्य मची र्‌हे छे. ते मध्यबिन्दु व्हारना ए सदनरूप अक्षर-ब्रह्मनी भक्तिमां पण "मनाजी सुबेदार" उपर अने तेना दश उमरावो उपर आटलो अंकुश कवि याचे छे. ते सदनना मध्यबि-न्दुमांना विलासकाळे तो ए सुबेदार अने उमरावोने माटे कांई पण अवकाश कविनी भावनामां होवो संभवे ज नहीं ए स्पष्ट लागे छे. रसोद्बोधकशक्तिना सुगन्धरूप सूक्ष्मनित्यतुलसीथी जेनी दुर्वासनाओ नष्ट थई न होय अने ए ज शक्तिना स्वेदरूप सूक्ष्मनित्ययमुनामां स्नान कर्याथी "पापोऽहं पापकर्माहम्" आदि वाक्यो वडे जे जीवोनो प्रथम स्वभाव बदलायो न होय तेवाओने

ए यमुनापासेनी अने ए तुलसीथी वट थयेला वृन्दावनमांनी सूक्ष्मनित्यकुञ्जगलीओमां रास जोवानो के रमवानो अवकाश कविनी भावनामां होय एवो अर्थ कविना कोई उद्गारोने आपवा पहेलां कंई नही तो कविनो न्याय शुद्ध करवाने माटे आपणे कांईक आचको खावो घटेछे.

४१. भक्तिना संप्रदायमां नव प्रकार कहेला छे अने नवधा भक्तिने शिरःस्थाने पराभक्ति मुकी छे. आ दश प्रकारनुं विवेचन अन्यत्र करीशुं. तरतमां एटलुं जाणवुं बस छे के आ भक्तिनी निसरणिनुं नीचामां नीचुं पगथीयुं दास्यभावनुं छे अने क्रमे क्रमे दासभक्तनो प्रेम वधतो जायछे तेम तेम पगथीआं चडतो जायछे अने प्रभुना प्रेमने आकर्षतो जायछे, अने ए आकर्षण संपूर्ण थतां छेक उपरने पगथीए श्रीकृष्ण अने भक्त एकता पामी विहार करेछे. आ प्रमाणे भक्तनो प्रेम ए ज संप्रदायनुं साधन छे अने ए ज भक्तिनो आत्मा तेम ज स्वरूप छे. परंतु जेम सूर्यना प्रकाशने रात्रिसमये तेम वादळांने समये आवरण होय छे अने दीवाना प्रकाशने पवन वगेरे विक्षेप होय छे तेम भक्तना जीवने पण आवरण अने विक्षेप होय छे. भक्तिनां नीचलां पगथीयां उपर च्हडनारने ए आवरण अने विक्षेप नडे छे अने उपरनां पगथीआं उपर पहोच्या पछी ते प्रेमरसना शुद्ध प्रकाशने अनुभवे छे एवी कवि नी भावनाने समजवानो आपणे प्रयत्न करीशुं.

७ आवरणदोष.

४२. काम अने दाम आदि दोषने विषये कवियें उपर प्रमाणे पोतानां वचन कहेलां छे. ए दोष जाते विक्षेपरूप थाय छे. शु. सि. प्र. ७५. ए सर्व दोषने गुणरूप न गणी, दोषरूप जाणी लेई, तेना उपर अरुचि थाय अने अमुक वस्तु खावानी न गमे तेम विषयना भोग उपर अणगमो थाय त्यारे ते अणगमावाळा मननी स्थितिनुं नाम वैराग्य कहेछे. ज्यां वैराग्य नथी होतुं त्यां

મોહ હોય છે અને મોહ એ જ્ઞાનમાર્ગમાં અને યોગમાં, તેમ ભક્તિમાર્ગમાં પણ મ્હોટું આવરણ ગણાય છે, અને દયારામ તેને વિષયે શું કહેછે તે હવે જોઈશું.

૪૩ જે સત્સંગ ભક્તિને રંગે ચ્હડાવે છે તે સત્સંગ તુંબિકા પેઠે તારે છે. પણ સવિકાર ઉરવાળાને સત્સંગ ફળતો નથી તેમ એવા ઉરવાળાનો સંગ પણ તારી શકતો નથી; કારણ આવા દૃષ્ટાંતોમાંના સંગ તે લીલી તુંબિકા જેવા છે.

" તરે તુંબિકા, આશ્રિત તારેજી, અનુભવ સઉને શાસ્ત્ર પોકારે જી
" પણ જો ઉર હોય રહિત વિકારજી; તરે ન તારે ન લીલી લગારજી.
" લીલી ન તારે તુંબી ત્યમ ન ફળે સમલ જનસંગ,
" ફરી તેનું તે જ કરે સુકાર્ય વિકાર થાતાં ભંગ.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" ઉરગ્રન્થિઓ તે માન્યા ત્યમ સત્સંગ ન ફળે નૃશંસ.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" જિજ્ઞાસુ ઉપદેષ્ટા ઉભય હોય ઉચિત ટળે ભવરોગ,
" જવ દયાપ્રીતમ કૃષ્ણકરુણા, તવ મળે એવો યોગ."

ર. વ. પદ ૭૩.

આ વિષયને વધારે ચર્ચતાં "મનમતિસંવાદ" (૪ બૃ. કા. દો. ૭૭૮–૭૮૨) માં કવિ કહેછે કે,

" જેવી સંગત મન કરે તેવું તે થઈ જાય;
" વિષયી જનનો સંગ તો મન બગડ્યાનું ઠામ,
" સુસંગથી મન શુચિ રહે, ભજન ગમે ઘનશ્યામ"

મ. મ. સં. ૧૧.

વળી **બદ્ધો હિ કો?–યો વિષયાનુરાગી**, એ મણિરત્ન માળાના વાક્યવત્ કહેછે કે,

" વિષયી મન પરવશ અતિ, સદા કશું નહી ભાન,
" માટે મહા અપરાધ એ, ભાવે નહી ભગવાન."

મ. મ. સાં. ૨૩.

विकाररहित विरक्त मन थई जतां जाते ज ज्ञाननो उदय थाय छे, ए वेदान्तवाक्यवत् भक्तिनो उदय थवामां कारणकार्य-संबंध कवि दर्शावे छे के,

" अनायास मन वश रहे, प्रपंच प्रीति जाय "
" प्रेमलक्षणा भक्ति दृढ सद्य श्रीहरिनी थाय."

म. म. सं. ३१

अविरक्तनी मनसा मार खातां पण कटेवने छोडती नथी.

" क्षुधित श्वाननी पेर मनसा फरे रझळती;
" एंठो कडको कंही मळे, खाय कंही कंही मार,
" तदपि टेव तजे नही, ना माने धिक्कार."

म. म. सं. ६.

मननो आवो स्वभाव छे. तेने वश करतां आकुळव्याकुळ थवुं पडे छे, पण ते सऊ करीने पण तेने वश करवानो पुरुषप्रयत्न आवश्यक छे.

" विकळ थाय तो थावा दे, हरि भज राखी धीर;
" विना च्हडाव्ये कामठी क्यम करी वागे तीर ? "

म. म. सं. ९.

ए पुरुषप्रयत्न करतां करतां हरिभजन कर्यां करजे जेथी ए तीर आखरे लक्ष्यस्थाने वागशे; कारण ज्यां धैर्यसहित हरि भजाय छे त्यांथी मोडी व्हेली विषयसत्ता नष्ट थाय छे. जेमके

." सिंह से जे वनमां त्यां क्यम वसे शीयाळ ?"

म. म. सं. २१.

" मनाजी सुबेदार " ने वश करवाने आम हरिनो "रुक्को" लेई जवुं, अने पुरुषप्रयत्नथी तेने वश करवानुं .महाभारत काम अवश्ये साधवुं. भक्तिना मार्गमां अंतराय थयेला एक महाआंवरणने आम भक्तिथी ज भेदवानुं छे.

४४. मनुष्यना जीवन उपर एक आवरण आवा मोहनुं बंधायुं छे तो बीजुं आवरण दुःखनुं बंधायुं छे. मोहनुं आवरण मनुष्यने विषयोना बन्धमां बांधी लेछे अने शत्रुजेवा ए बन्ध उपर तेनी प्रीति करावे छे, तो दुःखनुं आवरण मनुष्यने वृथा भयना अने त्रासना बन्धनमां नांखे छे अने ते बन्धनने ए मनुष्य शत्रुरूप गणेछे त्यारे भक्तने माटे तो दुःख मित्रनुं ज काम करे छे. एटली श्रद्धाथी ते आवरण भेदाय छे ने तेने स्थाने प्रकाश थई जाय छे.

आ प्रकाश केवी रीते थाय छे ?

४५. आंपणामां प्रारब्धादिक त्रिविध कर्म अने तेना परिपाकरूप सुखदुःखमय अने पुण्यपापमय जन्मपरंपरानो संसार मानेलो छे. पाश्चात्य देशमां पूर्व जन्म नथी मनातो अने पाश्चात्य धर्मो मनुष्यना जीवनने आ जीवननां सुखदुःखोथी घडातुं माने छे अने एवा घडाता जीवनने Life of Discipline नुं विशेषण अपाय छे. संप्रदायना कवि बीजा जीवोने माटे त्रिविध कर्मना परिपाकरूप जन्मपरंपराना संसारने माने छे अने भक्तिशुद्ध जीवोने माटे पाश्चात्य धर्मोना जेवी श्रद्धाथी ए जीवोनां जीवनने दुःखथी घडातां मानेछे एटलुं ज नही पण ए दुःखोने ईश्वरनी कृपारूप मानेछे.

४६. प्रभुनी कृपाना पात्र थयेला भक्तोने प्रारब्ध संचितादि कर्म नडतां नथी, पण तेमने पोताना गणी तेमनुं कल्याण करवाने ज प्रभु तेमने दुःख आपे छे ए संबंधे कवि हरिसुखमां वाक्यो मुके छे के,

“ श्रीमुख बोल्या श्रीहरिं, होय जेने अतिशे अनुग्रह म्हारोरे,
“ जेने अंही स्वप्ने पण सुख नही, मूळथी ए म्हारो धारों. रे
“ महाव्याधि तेनुं तन पीडे परदेशे भटकावुं रे,
“ सुह्रदबन्धुविक्षेप करावुं, वीनती न मनमां लावुं रे. ”

४ बृ. का. दो. ८२७ पद. ६२.

ए कष्ट तो प्रभुनी प्राप्ति माटे आवश्यक ज छे.

" महाकष्ट पाम्या विना कृष्ण कोने मळ्या?
" चारे युगना जुवो साधु शोधी !
" व्हाल वैष्णव विषे विरलाने होय बहु;
" पीडनारा ज भक्तिविरोधी."

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" जगत-जननी जानकी दुःख दुस्तर सह्युं,
" पापवण ताप, जेने जगत वन्दे.
" संचित, क्रियमाण, प्रारब्ध जेने नथी
" तेने त्रय ताप आवी नडे छे.
" अकल गत ईशहेतु न समज्युं पडे,
" प्रबळ इच्छा सउ ते पडे छे.
" छे कथनमात्र ए पुण्यने पाप बे,
" नचाव्युं नंदकुंवरनुं जगत नाचे,
" दयाप्रीतमरुचि विना पत्र हाले नहीं,
" पण न भागे भ्रमण मन काचे."

४ बृ. का. दो. ८३३–३ पद. ५८.

४७. रावणनां पापकर्म ते पण भक्त जयविजयने पाछुं वैकुण्ठ पामवानो मार्ग हतो अने सीतानां दुःख ते पण ते ज मार्ग हतो. एवी वातोने उद्देशीने पुण्यपापने "कथनमात्र" कविए गणेलां समजाय छे. आ न्याये भक्तोनां पुण्यपाप पण हरिनी इच्छाने ज वश छे तेम दुःख पण तेनी इच्छाने ज वश छे; पण मात्र काचा मनना मानवीने ए अकळ कळामां श्रद्धा नथी बेसती. बाकी सत्य श्रद्धाथी जोनारने तो कवि उपल्या ज पदमां कहेछे के "प्रथम पीडा, पछी सुखनी वृष्टि." ए ज प्रभुए भक्तोने माटे सृष्टि रचेली छे एम श्रद्धा राखी, प्रभु आपे ते बडबड्या वगर, तेनो प्रसाद गणी,

स्वीकारवुं; कारण एक पासथी आ वातोमां प्रभु भक्तनी विनति मनमां आंणता नथी (जुवो उपरनो उतारो पद ६२ मांथी,) तो बीजी पासथी कवि कहेछे के,

" वीनती विना निज जनना रक्षक सदा छे व्रजराय रे,

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" पोतानी मेळे ज भक्तनी भींड भांगवा जाय रे.
" विज्ञप्तिनी वाट जुवे नही भक्तभलुं करे मनथी रे,
" **सचेत पक्ष्म जेम अचेत लोचन**, तेम हरि सावध मनथी रे.
" सउ करवा समरथ श्रीजी पण निजजन अहित न थाय रे,
" जन अज्ञान न हारद समजे, माटे अवगुण गाय रे.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" जेम बने तेम समरो श्रीजी, दया दोष ना धरशो रे,
" राधावर सउ रुडुं करशे, **सहज शरणथी** तरशो रे"

४ बृ. का. दो. ८३३–४. पद ६९.

४८. अचेतन आंखनां पोपचां अने पांपणोमां चेतन होय अने आंखनुं रक्षण करवानो प्रसंग समजीने ज आंख भणी कोइनी झापट आवतां झट मींचाई जायछे ने आंखने बचावी लेछे एवी ज रीते भक्तने बचावी लेवानो प्रभुनो स्वभाव छे. आथी पोतानी न्यून बुद्धिमां जे सारुंखोटुं लागे ते प्रमाणे प्रभु पासे न मागतां भक्तजने ए· प्रभुनी बुद्धिमां अने स्वभावमां श्रद्धा राखी ते करवा देवामां ज कल्याण छे, अने ते करे ते तेना प्रसाद गणी, स्वीकारवुं ते ज "सहज शरण" छे. जे भक्तनो स्वभाव तेने प्रभुना शरण-मार्गमां आम सहज स्वभावथी दोरेछे तेनुं प्रभु कल्याण करेछे. दुःखनुं आवरण भक्तने माथे प्रभु नांखेछे ते आवरण नीचेना अंधकारमां पडेला हृदयनो स्वभाव ज्यारे आवा सहज शरणनी वृत्तिमय थायछे त्यारे ते स्वभावने बदले आवरण भेदायछे अने सांसारिक

सुखने ठेकाणे श्रेयःप्रकाशने ए स्वभाव अनुभवेछे. ईंग्रेजी, Resignation to God नो अर्थ पण कंइक आना जेवो ज छे.

४९. आ प्रमाणे सर्व जीवोने शिरे मोह अने दुःखनां आवरण बंधायछे, तेमांथी भक्त जीवो मोहना आवरणने पराक्रमथी दूर करेछे अने दुःखना आवरणमां प्रभुने शरण थई दूर करेछे. अने ए बे क्रियाथी मोहने स्थाने वैराग्य अने दुःखने स्थाने कल्याण प्रकट थतां भक्तजीव प्रेमप्रकाशनो अधिकारी थायछे अने ते पछी तो तेने विक्षेप नडे नही एटलुं ज मात्र बाकी रहेछे.

८ विक्षेपदोष.

५०. योगशास्त्रमां जे जे पदार्थ मनने चंचळ करी योगाभ्यासमां अंतरायरूप थाय अर्थात् इष्टवस्तुना ध्यानमां मन ग्रस्त थाय त्यारे तेने आमतेम भमावे तेवा पदार्थोने विक्षेपरूप गण्या छे. वेदान्तमां अज्ञाननुं आवरण दूर थवा छतां फरी फरी ते आवरण भणी मनने वाळनार, खेंचनार पदार्थोमां विक्षेपशक्ति गणी छे. सर्व भक्तिमार्गोमां आवा विक्षेपोना उपरांत इष्ट देवने छोडी अन्य देवो उपर अने अन्य धर्मो उपर दृष्टि सरखी थाय तो तेथी इष्ट देव भणीथी मन विक्षिप्त थाय एवुं गणी, ए विक्षेपोनो प्रतीकार करवा माटे अन्य देवोनी गमे तो निन्दा करवामां आवे छे अने गमे तो तेमने उतारी पाडवामां आवे छे अने अन्य धर्मोने तो निन्दवामां ज आवे छे. सुज्ञ अधिकारीओ आवा प्रासंगिक बोधने अर्थवाद गणी अन्य धर्मोनी अने अन्य देवोनी निन्दा करता अटके छे अने पोताना धर्म उपर अने देव उपर पोतानी वृत्ति अविक्षिप्त अने स्थिर कराववानी इच्छा विना पोताना उपदेशकोनो बीजो हेतु एमना अर्थवादमां नथी एवुं समजी तेटलो हेतु पार पाडवा उपरांत बीजी प्रवृत्तिमां पडता नथी. 'स्वधर्मे निधनं

श्रेयः परधर्मो भयावहः' ए गीतावाक्य आ ज हेतुने उद्देशे छे. परधर्म भणी बुद्धिने दोडावनारनुं मन विक्षेप पामे छे माटे ज ए भयंकर छे, अने स्वधर्म भणी वृत्ति स्थिर करवाथी कल्याण छे माटे.एवी स्थिरता प्राप्त थतां सुधी **देहं पातयामि** वा **अर्थं साधयामि** एवो विधि अने निश्चय पाळीने वृत्ति स्थिर राखवी, एवो उक्त उपदेशनो उद्देश छे.

६१. आ देशव्हारना धर्मोमां प्रायशः एवो आग्रह होयछे के पोताना धर्मनुं रक्षण करवुं एटलुं ज नहीं पण धर्म व्हारनां मनुष्योमां ते प्रसारवो अने बीजा धर्मोनो उच्छेद करवो. आवा आग्रहने बळे प्रजाओमां विग्रह थयाछे अने स्वधर्मने प्रिय गणनार अनाथ वर्गोने शिरे अनेकधा दुःख अने त्रास पडेलां छे एवुं जगत्‌ना इतिहासमां सुविदित छे. आपणा लोकना धर्मप्रवर्तको आ अनिष्ट परिणामना निमित्त थया नथी तेनुं कारण ए के वादविवादथी लोकसंघनी बुद्धिओ उपर असर करवा उपरांत विशेष आग्रह न धरतां स्वमार्गी प्रजाने स्वधर्मनुं रक्षण करतां शीखववामां आग्रही रहेला छे. स्वमतमंडन अने परमतखंडनमां आ देशमां आवी स्वाभाविक अने निर्दोष मर्यादाओ रही छे. तेनुं उल्लंघन करनार नहीं होय एम कहेवानो प्रसंग नथी, परंतु आवां खंडनमंडन परमार्गीओने उद्देशीने थाय ते मात्र तेमनी बुद्धिद्वारा ज करवाना उद्देशथी थायछे, अने स्वमार्गीओने उद्देशीने थाय त्यारे तेमनी बुद्धिओने तेम वृत्तिओने उभयने स्थिर करवाना उद्देशथी थाय छे. ' स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' ए वाक्य एकला कोई अमुक मार्गीओने उद्देशीने कहेलुं नथी पण सर्व मार्गना अनुयायीओने संबोधनरूपे छे. तेमां तो सर्व व्यक्तिओए पोतपोताना मार्गमां पोतानी बुद्धि अने वृत्ति स्थिर राखवाना योगनो बोध करेलो समजायछे. "यथा नदीनदाः

सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् । सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति" ॥ एम सर्व देवने थयेला नमस्कार पोताने ज प्होंचेछे एवा बोधना करनार केशवना मुखमां तो सर्व धर्मोनुं रक्षण ज शोभे, अने " जे धर्म पालता हो ते पाळजो अने तेम करवामां बुद्धि अने वृत्ति छिन्नभिन्न अने दोलायमान न करतां स्थिर राखजो, कारण तेम न करवामां ज भयछे, " एवो ज उद्देश उपरना गीतावाक्यमां समजवो योग्यछे. आपणे कांई गीताना अर्थ करवानो अत्र प्रसंग नथी पण उपरनुं प्रकरण समजवाथी आपणा कविनां कईक मर्मस्थान समजवानो प्रसंग छे तेथी आटलुं ध्यानमां राखवा योग्य छे.

५२. दयाराम कविना समयमां अनेक मार्गो अने कविओ एटलाबधा हता के सामान्य मनुष्यनां मन विक्षेप न पामे तो ज नवाई जेवुं गणाय, ते म्हें अन्य स्थाने दिग्दर्शनथी जणाव्युं छे.*वेदान्ती अने योगी कविओ, तेम शैव शाक्त वगेरे पन्यना कवियो अने बोधको वच्चे आ समयनुं गुजरात दोलायमान थायछे, तेमां उभेलो वैष्णव कवि हींदोलाने स्थिर राखवा प्रयत्न करे ते जेवुं स्वाभाविक छे तेवुं ज ए प्रयत्नदृष्टिबिन्दु जोवो योग्य छे.

५३. जगन्नियन्ता ईश्वरनुं स्वरूप कवि केवा प्रकारनुं मानता हता ते आपणे जोयुंछे अने अन्यमतोनुं अने मुख्यकरीने वेदांतनुं खंडन करवा तेमणे रसिकवल्लभमां अनेकधा प्रयत्न कर्यो छे, अने तेनां लगभग शीत्तेर पानां तेमां रोकायां छे. एक वात समजाय एवी छे के वेदान्तना सिद्धान्तो सामान्य मनुष्योने माटे नथी पण समर्थ विद्वानोने माटे छे अने संप्रदायनो मार्ग सा-

---

* शेठ पुरुषोत्तम विश्रामनी पुरुषोत्तमसाहित्यमाला, अंक ४ परिशिष्ट २७, २८. ए शेठने पत्र लख्याथी ए पुस्तक मलशे. म्हारुं Classical poets of Gujarat pp. 61-63.

मान्य जनसमूहथी समजाय एवो छे. ब्रह्मवेत्ता थया विना अद्वैतसिद्धि पामवी अशक्य छे पण प्रेमभक्तिनो अनुभव साधनहीन स्त्रीओ अने बालको पण शक्तिअनुसार करी शके एम छे. तेमना कानमां अद्वैतनी अगम्य कथाओ रेडयां करे तो तेमनाथी तेनो अंश पण न समजाय अने भक्तिमार्गना सरल पण देखीता विरोधी सिद्धान्तो उपर तेओ शंकाशील थाय अने आ सत्य के आ सत्य ए विचार करवानी शक्तिने अभावे तेमने कांई पण निर्णय उपर न आणतां, केवल विक्षिप्त अने अतोभ्रष्ट ततोभ्रष्ट करे ए विना बीजुं परिणाम आववानुं नही. दयाराम पोते वेदान्त समजवा जेटला विद्वान हता के नही ते समजवानुं एवुं साधन नथी पण तेमनी बुद्धि एवी हती के तेमणे धार्युं होत तो ते पन्थे पण जोइ शकत. परंतु अखोभक्त कहेछे के " ज्ञानीने कविमां न गणीश " तेम दयारामने पुछ्युं हत तो उत्तर आपत के " रसिकने ज्ञानी न गणीश. " संप्रदाय मार्गनुं ज्ञान पण जेने तत्वनुं " ठुंपणुं " अने " तुच्छ " लागेछे एवा आ प्रेमभक्त रसिकने वळी बीजा संप्रदायनुं ज्ञान जोवुं क्यांथी गमवानुं हतुं ? नरसिंह म्हेतो ज्यारे ज्ञानी, भक्त अने कवि त्रणे पदने पात्र होइ " ज्यां लगी आत्मनुं तत्त्व चीन्युं नही त्यां लगी साधना सर्व जुठी " एवो ज्ञानोत्कर्ष गायछे त्यारे दयारामने ज्ञानमात्रमां ठुंपणुं लागे छे अने भक्ति जेवा अचल रत्नप्रदीपने मुकी ज्ञान जेवा दीवा उपर आधार राखवामां मूर्खता ज लागे छे. आवा रसिक कवि वेदान्तनुं खंडन करवामां वेदान्तीओने गालो दे, वेदान्तनो पूर्वपक्ष करनार शिष्यनुं टोल करी तेने बनावे, अने मारी मचरडी माता बालकने समजावी फोसलावी घरब्हार न्हासतुं अटकावी घरमां आणे तेम कवि पोताना श्रोताओने अने वाचकोने विक्षेपनी आगमां झंपलाइ पडता अ-

टकाववाने जे प्रयत्नो करे ते सर्व चित्र आ प्रेमाळ कविना हृदय-ने योग्य ज छे.

५४. कवि ज्यारे बुद्धिने विक्षेपमांथी बचाववा आवा प्रयत्न करेछे त्यारे पोताना जेवा ज प्रेमथी अन्य देवो उपर प्रेम राखनार वर्गने माथे कवि कांइक समभाव अने अनुकम्पा राखे छे अने ते वर्ग उपर अने तेमना इष्टदेवो उपर हृदयवेधक प्रहार करतां कंइक जुदी ज कला अजमावेछे. ए वर्गने कवि कहेछे के अमारा तमारा देव कांई जुदा नथी. अमारा देव तमारा देवमां पण छे माटे तमारा देवने पण हुं नमस्कार करीश बाकी तमारे अनुभवी जोवुं होय तो जो जो के अमारा देवमां वधारे रस पडे छे के तमारामां ? जे देवना जे अंश होय ते देव उपर तेने प्रीति थायछे माटे तमे बीजा देवना अंश हशो तो तमने ते उपर प्रीति थशे अने अमे रसरूप देवना अंश छीये तेने ते देवविना बीजे स्थाने संतोष मळे एम नथी. सउ पोतपोताना इष्ट देवने सेवे ते कांई " बोध "थी सेवता नथी पण पोतपोताना अंशांशीभावना स्वभावथी पोताना देवने ओळखी लेछे.

" जे अंश जेना होय ते तेने भजे श्रुति ख्यात
" जेनुं तेने ते मळे तव थाय चित्तनिरोध ।
" ज्यम दयाप्रीतम कृष्ण सेवे भगवदी वण बोध.

र. व. पद २३ । ७. ८.

" वच्छ कदा महिषी नव धावेजी, धेनु धाववा महिषी न आवेजी.
" गुण अवगुणनुं कश्युं न कामजी, चित्त तेनुं त्यां ज विरामेजी.
" भुलुं पडीयुं बालक रोयजी, मुख अधमोत्तम सउनां जोयजी
" तदपि न भटकण भागे मननीजी, सद्य शांतता मळतां जननीजी,
" ज्यम जननी मळतां जप तत्क्षण अवर रहे नही आश.

"पछी बोध तेने न करवो, पाम्या पूर्ण अभिलाष."

(र. व. पद २४)

आ विषयनी सामान्य चर्चा सरस्वतीचंद्र भाग. ४, पृष्ठ २७०, २८०–८१, मां करेली छे.

५५. आवी रीते जे देव उपर पोतानो स्वभाव वळे तेने इष्ट गणी तेनी भक्ति करतां अन्य देवोनुं अनुसंधान करवुं ते विक्षेपरूप छे, माटे तेवो विक्षेप न पामतां इष्टदेवनो ज सतत सन्धि करवो तेने कवि "टेकनी भक्ति," "अनन्याश्रय" वगेरे नामोथी ओळखे छे.

"सघळे सरखी प्रीत न सारीजी, टेकनी भक्ति प्रभु अति प्यारीजी;
"अळगा अन्याश्रित भगवंतजी, व्यभिचारिणीथी प्रेम न कांतजी.
"पतिव्रता उत्तम जो होयजी, पति पुरुषोत्तम त्यां चित्त प्रोयजी.
"वण समजे अन्याश्रय जनमां जी, ते पण खटके हरिना मनमांजी.
"मन खटके ज्यम रज नेत्रमां, वण नीकळे नही चेन,
"त्यम अन्याश्रय वण छोडवे, नही जंप पंकजनेन."

(र. व. पद. २२.)

५६. आ छेली त्रण पंक्तिओमां अन्याश्रित जनथी प्रभुने जंप वळतो नथी ए उद्गार अने ख्रीस्ती धर्मग्रन्थोमां ईश्वरमुखे "I am a jealous god" एवो उद्गार कर्यो छे ते बे उद्गारो वच्चेना कंइक अंश मळता छे, पण पूर्वपाश्चात्य धर्मोमां अन्य देवो प्रतिनी दृष्टिमां जे म्होटो फेर आपणे जोइ गया छीए ते तो उद्गारो वच्चे पण छे.

५७. संप्रदायमां ईश्वरनी अने भक्तनी परस्पर प्रीतिनी सततता कहेली छे, पण अन्याश्रयप्रसंगे भक्तनी दृष्टि प्रभु भणीथी विक्षिप्त थाय तेटलो समय तेनी भक्तिनी ज्वाला होलाय एटले प्रभुनी प्रीति तेना भणी आकर्षावी जोइए ते कारणाभावे आकर्षाती बंध पडे छे, एटलो अर्थ आपणा कविनी उक्त पंक्तियोमां समायलो छे.

५८. बुद्धिनो विक्षेप अटकाववाने कवि अन्य मतोनुं खंडन करे छे अने स्वभावनो अने प्रीतिनो विक्षेप अटकाववानें अनन्याश्रयनो पन्थ दर्शावे छे. आवरणथी अने विक्षेपथी मुक्त भक्त जीवोनी दृष्टि प्रभु साथे केवा प्रेमप्रकाशथी संधाय छे ते हवे जोइशुं.

९. नवधा भक्ति.

५९. केवळ संप्रदायमां नही पण संप्रदायना मूल आचार्यना जन्म प्हेलां नरसिंह म्हेताए पण भक्तिना दश प्रकार गणेलां छे. तेमां प्रथम नव प्रकार नवधा भक्तिने नामे ओळखाय छे अने दशमो प्रकार पराभक्तिने नामे ओळखाय छे. आ दश प्रकारनां नाम कवि तेमनी महत्ताना क्रमप्रमाणे गोठवी गणे छे तेः–१ श्रवण, २ कीर्तन, ३ स्मरण, ४ पादसेवन, ५ अर्चन, ६ वंदन, ७ दासत्व, ८ सख्य, ९ आत्मनिवेदन, अने १० प्रेमभक्ति, जेने उपर पराभक्ति कही छे. (र. व. पद ५७). एमांना नव प्रकार साध्य थता सुधी आवरणविक्षेपनुं भय छे अने दशमा प्रकारमां कोइ जातनुं भय न होतां केवळ अभय छे. श्रवण एटले हरिना नामनुं श्रवण कर्या करवुं ए प्रथम पगथीयुं एटला माटे छे के मनुष्यमात्रनां मन संकल्पविकल्पात्मक छे अने इन्द्रियोद्वारा तेम पोताना चर्वितचर्वणथी ए मन संवृत थाय छे, तेने श्रवणेन्द्रियद्वारा हरिनामरूप पोषण मळे तो तेना संकल्पविकल्प हरिमय थवा लागे. संकल्पविकल्पोनुं स्वरूप आम बदलातां ए मनवाळो जीव हरिकथाना उद्गार करवा मांडेछे एटले हरिकीर्तन करे छे अने भक्तिने बीजे पगथीए च्हडे छे. एम करतां करतां ए जीवनुं मुख चालतुं न होय तोपण मन हरिस्मरण कर्या करे छे ते त्रीजुं पगथीयुं. आ सर्व श्रवण, कीर्तन अने स्मरण भक्तिभावे थाय के न थाय तोपण फळ आपे छे एवुं कवि कहे छे ने दृष्टांत बतावे छे

के कंसे भयथी, शिशुपाळे द्वेषथी, कुब्जाए प्रीतिभावथी आ त्रण वानां आदर्थां ते सर्वने श्रीकृष्णे सद्गति आपी (र. व. पद ६०) आ वचन देखीतुं समजाय एम नथी ते मानसशास्त्रनी एक वार्ताथी समजाशे. एक पाश्चात्य पुरुषने कोइ स्वजातीय स्त्री उपर प्रीति थइ, पण स्त्रीने तेना उपर प्रीति न हती अने ए पुरुषे तेनो केडो न छोडतां स्त्रीए तेने आज्ञा करी के त्हारे मने मुख देखाडवुं नही अने मने बोलाववी नही. पुरुषे ते आज्ञा पाळवानी हा कही पण एटलुं मागी लीधुं के "नित्य प्रातःकाळे तुं निद्रावश होय ने त्हारी दासीओ प्रत्यक्ष होय ते प्रसंगे हुं त्हारा कानमां कोइ न सांभळे एम बे बोल कही जउं एटली रजा आप." आ पुरुष उपर एने दया आवतां स्त्रीए आटली रजा आपी अने ए स्त्री निद्रामांथी जागे ते प्हेलां एना कानमां पोतानुं नाम अने कांइक प्रीतिनां वचन कही जवानो ए पुरुषे अभ्यास राख्यो. काळक्रमे ते स्त्रीने ए पुरुषनां स्वप्न आववा लाग्यां, स्वप्ननी वार्ताओ एना मनमां जागती अवस्थामां पण भरावा लागी अने ए स्त्री पोताने प्रथम न गमता पुरुष उपर प्रीति राखवा लागी अने अंते एने परणी इंग्रेजी मनःशास्त्रीओ आवा बनावोने Laws of Association नामना नियमोथी सांकळी ले छे अने आपणा प्राचीन विद्वानो ए नियमोने संस्कारबळना नामथी सारीरीते ओळखे छे. "**मरणे या मतिः सा गतिः**"ए आपणां शास्त्रो तेम दयाराम माने छे अने मरणवेळाना संस्कारोनुं बळ मरनारने ते संस्कारना कारणभूत स्थानमां लावे छे, अने तेथी ज वैरभावे पण हरिस्मरणमां आसक्त थयेलुं मन मरनार देहमांना जीवने उक्त दृष्टांतनी स्त्रीनी पेठे अणगमता हरिमां सद्गत करेछे. गतिअगति मानवी के न मानवी ए महाप्रश्ननो अत्र प्रसंग नथी, पण सद्गतिदुर्गति सत्य माननार कवि केवा कारणकार्यभावने आलखीने भक्तिनां उक्त त्रण पगथीयांनुं उक्त फळ माने छे ते समजवुं उपर प्रमाणे

सुगम छे. "आसक्ति राखी श्रवण कर" (र. व. पद. ५७. ३), "अणुमात्र अंतर उतरे" (र. व. पद. ५८; ५) इत्यादि वाक्योना उद्गार कवि आ संबंधमां करे छे ते तेना मनमां आवा संस्कारबळना नियमनुं भान कोइ रीते होवानुं सूचवे छे.

६०. कृष्णना चरणसेवननी भावनानुं कवि वर्णन करे छे के,

"कृष्णचरणमां मन एकवारजी, जो दीधुं मध्ये अवतारजी
"तो स्वप्ने यमदूत न जोयजी, प्रकट पेखवा क्यांथी होयजी ?
"सदा करे चिन्तन प्रभु केरूंजी, ते जन दामोदरनुं देहरूंजी.
"सह सदा श्रीजीमां मनजी, सकळ सफल पूर्ण साधनजी".

(र. व. पद. ६३.)

श्रवण, कीर्तन अने स्मरणथी हरिसंस्कारो मनमां आवजाव करवा लागे त्यां मन कृष्णचरणनुं सेवन करवा लागे, अर्थात् दीन-भावे, दासभावे जगन्नियंताना पासे नम्र वृत्ति करी पोताने तेना चरण आगळ तेने शरण थयेलो अनुभवे ते कृष्णचरणनुं सेवन छे. जे आवुं सेवन करे तेना हृदयमां प्रभु सतत वास करवा लागे छे अने प्रभुनुं ते मन्दिर बने छे अने त्यां आवताजता सर्व संस्कारो ए मंदिरमां बेठेली मानसी प्रतिमानां ज दर्शन करे छे.

६१. आ मानसी सेवा मुख्य छे, पण ते "व्यसन उपज्ये थाय." (र. व. पद ६३; ७). प्रथम त्रण पगथीयामां आसक्ति बळ करती हती तेमां हवे व्यसन उमेरावा मांडे छे. आ व्यसनकाळे भक्त दास्यभावे पण अभिलाष राखतां शीखे छे अने ते अभिला-षनुं वर्णन कवि आपे छे के,

"सर्वात्मभाव प्रभु सुखी क्यम् थाय ए अभिलाष,
"सेवानुं फळ सेवा इच्छे, सुख अवर नहीं आश.
"मन लोक वेदनी लाज नहीं, एक कृष्ण पीयुशुं प्रेम,
"पतिनी प्रसन्नता साधवी, अचलित ए उर नेम.

(र. व. पद. ६३; ५, ६.)

"सर्वात्मभाव" एटले सर्वमां आत्मभावे व्यापक प्रभु कीये मार्गे सुखी थशे–प्रभु सुखी तो छे ज पण कीये मार्गे प्रसन्न थशे-ए विचार, निष्काम सेवानी इच्छा, ए सेवाने अर्थ लोकादिकनी लज्जानो त्याग, अने कृष्णपीयु उपर प्रेमः ए चार पदार्थ आ व्यसनावस्था पछी उद्भव पामेछे. जगत्ने प्रभुनुं स्वरूप अने आत्मा माननार सांप्रदायिक भक्त ए जगत्मां वसनार प्रभुनी सेवा केवी-रीते थाय ए विचारने अन्ते एवा सिद्धान्त उपर आवे छे अने प्रभुनुं जे अर्चन करे छे तेनी व्याख्या कवि आपेछे के,

"दया प्रभुमय जगत्, सउसंतोष अर्चन जाण."

(र. व. पद. ६३;८).

"हरिनुं पूजन सउसंतोषजी, ते महासेवा वैष्णवतोषजी".

(र. व. पद ६४).

येन केनाप्युपायेन यस्य कस्यापि देहिनः ।
संतोषं जनयेत्प्राज्ञस्तदेवेश्वरपूजनम् ॥

वसिष्ठोपदिष्ट व्याख्या प्रमाणे **कोइपण देहीने संतोष आपवो ते ज हरिपूजन छे** एवुं कही कवि वंदन अने नमननी व्याख्या आपे छे. हरि, श्रीगुरु, अने संत ए त्रण जण समान छे तेमने नमन करवुं; अर्थात् संतोष सउने आपवामां हरिपूजन छे, पण हृदय भक्तिथी नम्र थाय ते तो आ त्रण आगळ ज. ते पछी दास्य अने सख्यनी व्याख्याओ (र. व. पद ६४) छे, पण तेमां बाकीना प्रकार जेवी स्फुटता अने विस्तार कविए आप्यां नथी. मात्र कविना अर्थनुं अन्वयथी अनुमान करीये तो एम समजी शकाय के श्रवण, कीर्तन अने स्मरण ए त्रणमां जेवी आसक्ति बळरूप छे अने पादसेवन अने अर्चनमां व्यसन बळरूप छे, ते ज न्याये ते पछीना चार भक्तिप्रकारमां एटले वंदन, दासत्व, सख्य, अने आत्मनिवेदनमां प्रेम बळरूप छे. कारण कवि कहे छे के,

"ते प्रभु उपर आवे आसक्ति, पछी व्यसनावस्था थाय,

"તે ઉપર તન્મયતા ખરી, વળતી ન કંઈ કહેવાય.
"પ્રેમની અવસ્થા ચાર છે, આસક્તિ ત્રણ વિવેક,
"છે વ્યસનની બે અવસ્થા, તન્મયતાની એક"

(ર. વ. પદ ૫૭; ૬-૭.)

૬૨. કામશાસ્ત્રાદિકમાં સ્ત્રીપુરુષના પ્રેમને ઉદ્દેશી દશ અવસ્થાઓ કહી છે તે જ શાસ્ત્રની પરિભાષાને સ્વીકારી, આસક્તિની ત્રણ, તે પછી વ્યસનની બે, પ્રેમની ચાર, અને તન્મયતાની એક; એમ બધી મળી ભક્તહૃદયની આ દશ અવસ્થાઓ કવિ ગણાવે છે અને તે જ પરિભાષામાં તેનાં "પ્રકટ નામ" આપે છે, અને તેના આસક્તિ, વ્યસન, પ્રેમ, અને તન્મયતા એ ચાર વર્ગમાંથી ત્રણની વ્યાખ્યાઓ આપે છે કે,

"જળસ્વાતિ- ચાતક પ્રેમ છે, આસક્તિ ચંદ્ર ચકોર,
"છે વ્યસન વારિ-મત્સ, ત્રણ ઉદાહરણનાં ઠોર".

(ર. વ. પદ ૬૮; ૪.)

ચંદ્રને જોઈ ચકોર તેના ભણી ઉડ્યો જાય છે એ અવસ્થા તે આસક્તિની છે. પાણીવ્હાર નીકળતાં મત્સ્ય જીવતું નથી એ અવસ્થા વ્યસનની છે. સ્વાતિ નક્ષત્રમાં મેઘમાંથી વૃષ્ટિના બે ચાર બિન્દુના પાનથી જીવનસંતોષ માનવો તે પ્રેમની અવસ્થા છે. આસક્તિના ત્રણ પ્રકાર છે. તેમાંથી પ્રથમ અવસ્થા વ્યાધિ છે, બીજી પ્રલાપ, અને ત્રીજી ઉન્મત્ત આલાપ છે, (ર. વ. પદ ૫૮; ૧.); અર્થાત્ ભક્તહૃદય શ્રવણકાળે વ્યાધિગ્રસ્ત જેવું આતુર થાય છે, કીર્તનકાળે ગમે તેવો પ્રલાપ કરે છે, અને સ્મરણકાળે ઉન્મત્ત બની આલાપ કર્યાં કરે છે. **પ્રકર્ષેણ લાપ. પ્રલાપઃ** અને **ઈષત્ લાપઃ આલાપઃ** એમ સમજીયે તો કીર્તનનો પ્રલાપ મ્હોટે સ્વરે અને સ્મરણનો આલાપ સ્મરણાર્થ નમ્ર સ્વરે—ધીમે ધીમે—થાય છે. તે પછી વ્યસનની બે અવસ્થાઓ, એક જડતા અને બીજી મૂર્છના છે. (ર. વ. પદ ૫૮; ૨). તેમાંની જડતા પાદસેવનભક્તિમાં અને

मूर्छना अर्चनमा थाय छे एम समजाय छे. ते पछी प्रेमनी चार अवस्थाओ १. दृग्रुचि, २. स्मृति, ३. अभिलाष अने ४. उद्वेग कही छे. (र. व. पद ५८; १). ए चार प्रेमावस्थाओ वन्दन, दास्य, सख्य, अने आत्मनिवेदनमां छे, पण तेनो क्रम स्पष्ट नथी. पण प्रथम अभिलाष थाय, तेमांथी तज्जन्य उद्वेग थाय, तेना परिणामरूपे प्रभुरूपनुं स्मरण उदय पामे, अने तेमांथी ए रूप दृष्टिगोचर थवा पामे, ए क्रमने स्वाभाविक गणीये तो वन्दनकाळे अभिलाष, दास्यकाळे उद्वेग, सख्यकाळे स्मरण, अने आत्मनिवेदन काळे दृग्रुचि एवी रीते ए चार भक्तिप्रकारमां चार प्रेमावस्थाओनो क्रम आवे. छेक व्यसनावस्थामां पण अभिलाषनुं बीज होय छे (पृष्ठ ७०.) ए उपर दृष्टि करीये तो आ क्रम बेसतो आवे छे.

६३. ए अभिलाषनी बीजावस्थामां उक्त प्रकारे लोकलाज छोडी भक्त–जाते पुरुष हो के स्त्री हो पण–पोताना हृदयमां स्त्रीनी अवस्था पामवा मांडे छे, "एक कृष्णपीयुशुं प्रेम" धरवा लागे छे, अने "पतिनी प्रसन्नता साधवा" नो अचल नियम आरंभे छे, (खंड ६१ पृष्ठ ७९), अने बीजदशामांथी उगेलो फालेलो वृक्ष, आत्मनिवेदन एटले प्रभुने आत्मार्पण करवा मांडे छे, त्यां तेनी कुसुमसमृद्धिने कवि वर्णवे छे के,

"आत्मनिवेदन जेणे कीधुंजी, पद परमानंद जीती लीधुंजी,
"चिंता सघळी प्रलय पामीजी, **पति** पूर्णानंद शिरपर स्वामीजी;
"सर्वात्मभावे **पीयुटेलजी,** विधिनिषेधनी छुटी गेलजी,
"सहज **पति**शुं प्रकट्यो प्रेमजी, शांति पामे सर्वे नेमजी"

(र. व. पद ६५; १, २).

जेने एककाळे विष्णुवामन बिन्दु जेवा भासता हता तेने विष्णुनुं सर्वव्यापी रूप प्रत्यक्ष थतां वामनावतारनो चरण पोताना

शिर उपर मागी लइ ते चांपे तेम चंपाई जई ए रूपने आत्म-निवेदन करी बलिराजाए पाताळनुं राज्य प्रभुनो प्रसाद गणी स्वीकार्युं, एटले बलिना आत्मानुं प्रभुने निवेदन-नैवेद्य-थयुं. वन्दन-भक्तिनी दशामां नम्र थयेलुं हृदय आम अंते प्रभुना चरणथी चंपाई जाय ए नवधाभक्तिनुं उपलामां उपलुं पगथीयुं भक्तने प्राप्त थाय छे. प्रेमावस्थाना आरंभमां कृष्णपतिरूप पीयु उपर प्रेम धरवा लागेलुं भक्तहृदय हवे ज्यां ज्यां हरिना अवयवरूप जे जे भूतोमां संचरे छे त्यां ट्हेलीया ब्राह्मण पेठे ए पीयुनी ज ट्हेल नांख्यां करे छे, जे भूतने देखे छे तेमां वसेला प्रभुरूप पतिने ए भूतना अंतर्भागमांथी पोतानी पासे प्रकट थवा बोलावे छे 'अने सर्वत्र आवी दृग्रुचिने अनुभवे छे.

६४. एक भाषाकवि एक माशुक पासे गवरावे छे के "मेरे शाहझादे आलमकुं लीये मै तो जंगलसें जंगल भटकुं," तेम आ संसारने जंगलरूप गणती छतां ते ज जंगलना झाडोमां अने पांदडाओमां पुरुषभक्तरूप स्त्री ते सर्वमां रहेला परम पतिनी ट्हेल आम नांख्यां करे छे. ए प्रभुनो सर्वात्मभाव दर्शावनार बीजुं दृष्टांत पुराण शुकमुनिनुं आपे छे के–

> यं प्रव्रजन्तमनुपेतमुपेतकृत्यम्
> द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
> पुत्रेति तन्मयतया तरवो निनेदुः
> तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोस्मि ॥

६५. जेम वेदान्त कहे छे के **निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतां को विधिः को निषेधः?** तेम ज आत्मनिवेदननी स्थितिए प्होचेला आवा भक्तना विषयमां कवि कहे छे के आवा ट्हेलीयाने तो "विधिनिषेधनी छुटी गेलजी"; अर्थात् आ अवस्थाने प्होचता प्हेलानां भक्तमात्रने विधिनिषेधनां बन्धन होय छे ते आ दशा आवतां गेल जेवां थई छुटी पडे छे. इंग्रेज कवि शेलीना प्रेमी-

थीयसनां बन्धन पण आम ज छुटी जायछे अने ते जेम तेनी प्रेममूर्ति "एंशिया" मां तन्मय थाय छे तेम आ भक्त हवे पोतानी प्रेममूर्ति कृष्णमां तन्मय थाय छे अने कवि कहे छे के एने हवे तो दशमी प्रेमभक्ति "सहज पतिशुं प्रकट्यो प्रेमजी, शांत पामे सर्व नेमजी" (र. व. पद १५; २), अर्थात् प्रेमनी शिखरदशा प्राप्त थई अने नवधा भक्तिना प्रेमनां उन्मन्थनने स्थाने भक्तनी **पराशान्ति** प्राप्त थई छे.

६६. दयारामने जेम वर्गीकरणनी शुद्धता उपर दृष्टि नथी तेम ज क्रमशुद्धि उपर पण दृष्टि नथी. एकवार आसक्ति, व्यसन, अने तन्मयता एवो क्रम (र. व. पद ५७; ६,) दर्शावी तरत ज ए त्रणना प्हेलां प्रेमावस्था मुके छे. (र. व. पद ५७; ७). रसिक वल्लभना विद्वान् टीकाकार आ प्रसंगोना संबंधमां साहित्य-दर्पणमांनी दश कामावस्थाओ आपे छे; तेमां प्रथम चार–अभिलाष, चिन्ता, स्मृति, अने गुणकथन मुके छे; "दृग्रुचि" गणावी ज नथी त्यारे दयाराम दृग्रुचिने प्रथम मुके छे, अभिलाषने त्रीजो मुके छे अने बीजी रीते पण क्रम फेरवे छे (र. व. पद ५८; १. २). दृग्रुचि कोने कहेवी तेनुं स्पष्टीकरण दयाराममां नथी, पण मालतीमाधवना छठ्ठा अंकमां प्रथम "चक्षूराग," पछी मननी "अनन्यपरता" अने पछी "तनुग्लानि" एवी दशाओ गणावी छे, अने ते संबधमां टीकाकार जगद्धर दश कामदशाओ गणावे छे. तेमां प्रथम "चक्षुःप्रीति" छे, पछी मनःसंग, संकल्पोत्पत्ति, निद्राच्छेद, तनुत्व, विषयान्तर व्यावृत्ति, लज्जानाश, उन्माद, मूर्च्छा, अने छेली मरणदशा छे. स्त्रीपुरुषना संबंधमां आ क्रम सुघटित छे अने नायकनायिका एक बीजाने जोईने फरी फरी जोवा इच्छे ते दशा चक्षूराग अथवा चक्षुःप्रीति प्रथम दशा छे अने ते पछी गणावेली दशाओ क्रमे क्रमे विकास पामे छे. परंतु दृष्टिने अने मनने अगोचर प्रभुना संबंधमां सामान्य भक्तमां प्रथम तडाके

જ આવો ચક્ષૂરાગ થવો અશક્ય છે અને તે પ્રેમદશાનું પ્રથમ, નહી પણ છેલ્લું પગથીયું હોય તો જ તેમાં કાંઈ સંભવ અને ઉચિતતા આવે. આથી જ અભિલાષની બીજાવસ્થામાં "કૃષ્ણપીયુ" ઉપર બંધાવા માંડેલા (ખંડ ૬૩) પ્રેમનું શિખર "આત્મનિવેદન" કરનાર ટ્હેલીયા (ખંડ ૬૩–૬૪) ભક્તને હાથ આવે છે અને ટ્હેલને ટૌકે ટૌકે જ્યાં જ્યાં દૃષ્ટિ પડે છે ત્યાં ત્યાં એની દૃષ્ટિ સર્વભૂતના અન્તરાત્માની દૃષ્ટિ સાથે એક થાય છે એ જ એનો દૃષ્ટિરાગ અથવા દૃગ્રુચિ, એ જ સ્વાતિ–જલનું ચાતકને થતું આસ્વાદન, અને એ જ **યત્ર યત્ર મનો યાતિ તત્ર તત્ર સમાધયઃ** માં ઉદ્દિષ્ટ સમાધિ. પૂર્ણાનંદ પતિને વરનારી ભક્તહૃદયરૂપ સ્ત્રીમાં આ દશાને અંતે જે સહજ એટલે અપ્રયત્ન પ્રેમ પ્રકટે છે તે ભક્તિનો દશમો પ્રકાર અને શિખર છે. તેને માટે આપણે જુદું પ્રકરણ રોકીશું.

૧૦. ભક્તિયોગ અને યોગના અન્ય પ્રકાર.

૬૭. ગીતામાં ભક્તિયોગ નામનો અધ્યાય છે પણ તેમાં નવધા કે દશધા ભક્તિને નામે કાંઈ ઉલ્લેખ નથી. દયારામ યોગને સામાન્ય રીતે તરછોડી કહાડે છે પણ અમુક વાતે સ્વીકારે છે. જે દેવનો જે ભક્ત અંશ હોય તે દેવ તેને મળતાં "ચિત્તનિરોધ" થાય છે એમ એ સ્પષ્ટ કહે છે. (ર. વ. પદ ૨૩; ૮.). પતંજલિ વ્યાખ્યા મુકે છે કે યોગ એટલે ચિત્તવૃત્તિનિરોધ. કૃષ્ણરૂપ સાથે મન જોડવું અર્થાત્ યોગ કરવો, અને એવો સન્ધિ થાય તે જ સંધ્યા એવું દયારામ અન્યત્ર કહે છે. (ર. વ. પદ ૪૯; ૪.). કવિ ધ્યાન ધરવાને માટે ઉપદેશ કરે છે (ર. વ. પદ ૬૦; ૮) અને કેવા કૃષ્ણસ્વરૂપનું ધ્યાન ધરવું તે સવિસ્તર દર્શાવે છે (ર. વ. પદ ૬૧) અને એ ધ્યાન ધરનારને "યોગીરાય" એવું વિશેષણ આપે છે. (ર. વ. પદ ૬૨; ૪). ભક્તિ એ યોગનો એક પ્રકાર છે અને તે

उत्कृष्ट प्रकार छे एवुं कवि गणे छे ए आ उपरथी समजाय छे. घेरंडसंहितामां भक्तिना योगने स्पष्ट वर्णवेलो छे.

६८. पातंजल योगशास्त्रमां ध्याननी व्याख्या "प्रत्ययनी एकतानता" एवी आपी छे. ध्यानथी च्हडतुं पगथीयुं समाधि छे मनुष्यना मन पासे जे संसार उभो छे तेना एक भागने ए पञ्चज्ञानेन्द्रियो वडे प्रत्यक्ष करे छे अने ए भाग साथेनो एनो कर्मव्यवहार पञ्चकर्मेन्द्रियोवडे करे छे. आ भाग ते बाह्यसंसारनो छे अने मनुष्य पासे जागृत दशामां जणाय छे. संसारनो बीजो भाग जेने आपणे अंतःसंसार कहीशुं ते मनुष्यना मनना अंतर्भागमां उभो थाय छे. निद्राकाळे ते स्वप्नरूपे उभो थाय छे अने जागृत अवस्थामां मनना अंतःसंकल्पविकल्परूपे उभो थाय छे. बाह्यसंसारनी मूर्तिओने ज्ञानेन्द्रियो बहिर्मुख थई प्रत्यक्ष करे छे अने अंतःसंसारनी मूर्त्तिओने ज्ञानेन्द्रियो अंतर्मुख थई प्रत्यक्ष करे छे. कर्मेन्द्रियोथी बाह्यसंसारनी क्रियाओ प्रवर्तेछे तेम इन्द्रियोथी छुटुं पडी एकलुं मन जे अंतःसंसारमां क्रियाओ उभी करे छे ते सामान्य भाषामां संकल्प विकल्प कहेवाय छे. बाह्यसंसारनी मूर्तिओनुं अने क्रियाओनुं आपणने जे भान थाय छे ते भानने बाह्यप्रत्यय कहीशुं अने अंतःसंसारनी मूर्तिओना अने क्रियाओना भानने आपणे अंतःप्रत्यय कहीशुं. आ परिभाषा जोइए तेवी शास्त्रीय नथी पण सामान्य वाचकोने सुगमता करी आपवाना हेतुथी स्वीकारी छे.

६९. ज्यारे चित्तनो निरोध एवो एकाग्र थाय छे के तेने बाह्य के अंतःप्रत्यय थता नथी त्यारे तेना ध्याननुं शिखर जे दशाने प्राप्त करे छे तेने असंप्रज्ञात अने निर्विकल्प समाधिना नामथी ओळखावामां आवे छे. पण ज्यारे ध्यानमां सर्व बाह्यप्रत्ययोनो तेम एक शीवाय बीजा सर्व अंतःप्रत्ययोनो त्याग करवामां आवे छे अने ते बाकी राखेला एक ज अंतःप्रत्यय उपर मन एकाग्र

थाय छे त्यारे ते एकाग्रताने ए प्रत्ययना ध्यानने नामे ओळखवामां आवे छे. आवा ध्याननी शिखरावस्थामां संप्रज्ञात समाधि थाय छे. आवी रीतना समाधिकाळे ध्यानना विषयभूत मूळ बीजरूप अंतःप्रत्ययमांथी कोई नवो प्रत्यय उद्भूत थाय ,छे ते प्रत्यय बाह्य पण होय अने आंतर पण होय अने तेने सिद्धि कहेवामां आवे छे.

७० भक्तना चित्तनिरोधकाळे ते तेना इष्टदेवना अंतःप्रत्ययनुं ध्यान धरे छे अने तेने समाधिथी सिद्धि प्राप्त थतां ए देवनो आंतर अथवा बाह्य प्रत्यय नवे रूपे प्राप्त थाय त्यारे ते देवनो ते साक्षात्कार थयो समजेछे. केवळ ध्यानदशामां जे अंतःप्रत्यय ध्यान धरनार शोधेछे ते शास्त्रनी, धर्मनी, गुरुनी, के पोतानी कल्पनानुसार होय छे. पण जे नवीन प्रत्ययनो साक्षात्कार थाय छे ते तेनी कल्पनानुसार न होतां कोई अननुभूत रूपे होय छे. आ साक्षात्कार भक्तने इष्टदेवादिकनो थाय छे अने अन्य मनुष्यने तेणे इच्छेला अथवा न इच्छेला कोई पदार्थनो होय छे. युरोपमां आवी सिद्धि उपर श्रद्धा राखनार वर्ग आ साक्षात्कारना विषयने Vision कहे छे अने श्रद्धा न राखनार वर्ग Halucination कहे छे. आ साक्षात्कार संप्रदायप्रमाणे दशमा प्रकारनी एटले प्रेमभक्तिनी दशामां थाय छे अने ते केवो साक्षात्कार थाय छे ते जोवानुं कारण आपणे एटलुं छे के आपणा कविना उद्गार तेथी पूर्णपणे समजाय.

७१. आवा समाधिसिद्ध नवीन प्रत्ययने आपणे सिद्ध साक्षात्कार-विषय कहीशुं. पोताना अंतःसंकल्प प्रमाणे पोते रचेला अंतःप्रत्ययने अंतर्ध्यान विषय कहीशुं. ए उपरांत योगसाधनने आरंभे बाह्य प्रत्ययोमांना कोई एकने वळगी रही, असुक ज्ञानेन्द्रियथी ते प्रत्यय उपर स्थिर करवानो अभ्यास राखवा वधारवामां आवे छे तेवी क्रियाना विषयभूत बाह्यप्रत्ययने आपणे बाह्य-

ध्यानविषयने नामे ओळखीशुं. बाह्यध्यानकाळे बहिर्मुख इन्द्रियने अने अंतर्ध्यानकाळे अंतर्मुख इन्द्रियने तेम मनने तेना ध्यानविषय उपर एकाग्र थवानो अभ्यास पाडवामां अने वधारवामां आवे छे अने विषयना जे भाग उपर ए एकाग्रता थाय छे ते ध्यानबिन्दु (Focus of Attention) कहेवाय छे. ए ध्यानबिन्दु संपूर्ण साध्य थतां तेमांथी ज सिद्धसाक्षात्कारविषय प्रगट थाय छे.

७२. योगशास्त्रप्रमाणे योगनां छ अथवा आठ अंग गणाय छे तेमां आरंभे अथवा मध्ये प्राणायाम विधि आवी जाय छे. प्रथम अंगथी आरंभी क्रमेक्रमे उपरनां अंगोनो अभ्यास पामवानो छे, अने ते क्रमथी अंते ध्यान अने समाधिमां शिखरावस्था आवे छे. संप्रदायमां आने सटे नवधा भक्तिना क्रमथी च्हडतां दशमी प्रेमभक्ति आवे छे, अने ध्यान अने समाधि पामवाने माटे योगनां बीजां अंगनी अपेक्षा र्‍हेती नथी; माटे ज आ भक्तिने साधनहीनने पण शिखरावस्था सुधी लेई जनारी कही छे. कृष्ण मथुरां गया पछी गोपीयोनुं सान्त्वन करवा उद्धव आवी तेमने कृष्णदर्शन करवाने योगमार्ग दर्शावे छे त्यारे कवि गोपीओ पासे उत्तर देवडावे छे के "तमारो योग तमारी पासे बांधी राखो अने कृष्ण गुरु अने तमे चेला थईने तेने साधो, बाकी अमारे तो अमारी प्रीति बस छे" (द. का. सं. १०३ 'प्रेमरसगीता' पद १५,) अने वधारामां कहे छे के,–

" प्रकाशे यश क्यां थकी, प्रकट पाखे सउ वृथा;
" जुओ आंखो मींची आनंद शो ए जोग तो जुठो प्रथा;
" अजीठा सरखा जोगने शुं पाथरीये के प्होडीए?
" प्रत्यक्ष पावक परहरी शीद पत्थरमां शिर फोडीये?"

[द. का. सं. १०४ प्रे. र. गी. पद १७]

जे **प्रकट कृष्णरस** गोपीओए आमां योग करतां श्रेष्ठ गण्यो छे ते "अवतारी" कृष्ण तथा गोपीओना संबंधमां तेमना स्थूल के

सूक्ष्म शरीर संबंधे गणवो ए विचारवानुं हाल बाकी राखीशुं. पण जेने आपणे "नित्य कृष्ण" कह्या छे अने जे भक्तोनां हृदयरूप स्त्रीओ पासे कविए पीयुनी दूहेल नंखावी छे ते सर्वना संबंधमां तो आ प्रकट कृष्णरसने उक्त प्रकारनो सिद्धसाक्षात्कारविषय कहीए तो ज अर्थ बेसे. आ उपरांत मीरांबाई ज्यारे कृष्णचरणनां नूपुर-शब्दादिक सांभळे छे, कृष्णस्वरूपने सुदृष्ट करे छे, अने कहे छे के "मीरां भक्ति करे रे प्रकटकी, ओ नाथ, तुम जानत हो सब घटकी" त्यारे ए प्रकट स्वरूप आंतरध्यानविषय समजाय छे. ते ज प्रमाणे मूर्त्त प्रतिमाओने योगनी त्राटकादि क्रियाओथी भक्तो ध्यानविषय करेछे त्यारे पण ए पूजा प्रकटनी गणाय छे अने ए प्रतिमाओ बाह्यध्यानविषय थाय छे. आवी रीते **"प्रकट"** नो अर्थ अनेकधा थाय छे. पण ते सर्वमां साधनहीनने माटेना योग उपर दृष्टि छे अने ते भक्तियोगनां जुदां जुदां पगथीयां छे. ते सर्वमां जप, तप, प्राणायाम, वगेरेनी उपेक्षा करी केवळ प्रभुप्रेमनी वृद्धिनी आसक्तिथी आरंभी तन्मयता सुधीनी अपेक्षा रखाय छे माटे आ भक्ति **प्रेमलक्षणा** कहेवाय छे अने केवळ ईश्वरनुं ऐश्वर्य शोधनार ज्ञानीओनी भक्तिथी एटले अंशे जुदुं गणाय छे.

७३. शुद्धाद्वैतसिद्धान्तप्रदीप (पृ० ७०) वर्णन करेछे के "अलौकिक विग्रह सिद्ध करीने तद्भक्त समीप प्रभु **स्वरूप-** "**प्राकट्य** करे छे. नेत्रवडे अने मनवडे श्रीमुखसुधापान करतां "मोद थाय छे, त्यार पछी एवा कोई प्रचुर भावनुं संजनन थाय "छे के इन्द्रिय वडे ते स्वरूप सह संभाषण, आश्लेप, आदि संगम-"रस-भोग करवानी इच्छा थाय छे. दर्शन थया पछी क्वचित् "क्वचित् तो वेणुनिनादमात्रथी पण प्रभु सह संभाषणादि संयोग "रसोपभोग करवानी इच्छा प्रकट थाय छे, त्यारे भगवदानंद "संपन्न मनना संबंधथी ते मनोरथ परिपूर्ण थई जशे एम विचार "करी वाणी मन साथे समागम करे छे. मन अने वाणीनो आ

" प्रमाणे समागम थतां वाणी भगवद्रससंपन्न थइ जाय छे.
". (संभाषणादिचिकीर्षा परिपूर्ण थई रहे छे.) ए ज
" प्रमाणे सर्व इन्द्रियो मननी संगति करीने भगवद्रति
" संपादन करे छे." पातंजलयोगसूत्रना तृतीय पादना सूत्र ३३-३७ मां जे जातना सिद्ध-साक्षात्कार-विषयने उद्देशेला छे तेमां उपर प्रमाणेनुं स्वरूपप्राकट्य आवी जाय छे. " व्रजसीमन्तिनी सर्वात्मभाव पूर्ण छे अने ए सर्वात्मभावरूप साधननुं स्वरूपानंद फळ छे. माटे श्रीकृष्णे विरल भक्तोने रसात्मक, फलात्मक, भावात्मक, आनंदनुं परमदान कर्युं छे." ❀ ❀ ❀ "अलौकिक शृंगाररसनो प्राकृत विषयभोग साथे संभ्रम न करवो."(शु. सि. प्र. ७६). संप्रदायमां स्वीकारेली पञ्चपर्वा विद्यामांनी एक योगविद्या पण छे.(शु. सि.प्र.६५). तेथी उपर दर्शावेलां योगसूत्रोनी कोटिमां उपर वर्णवेला स्वरूपप्राकट्यनो समास करवा इच्छिये तो तेनुं फलित एवुं आवे के मूर्धज्योतिमां समाधि--संयम करवाथी सिद्धदर्शन थाय छे त्यां अने अन्यत्र कृष्णनां स्वरूप, नाद, आदि प्रकारनी स्वरूपप्रकटता पोताने माटे गोपीरूपने अने तेमनी प्रेमभक्तिने आंतरध्यानविषय करनारा भक्तोमां सिद्धसाक्षात्कारविषयने रूपे प्रकट थाय छे. योगनी अने संप्रदायनी परस्पर घटनानो अथवा ते बेमांथी एकनी पण प्राचीन के अर्वाचीन दृष्टिए शोधना के तुलना करवानो आपणे प्रसंग नथी, पण जेटले अंशे उक्त वस्तु आपणा कविनी ज्वालाओने स्पष्ट करवामां साधनभूत थाय छे तेटले ज अंशे आ सर्वनो आपणे उपयोग करवानो छे.

७४. श्रीकृष्णनी भावनामां गोपिका-संबंध उपरांत वृंदावनना बीजा पदार्थो, जेवा के वृन्दावन अथवा तुलसीवन, गायो, मोरली अथवा वेणुनो नाद जेणे गोपीओने मोहित करी हती, इत्यादि अनेक पदार्थो आवे छे. आपणा कविनां शृंगारकाव्यो समजवामां आमांना केटलाक पदार्थोनो योग साथेनो संबंध काममां लागे एवो छे.

७५. सामवेदनुं गान जेने परिचित हशे तेने गायोने एकठी करवाने माटेनां साम स्मरणमां आवशे. जती रहेती गायोने पोताना भणी वाळी आणवा माटेना ए गानना बळथी पोतानी बहिर्मुख इन्द्रिय—वाचक गायोने अंतर्मुख थती तज्ज्ञने स्मरणमां आवशे. नादयोगना योगी नादनुं शिखरस्थान पामवाना क्रममां आवा ज सामगानने साक्षात्कारविषयरूपे सांभळे छे अने ते काळे तेनी ज्ञानेन्द्रियो बाह्यप्रत्ययोथी मुक्त थाय छे अने तेनुं मनइन्द्रिय संकल्पविकल्पथी मुक्त थाय छे. आ छ ए इन्द्रियोने स्थाने एक सामगान आ योगीना मूर्धभागमां गाजी रहेछे जे उपरथी **वेदानां सामवेदोऽस्मि** एवुं कृष्णवचन समजाय छे. ए ज नाद वेणुनादरूपे पण साक्षात्कार-विषय थाय छे अने इन्द्रियरूप गायोने लय पमाडे छे. जे योगीओ—भक्तो—आ गान सांभळे छे तेमनी आ गायो बाह्य संसारमां भटकवा दोडवानुं छोडी ए भक्तने वश थाय छे अने तेमनुं आम पालन करनार भक्त गोप अथवा गोपाल एटले गोवाळ संज्ञाने पामे छे. तेनी प्रेमभक्तिमां ते पोताना हृदयने स्त्रीरूप भावना आपे छे अने कृष्णपीयुने शोधे छे एटले ते गोपीरूप थाय छे. वेणुनाद एक प्रकारनो अनाहत नाद छे अने अंतर्मुख थयेला श्रवणेन्द्रियनी अंतर्वृत्तिमां उभराय छे त्यारे उक्त प्रकारनी गायोने, गोवाळीआओने अने गोपिकाओने ए वेणु वगाडनार सत्त्व लय पमाडी पोताना भणी आकर्षे छे.

७६. योगनो एक बीजो प्रकार "सोहं जाप" नामनो छे. स्थूल शरीर पांच प्राणथी जीवे छे त्यारे सूक्ष्म शरीर मात्र प्राण अने अपान एम बे प्राणथी जीवे छे. प्राणथी उंचे आकर्षाय छे अने अपानथी नीचे आकर्षाय छे. प्राण शरीरमांथी **सकार**-युक्त शब्द करतो करतो व्हार नीकळी व्हारना पवनमां भळे छे, अपान व्हारना पवनमांथी **हकार**युक्त शब्द करतो करतो शरीरमां प्रवेश करे छे. आवी उंचीनीची गतिथी रुधि-

रना, श्वासना अने सर्व नाडीओमांना स्थूलसूक्ष्म धातुओना उच्च नीच प्रवाहोनुं जीवन ते स्थूल शरीरनुं जीवन छे, तेवी ज रीते स्थूल शरीर साथे स्थूल धातुओ नाश पामवा पछी कोईक सूक्ष्म धातुओना प्रवाहोनुं उच्चनीच गतिवाळुं जीवन सूक्ष्म शरीरनुं जीवन बने छे. आ बे प्राणप्रवाहोने उक्त कारणथी "सः" अने "हम्" नी संज्ञा आपी तेना सतत परस्परसंबंधने "सोहम्" संज्ञा आपवामां आवे छे अने केवळ सूक्ष्म शरीरना प्रवाहमां श्रवणेन्द्रियगम्य सकार अने हकारनो अभाव होवाथी ते अक्षरो बाद करी "ओ" अने "अम्" ने संगत करी तेमना संबंधने ओंकार संज्ञा अपाय छे एवुं अनुमान छे. वेदान्तनुं महावाक्य "सोहं ब्रह्म" अहंपद अने तत्पदनी एकता सूचवे छे ते ज प्रमाणे योगना सोहम् अने ओम् बाह्यप्राण अने अंतःप्राणनी एकता सूचवे छे. ज्यारे भक्तकवि नरसिंह गाय छे के "नीरखने गगनमां कोण घुमी रह्यो, ते ज हुं ते ज हुं शब्द बोले," त्यारे "ते ज हुं" "ते ज हुं" ते आ सततप्रवाहवाचक "**सोहम्**" नुं ज भाषान्तर छे. जेवी रीते प्राणना रेचकादिक प्राणायाम कहेवाय छे तेम आ "**सोहम्**"-प्रवाहोने मन अनुसरे तेने प्राणानुसरण अथवा सोहम् जाप अथवा अजपा मन्त्र—जाते जपातो जप—आदि संज्ञाओ अपाय छे. आथी **सोहम्**ना अक्षर उलटावी सूक्ष्मशरीरी जीव "हंस" नामे पण ओळखाय छे. भक्तियोग आपणा कविनी आंखमां घुमी रह्यो छे तेनुं निरीक्षण करवामां योगना अनन्य विषयोनो संबंध ओछो वत्तो उपयोगी होवाथी अने तेना स्पष्टीकरणनी पुनरुक्ति न करवी पडे ए हेतुथी आ प्रकरण मुकेलुं छे. आपणा शुद्ध विषयमां आपणे हवे पाछो प्रवेश करीशुं.

११. कविनी पुष्टिभावना.

७७. प्रतिमापूजननुं रहस्य समजाववा कवि कहे छे के जे पदार्थमां जेवी भावना करी—जेवो निश्चय करी—जेवुं ध्यान धरीये

छीए तेवा स्वरूपथी तेमां हरि देखाय छे, कारण के ते सर्व वस्तुमां व्यापक छे. मूर्ति अथवा प्रतिमा जाते तो मात्र एक ब्हानुं छे,–ध्याननुं निमित्त छे–बाकी फलदाता पदार्थ तो हरिसंबंधे ध्यान-काळनो निश्चय छे. ए ज निश्चयने बळे स्तंभमांथी नरसिंहस्वरूप प्रकट्युं छे अने तेम थवामां मूर्तिनी प्रतिष्ठा के पूजा करवानो काळ नथी. तेवा ज निश्चयने बळे द्रोणनी मूर्ति करी तेनां ध्यानथी किराते अस्त्रविद्या प्राप्त करी छे. आवां दृष्टांतोथी कवि बोध करे छे केः–

“निश्चय हरिनो भाव ज्यां त्यां हरि, व्हानु मूर्ति संबंधीनी वस्तु हो!
“फलीभूत होय हरि मान्याथी, हरिरूप छे जगत समस्तु हो!”
४ बृ. का. दो. ८२२, पद ४५.

एवो ज अनुभवबोध एक स्त्रीकवि करे छे के.

“निश्चयना म्हेलमां रे वसे म्हारो वालमो रे
“जे जाये ते जोवा पामे जी रे!”

अर्थात् ध्याननुं बळ ध्यानकाळना निश्चयथी छे अने बाह्य-ध्यानविषय मूर्ति अथवा आंतरध्यानविषय इष्टदेवनुं स्वरूप ए सर्व तो ध्यानमांथी सिद्धसाक्षात्कारविषय प्रत्यक्ष करवामां मात्र निमित्तभूत छे. दयाराम आवो साक्षात्कार सिद्ध करवामां ज सफल भक्ति जुवे छे अने सर्वव्यापि अक्षरब्रह्मनुं अव्यक्त स्वरूप समजवा करतां आवा प्रकट स्वरूपना साक्षात्कारमां ज रस माने छे अने कहे छे के

“प्रकट मळ्ये सुख थाय, श्रीगिरिधर प्रकट मळ्ये सुख थाय;
“अंतर्यामी अखिलमां छे, तेथी कहो कोनुं दुःख जाय?
“तैल विना स्फुट तिल पूर्येथी दीपक क्यम प्रकटाय?
“प्रकट पावक विना काष्ठने भेट्ये शी पेरे शीत शमाय?
“पृथ्वी चाट्ये तृषा टळे नहीं, अंतर्जळ श्रुति गाय;

"दीवाशळी–पाषाण स्पर्शथी को क्हे ज्वाळ जणाय ?
"सुरभि पेटमां पय, तेमां घृत, तेथी पुष्टि न पामे गाय;
"दोही मथीने माखण ताव्ये सर्पिभक्षण सुखदाय.
"व्यापकथी वातो नव थाये, ते विना जीव अकळाय;
"रसीयाजनमनरंजन नटवर दयाप्रीतम व्रजराय."

४ बृ. का. दो. ८०८.९. पद ३०

७८. जे सिद्धसाक्षात्कारविषयरूप प्रकट स्वरूपमां कवि रस माने छे तेनो साक्षात्कार निश्चयथी अने हरिनी कृपाथी थाय छे.

"भूतमां भगवतरूप मान्युं नामदेवे, थयुं तेवुं दर्शन;
"केवळ भावथी निकट नंदसुत, समजणवाळाने व्हस्व हो!
"निश्चयभाव हरिकरुणाथी आवे, अवर उपाय न कोई,
जेवुं भावनुं बळ, तेवुं फळ; दया, तुं लेजे जोई हो!"

४. बृ. का. दो. ८२४. पद. ४९.

७९. आ विषयमां निश्चयरूप पुरुषप्रयत्न सिद्ध करवाने हरिनी कृपा एटले अनुग्रह जोइए. भक्तनी भक्तिमां एवी एक आकर्षक शक्ति छे के जे हरिना अनुग्रह उपर बळ करी तेने पोताना प्रयत्न भणी आकर्षे छे अने एम करतां करतां एवो काळ आवे छे के हरि भक्तने अधीन थइ जाय छे. नवधा भक्तिमांनी प्रथमने ज बळे आ अनुग्रह आकर्षावा लागे छे. मेघ पृथ्वीना गुरुत्वाकर्षणथी आकर्षातां पृथ्वी उपर वर्षवा मांडे छे अने पृथ्वीना रसनुं पोषण करे छे ते ज रीते भक्तिबळथी आकर्षायलो हरिनो अनुग्रह वर्षवा लागे छे अने भक्तिना रसनुं पोषण करवा लागे छे. भक्तिरस पोतानुं बळ करी अनुग्रहने आकर्षे छे अने आकृष्ट अनुग्रह भक्तिरसनुं पोषण करी नवधा भक्तिनां नवे पगथीयां उपर भक्तने क्रमेक्रमे च्हडावे छे–उर्ध्व आकर्षे छे–अने अंते दशमी पराभक्तिरूप शिखर उपर भक्त–हृदय च्हडे छे त्यारे भक्तिनां अने अनुग्रहनां परस्पर आकर्षणमां तेमना परस्पर आघात--प्रत्यघात उमे-

राय छे. आ आघातप्रत्याघातमां कवि प्रेमरसना भोगने अने तन्मयतानी अवस्थाने देखे छे. ए अवस्थानी प्हेलांनी अवस्थाओमां प्रेमनुं आकर्षण तेम प्रभुनो अनुग्रह उभय कारणोना संयोगथी भक्तिनुं पोषण थाय छे अने ए पोषणथी पुष्ट थया पछी अनुग्रह बाकी रहेतो नथी अने केवळ तन्मयता थाय छे. आ प्रकारनुं पोषण वल्लभाचार्यना संप्रदायनुं मुख्य व्यावर्तक होवाने लीधे ते संप्रदाय **पुष्टिमार्ग** कहेवाय छे अने दयारामने ते इष्ट छे. (जुवो विशेष वीगतमाटे-शु. सि. प्र. ६९, ७४, ७८; २. प्रा.का. मा. पुष्टिपथरहस्य, दुहा ३. ४.)

८०. पुष्टिमार्गना आचार्य अने तेमना पुत्रना भावी जन्मनो वर्तारो नरसिंहम्हेताए वर्तेलो हतो एवुं कवि लखे छे: पु. ५. २. दुहा ८२, ८३. नरसिंहना कीया लेखमां आवो उल्लेख छे ते जाणवामां नथी, पण कविनी आ वर्तारा संबंधनी श्रद्धानुं मूळ संप्रदायना कोइ लेखमां होवुं जोइए, अने संप्रदायवाळाओए आवुं मूळ रोपी राखवानी कोइ वेळा आवश्यकता जोइ होय तो नरसिंहम्हेताना नामनां काव्योमां तेनी पाछळ थयेला संप्रदायवाळाओए कोइ कोइ स्थाने पोतानी अनुकूळता प्रमाणे उमेरा करेला होवा जोइए. ए प्रश्न साथे आथी वधारे संबंध आ प्रसंगे नथी. पण ए समर्थ भक्तकविनो आश्रय संप्रदायवाळाने शोधवो पडेलो छे तेनुं एक कारण एवुं अनुमेय छे के पुष्टिमार्गनां केटलांक बीज म्हेताना लेखोमां छे तेने विकसावी संप्रदायवाळाओए नवो वृक्ष उभो करेलो होवो जोईए. भागवतमां रासक्रीडा वगेरेमां कृष्ण अने गोपिकाओना प्रसंग छे ते गोपीओमां राधाने अग्रेसरा करवाना मार्गने संप्रदाये जेवुं प्राधान्य आपेलुं छे तेवुं ज नरसिंहे आपेलुं छे, पण ते ज प्राधान्यने विस्तारी दयारामे संप्रदायने आधारे वल्लभाचार्यने कृष्ण तेम राधाना अवताररूप मानेला छे. राधाने म्हेतो तेम दयाराम स्वामिनीजीने नामे पण ओलखे छे

अने वल्लभनो अवतार लेइ स्वामिनीजी पोताना आश्रित मार्गीओने माटे शुं करे छे तेनुं विवेचन दयाराम करे छे के,

"अतिप्रयत्न वण प्राप्ति नव पुरुषोत्तमनी थाय,
"ते श्रीवल्लभशरणथी सहजे सद्य पमाय.
"राजाने राजी करे ए बल कदा न दीन
"स्वल्प सीफारस राणीथी, सहज मति आधीन.
"आत्मा श्रीजीनो सदा मुख्य स्वामिनी जेह,
"ते श्रीवल्लभ स्वयं थया, धर्यो पुरुषनो देह.
"अतिवल्लभ श्रीकृष्णने, माटे वल्लभ नाम,
"कृपा इहानी वण कदा नव रीझे घनश्याम.
"श्रीवल्लभ आश्रयविना साधन-धर्म अशेष
"साधे हरि, केवळ भजे, लीलामां न प्रवेश.
"जे उपर अनुग्रह अति अंतरमां व्रजराय,
"श्रीवल्लभ शरणागति तेने दृढ थई जाय.
"श्री महाप्रभुसंबंध वण कशुं नही फळदाय,
"पुष्ट सृष्टिनी रीत ए, जगनो जुदो न्याय."

पु. ५. २. दुहा. ८–१४.

स्वमार्गीने माटे वल्लभरूप राणी शाथी आम विशेष फावे छे तेने माटे कवि कथे छे के राजानो यश अनेक बंदीजनो गायछे पण रंगम्हेलनुं वृत्तांत तो अनुभवी राणी ज जाणे तेम श्रीकृष्णरूप राजानो शुद्ध अनुभव तो वल्लभरूप स्वामिनी ज जाणे छे. पु. ५. २. दुहा ४४--५०. आपणे राधाना स्वरूपमां जे रसोद्बोधक शक्ति जोइ छे अने जे शक्ति दशमा प्रकारनी भक्तिनुं स्वरूप छे ते शक्तिद्वारा रसरूप नित्यकृष्णनो अनुभव कराववानी शक्ति तेवा अनुभवना अनुभवी वल्लभगुरुमां छे अने भक्तिना प्रथम प्रकारथी दशमा सुधी च्हडावनार श्रीकृष्णना ऊर्ध्व आकर्षणरूप अनुग्रहने प्राप्त करावनानी अपूर्व कळा आ गुरुमां ज छे एवो अर्थ

करीये तो आपणा कविनुं सूक्ष्म रहस्य समजाय अने अन्यधर्मप्रवर्तको-ए परिचित करेला संप्रदायोमां सामान्य स्थूल बुद्धि प्रमाणे ईश्वर अने मनुष्य वच्चेना मध्यस्थ अवतारनी भावना वल्लभ प्रति आपणा कविने हती एवुं गणीये तो तेम पण गणाय. बाकी आ कविना उद्गारोमां स्थळे स्थळे जे सूक्ष्म रहस्यभावनाओ स्फुरती आपणे जोइ छे तेने अनुकूल तो आ विषयमां पण कविनी भावना स्थूल नहीं पण सूक्ष्म हती एवुं गणवानो प्रसंग छे, अने ए अर्थ करतां विशेष उद्गारोमां कवि कविपणानी ल्हेरोए च्हडी अर्थवाद अने अतिशयोक्तिनी जाळोमां जगतने गुंचवे छे एवुं समजाय तो तेमां कांइ बाध नथी.

८१. संप्रदायोक्त अनुग्रहसाधन स्वामिनी राधाजीना विषयमां ए संप्रदायना बीजभूत म्हेता नरसिंहनी भावना समज्याथी दयारामनी भावना पण समजाय ए हेतुथी म्हेताना लेखोमां आपणे चञ्चुपात मांडोव्हेलो करी लइशुं.

८२. भागवतथी आरंभी पछीना घणाखरा वैष्णवरसना ग्रन्थोमां निरंकुश शृंगार छे. एक पासथी अत्यंत विरक्तिनी अने बीजी पासथी अंत्यत शृंगारनी भावनाओने एकत्र करवामां आ ग्रन्थोनुं प्रयोजन सामान्य दृष्टिने अगम्य लागे छे अने ए दृष्टि एवा ग्रन्थोने आधारे अने ए ग्रन्थोने साधनभूत करी प्रवर्तेला धर्मनो तिरस्कार करे अने तेनां छिद्र शोधे ते एक रीते जेम स्वाभाविक छे तेम ज बीजी रीते ए दृष्टिने देखाता विरोधने स्थाने विरोधाभासनी दृष्टि रची ए आभासना मूळ स्थानमां रहेलां तत्व शोधवां ए न्यायबुद्धिनो धर्म छे. दयारामना स्थूल जीवनमां छिद्र-दृष्टि दोष जुवे छे तेवा ज दोष नरसिंहम्हेताना जीवनमां ए जीवन-समये कोइए जोया हशे पण ते पछीनां सर्व शतकोमां म्हेतानुं जीवन केवळ साधुतानी अने भक्तिनी मंजुषा जेवुं सर्वत्र गणायुं छे. आथी ए कविए लखेला शृंगारमां उक्त प्रकारनो विरोधाभास

ज होवो जोइए अने ते शोधी कहाडी एना शृंगारजाळमां केवळ भक्तिनुं अने साधुतानुं ज सत्व होवुं जोइए एवी भावना राखी आपणे एना लेखोनुं तत्त्व शोधीशुं तो अक्षरदेहना परीक्षकनो धर्म नही सचवाय एवुं कहेवा जेवुं नथी.

८३ संप्रदायमां लौकिक शृंगारने ज रसाभास कही प्रेमभक्तिना शृंगारने ज रस कह्यो छे. (शु से. प्र. ७७.) परंतु भक्तिशृंगारनुं वर्णन लौकिक शृंगारनी परिभाषामां करवानी आवश्यकता भक्तकविओये गणी छे. ए परिभाषानां पड फोडी तेनी नीचेनो गुप्त गंगाना निर्मळ झराना जेवो शुद्ध रस मेळववानी शक्तिने अभावे सामान्य वाचको अने श्रोताओ ए पडमांनी माटी जेवा रसाभासनुं आस्वादन करी लौकिक शृंगारनी भावनाओनुं ज पान करे तो ते तेमनो पण दोष नथी. संसारने बोध करनार लेखकोना अने वक्ताओना शब्द ज्यां ज्यां जाय छे त्यां अदृष्ट पवन पेठे पोताना गन्ध अने दुर्गन्ध उभयने प्रसारे छे अने ए पवन कोइने अमृत थाय छे तो कोइने विष थाय छे. पोताना शब्दो सर्वत्र अमृतनुं काम करे अने विषनुं काम न करे एटलुं सर्व समर्थ अने सात्त्विक लेखको अने वक्ताओ दीर्घदृष्टिथी साचवी ले तो संसारनुं घणुं कल्याण थाय. परंतु अनेक देशकाळना संकर करनार आ युगना प्हेलांना युगोमां आवी दीर्घदृष्टि सुलभ न हती. वैष्णव आदि अनेक भक्तिमार्गना कविओना स्वमार्गीय भक्तसंघो उपर ज दृष्टि होवाथी आवी दीर्घदृष्टि तेमने स्वाभाविक रीते प्राप्त थइ नथी अने तेमनी भक्तिभावना विनाना देशकाळमां एमना शब्दोनुं श्रवण प्रतिकूल लाग्युं छे. एमना बोधनुं आवुं अनिष्ट फल दृष्टांतरूप गणी आपणा युगना लेखकोए एवी दीर्घदृष्टि वापरवी आवश्यक छे के जेना फळरूपे हवेना देशकाळमां एवां अनिष्ट फळनां बीजरूप तेओ थाय नही. आटली दीर्घ दृष्टिनी न्यूनता आखा अमुक देशमां के काळमां होय अने तेमांथी एक व्यक्तिने

वारसारूपे प्राप्त थइ होय त्यारे ए देशकाळनो दोष आपणे भले कूहाडीये पण ए व्यक्तिनो दोष कहाडवानुं विशेष कारण नथी. दयाराम अने हाफीझनां काव्योनी सरखामणी रा. रा. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरीए ए बे कविओनां काव्योमांथी उतारा आपी करेली छे. ते सरखामणी पण ए ज वस्तु शीखवे छे के पोताना धर्मादिकनी भावनाओने वश थयेलां अने ईश्वर उपरना प्रेमथी उत्कृष्ट थयेलां कविहृदयो पोतानी ज्वालाओने जगत्‌नी दृष्टि' पासे प्रकट करतां मात्र पोताना आंतराग्निने, ज्वालामुख पर्वत पेठे, पोतानां शिखरस्थानोमांथी व्हार कूहाडवाना अने जगतने तेनुं शुं फळ थशे तेना भान विना अत्यंत वेगथी भभुकाववाना आवेश विना अन्य विचारथी क्वचित ज प्रेराय छे. आ देशमां तेम अन्य देशोमां भक्त कविओना केटलाक वर्गनी आ स्थिति साहजिक जणाइ छे तो तेमना पारमात्मिक गुलाबनो सुगन्ध सुरक्षित संग्रहीत करी ए गुलाबना कांटाओना थोडाक घोंच वेठी लेवा अने ए व्यक्तिओनो दोष कूहाडी तेमणे आपेलां रत्न फेंकी देवां नही एमां ज अक्षरना व्यापारीओनी चतुराइ छे.

१२. कविनो शृंगाररस.

८४. उक्त दृष्टिए दयारामना अक्षरदेहना दोषनुं निरीक्षण करी ह्वे आपणे तेमना श्रृंगारमय परिभाषाना वस्त्रमां ढंकायला अक्षरदेहनुं निरीक्षण आरंभीशुं.

८५. आसक्ति, व्यसन अने तन्मयता एवा त्रण, दश भक्तिप्रकारोमां वर्ग छे. (खंड ६१-६२).आसक्तिना व्याधि, प्रलाप, अने आलाप एवा त्रण प्रकार छे (खंड ६२), व्यसनमां पादसेवन अने अर्चनकाळे जडता अने मूर्च्छना छे (खंड ६२). व्यसनावस्थामां अभिलाषबीज रोपाय छे, अभिलाषनी बीजावस्थामां

लोकलज्जा छुटवा मांडे छे, भक्तहृदय स्त्रैणभावना धरे छे, अने वन्दनभक्तिमां अभिलाष जामे छे (खंड ६२—६३), अभिलाषमांथी उद्वेग दास्यकाळे थाय छे, तेमांथी सख्यकाळे स्मरण प्रकटे छे, अने तेमांथी आत्मनिवेदनकाळे दृग्रुचि प्रगटे छे (खंड ६२-६६), अने ए निवेदन करनार सर्वात्मभाव प्रियपुरुषनी स्त्री बनी सर्वत्र ट्हेल नांख्यां करे छे (खंड ६३). ए नवधाभक्ति पछी दशमा प्रकारनी भक्तिमां प्रेमनी परिपूर्ण दशा, तन्मयता, रसभोग, अने शांति थाय छे (खंड ६५), आत्मनिवेदन काळे प्रभुसाथे चक्षु राग थाय छे (खंड ६६), तन्मयताकाळे परिपाक पामी स्वरूपप्राकट्य अने प्रेमभोगनो साक्षात्कार करावे छे (खंड ७३). एक भक्त व्यक्तिने आवुं स्वरूप प्राकट्य थाय छे, ते ज अनेक भक्तोने साथे लागु थाय छे त्यारे "रासलीला" मचे छे. शृंगारशास्त्रनी परिभाषामां भक्तिमार्गनी पद्धति आवी रीते संप्रदाय प्रमाणे कवि समजावे छे अने अन्यथा समजाय छे तेनां दृष्टांत श्रीकृष्ण अने गोपीओना स्पष्टास्पष्ट प्रसंगो विस्तारी गाय छे, गातांगातां पोतानी उपमाओ अने उत्प्रेक्षाओमां लीन थई तेमनुं उपमापणुं अने उत्प्रेक्षापणुं भुली जाय छे, प्राकृत शृंगारभोगनुं वर्णन करता होय तेम भक्तिशृंगारनी कोई पण कोटिमां न आवे एवां शृंगारस्थानोमां लपसी पडे छे, अने श्रोताओ तेमनी पेठे भक्तिलीन न होय तो तेमने भ्रांतिमां नांखी भमावे एवा उद्गार करे छे. एक नाटकशाळानी रंगभूमि उपरनो एक खेलाडी नृसिंहावतारनो खेल भजवी रही पडदामां गया पछी पण पोताना कृत्रिम वेशनुं भान न भुलतां चारे पास तरवार वींझतो मट्यो नहीं एवी वात छे, ते ज प्रमाणे भक्त कविओथी भक्तिमार्गनां रूपकादिकनां गान आटोपी रह्या पछी पण गानना ललकारा भुली जवाता नथी अने कंठमां तेओ शून्य गान कर्यां करे छे तेमां अर्थहीन गान पेठे भक्तिहीन शृंगार उभरायां करे

छे. आटला स्वभावनियम उपर दृष्टि राखी भक्त कविओनां गाननी तुलना करीये तो ज ते तुलना शुद्ध थाय.

८६. कविना शृंगारलेखनो म्होटो भाग गरबीओमां छे. तेमां उपरना वर्गीकरण प्रमाणेनो भक्तिशृंगार छे के केवळशृंगार छे ते जोवानुं साधन एटलुं छे के एनी दरेक गरबी उपरना कीया वर्गमां आवे छे ते जाणी लेवुं अने ते पछी करवा जेवो विचार करवो. जेम के सासु-वहुनो संवाद (द. का. सं. १९९ गरबीओ ४३–४४) लोकलज्जाना त्यागना वर्णननुं दृष्टांत छे. भक्त पोताना आधिनुं वर्णन मनुष्यनी पासे न करतां मधुकर पासे करे छे के "प्रेमनी पीडा ते कोने कहीये, हो मधुकर" इत्यादि (द. का. सं १८५–६, ग. १५-१६).

"उभा रहो तो कहुं वातडी, बीहारीलाल,
"तम माटे गाळी छे म्हें जातडी; बी०
"जे दहाडे मळ्याता वनमां, बी०
"ते दहाडानी तालावेली तनमां; बी०
"वेदना विरहनी ते क्यां भाखीये ? बी०
"भीतरनो भडको ते क्यां दाखीये ? बी०
"फटकारी सरखी फरुं वनमां, बी०
"कळ ना पडे रजनि-दिनमां. बी०"

इत्यादि. द. का. सं. ग. ४७.

'आमां विरह अने उद्वेग उभय छे. वेणुनादनां दृष्टांत मोहक अने रससंबोधक छे:"वशकरणी छे त्हारी वांसळी", "स्वर शुणतामां हुं तो शुद्धिबुद्धि विसरी", "दरदमां गरद गई छे मळी", (द. का. सं. १८३. ग. १०) एमां वांसळी मोहक छे; "वेण मा वाशो म्हारे आंगणे", "सासु कूहे छे जाओ वहुअर वेण वागी", (द. का. सं. १८४, ग. ११) एमां वांसळीनो बोध संसारनो

विरोधक छे; "व्हलो म्हारो कुंजमां वाय छे वांसळी रे लोल, नादे वेधी छे म्हारी पांसळी रे लोल," " मलवा थई छुं अति आतुरी रे लोल," "गोठतुं नथी कंइ भुवनमां रे लोल", "सखी हावां तो मळी सुख म्हालीये रे लोल," "धन्य दहाडो ते अवतारमां रे लोल, रमीये ते श्रीनंदकुमारमां रे लोल", (द. का. सं. १९३ ग. ३१) एमां वांसळी मोहक अने उद्बोधक उभय छे; "वांसलडी वाजो, सांजे आज वांसलडी वाजो", (द. का. सं. १९५, ग. ३४) एमां वांसळीने गोपी जगवे छे; "रसीये वगाडी रंगवांसळी," "विकळ करी मने वालमे वांकी दृष्टे रे जोई", (द. का. सं. २३१, ग. १०३) एमां भक्त चक्षूरागथी अने वेणुनादथी एम उभयथी आकर्षाय छे.

"वांकु म जोशो वरणागीया, जोतां काळजे कंइ थाय", "मोहन मुखडुं जोई मनडुं मोहाय छे," अधर पर नासिकानुं मोती आवेलुं छे, "ते ते मनडा म्हारामां झोकां खाय छे," "मीठी मोरली शुणीने हवे, वणमूले सर्व वेचाय छे", (द. का. सं. १८५, ग. १३) एमां चक्षूरागने प्रधान राखी वेणुनादनुं पण मोहन छे. "व्हाला शाने लोचन ललचावो ? माणीगर, म्हारे म्होले आवो," (द. क. सं. १९५, ग. ३५.) एमां चक्षूराग छे अन्यत्र हरिना स्वकंठनो साद जाते ज संभळाय छे अने भक्तना हृदयने संसारमांथी सऊ देखतां बोलावी हरिसन्मुख करे छेः "सासु म्हारी सांभळतां मुने शीद करो छो साद रे ?" "गोळ पोताने खुणे खाइए, करीए दीठोअदीठो जी", "जे दहाडानी प्रीत बंधाणी ते दहाडानी चरणे वळगी जी", (द. का. सं. १८२, १८३: ग. ८,९). अन्यत्र हरिस्वरूप ए ज प्रयोजनथी प्रत्यक्ष थाय छेः "खरे प्रभाते म्हारे द्वारें शीद उभा? आवा रहो, देखशे साहेलडी रे"(द. का. सं. १८४; ग. १२.). अन्यत्र साक्षात्कारप्रत्ययरूप हरिस्वरूप भक्त

पासे तेना व्यवहारप्रसंगोमां अचित्युं प्रकट थई ए व्यवहारना प्रसंगोमांथी तेने दूर करी हरिसन्मुखताना व्यवहारमां योजे छेः जेम के, "श्री जमुनाजीना घाटमां रे लोल, रोकी राखी छे मुने वाटमां रे लोल", "नणदल-सहीयरना साथमां रे लोल, ताळी मा देशो म्हारा हाथमां रे लोल," (द. का. सं. १९२, ग.३२), "हुं जाऊं जळ भरवा त्यां व्हालो पुठे पुठे आवे, वगर बोलाव्यो व्हालो व्हेडलुं च्हडावे" (द. का. सं. १९८, ग. ४१), "मने कांइ कांइ कहेछे रे, म्हारो मारग रोकी उभो रहेछे रे," "गोकुळथी मथुरामां जातां म्हारां दाण दधिनां शाने लेछे रे?" "वृन्दावननी कुञ्जगलनमां म्हारो पालव शाने ग्रहेछे रे?" (द. का. सं. २३२, ग. १०४.).

८७. एक भक्तने कृष्णविरह थाय छे त्यारे अन्य भक्तमां ए रमता हशे एवी कल्पना करेछे (द. का. सं. १८८, ग. २३, १८९, ग. २५), अने हारि पण गरजस्वादी हशे एवी उत्प्रेक्षा करे छे (द. का. स. २१९. ग. ७५), अनेक गरबीओमां हरिमां मनुष्यस्वभावनो आरोप करी भक्तहृदय अनेक कल्पनाओ, उत्प्रेक्षाओ वगेरे करे छे. जेम भक्त आम हरिथी आकर्षाय छे तेम हरि पण भक्तथी आकर्षाय छे, भक्तनो अनुनय करे छे, भक्तने मनावे छे, अने तेनुं शरण शोधे छे. "दयानो प्रीतम कहे हुं सम खाऊं छुं, तुं वस्तु म्हारा कामनी" (द. का. सं. १८८, ग. २१), "त्हारे प्रेमें हुं मोह्यो राधिके! त्हारा सरखो प्रेम कंही ना जोयो," "अन्य हती पण अर्थ कोनो न सीध्यो", "तुं ते हुं ने हुं ते तुं, वेदमां वाणी", "जुगल छबी दास दये उर आणी" (द. का. सं. १९०, ग. २६), "श्यामा, तुं शीदनें रीसाइ रे?", "नयने नीर भरे छे नटवर, मुखे जपे राधा जाप रे" (द. का. स. १९०–१, ग. २७), इत्यादिमां भक्तनुं अने तेमां सविशेष राधानुं आकर्षण हरि उपर थायछे.

૮૮. હરિના અને ભક્તના પરસ્પર આકર્ષણને અંતે રસભોગ થાયછે તેને એક સ્થાને કવિ દમ્પતીના શ્રૃંગાર શિખરની પરિભાષામાં વર્ણવે છે (દ. કા. સં. ૧૯૩, ગ. ૩૦), અન્ય સ્થાને તેનાથી થયેલી શાંતિને કથે છે (દ. કા. સં. ૧૯૫, ગ. ૩૬), અન્યત્ર અનેક સખીયોના ગરબામાં ભળેલી રાધાને તેમની વચ્ચેથી કુઞ્જ ગલીમાં લેઇ જઇ તે સ્થાનમાંના રસભોગથી "આનંદ સાગર ઉછળ્યો" એ "પવિત્ર ચરિત્ર" ને દાસ બની ગાય છે (દ. કા. સં. ૨૦૬–૭, ગ. ૫૫), અન્યત્ર રાધા પાસે કૃષ્ણરૂપ અને કૃષ્ણપાસે રાધારૂપ ધરાવી કૃષ્ણનું કાર્ય રાધા પાસે કરાવે છે (દ. કા. સં. ૨૧૬–૧૭, ગ. ૭૧), અને અન્યત્ર મથુરામાંથી કૃષ્ણે મોકલેલા જ્ઞાનીભક્ત ઉદ્ધવના જ્ઞાન કરતાં ગોપીઓના પ્રેમની શ્રેષ્ઠતા દર્શાવવા ઉદ્ધવના દેખતાં સર્વ ગોપિકાઓ સ્વામિનીઓ બની જઇ વાંસલડી સાંભળતી પ્રેમસમાધિને પામે છે તે પ્રસંગનું વર્ણન કવિ ગોપિકાઓ પાસે તેમના પ્રભુ પાસેના અખંડ અવિરહિત રસભોગનું વર્ણન કરાવે છે કે,

"માન્યો મનનો મોહનવર પામીયાં જો,
"અમો વેદના વિરહની સઉ વામીયાં જો,
"રંગી રસીયો છબીલો છેલડો જો,"
"નાગર નંદનો કીશોર અલબેલડો જો,
"જેને જોવા જોગેશ્વર દેહ દમે જો,
"તે તો અમસું અખંડ રંગે રમે જો, "

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"અમારું પદ કો ન પામ્યું કોટિલાખમાં જો;
"અમારે ઓછું રહ્યું શું અભિલાખમાં જો?
"જીવન જગનું અમ પાસ આપોઆપ છે જો,
"કેવળ પ્રેમ પુરુષનો પ્રતાપ છે જો,
" મુકી, ઉદ્ધવ, અમને તે ક્યાંય જાય ના જો;

"बोल्युं अमारु तमो परखाय ना जो.
"अमो जेने वियोगे आंसु पाडीये जो,
"उद्धव कहो तो ते पुरुष देखाडीये जो.
"घडी बेमां वांसलडी वागशे जो,
"व्हालो अम पासे आवी कांई मागशे जो.
"एम कहेतां सउ मने मग्न थई गई जो,
"उद्धव जोय छे ने प्रेमसमाधि थई जो.
"मिथ्या शीद हुं फुलुं छुं ज्ञानगाथमां जो?
"हरि दीसे छे ईयोना हाथमां जो?
"परम प्राणप्यारी ए अविनाशनी जो,
"ए छे सर्व स्वामिनीओ दया दासनी जो!

द. का. सं. १९३–४, ग. ३३.

८९. आ स्थाने कविए प्रेमसमाधि पामनार सर्व गोपिकाओने स्वामिनी एटले राधा कही छे. जेनो स्थूल देह मथुरामां हतो ते कृष्णना देहनो सिद्धसाक्षात्कार केवळ ए गोपिकाओने थयेलो वर्णव्यो छे एटलुं ज नही पण गोपिकाओए उद्धवने ते साक्षात्कार कराववानुं–"ते पुरुष देखाडवानुं"–कहीने प्रेमसमाधि लीधो एवुं कथ्युं छे, ए पुरुषना दर्शन प्हेलां वेणुनादनो क्रम दर्शाव्यो छे, अने प्रेमसमाधिना आवा फलने लीधे कृष्ण परोक्ष होवा छतां तेमने प्रत्यक्ष करवानी शक्तिने लीधे कृष्णनो अने तेमनो समागम ते वर्तमानमां जेम "अखंड" वगेरे कह्यो छे तेम सर्वदा गोपिकाओना "हाथमां" ज कहेलो छे. नवधा भक्ति पछीनी दशमा प्रकारनी भक्ति ते ए प्रेमसमाधि ज छे एम कविनुं हार्द छे. ए प्रेमसमाधिमां थता साक्षात्कारना विषयनी वीगत (खंड ७२) जे होय ते खरी पण भक्तिनो आ प्रकार एक जातनो योग ज छे एवुं कविनी दृष्टिमां स्पष्ट छे. कविनी दृष्टिनुं स्वरूप आम समजाय छे तो ए दृष्टिमां उभरायलां अन्य चित्रो श्रोताओ

माटे ते केवी भावनाथी खडां करे छे ते समजवाने पण अन्य साधननी अपेक्षा रहेती नथी. भक्तियोगना योगीने प्रेमसमाधि प्राप्त थता प्हेलां ए समाधिनां पगलां वेणुनादना श्रवण साथे संभळाय छे एवुं कविनुं वाक्य गोपिकामुखे उपर लखेलुं छे ते नादनो योगसाथेनो संबंध आपणे जोयो छे (खंड ७५) अने ते नादथी योगीनां बहिर्मुख इन्द्रियो अंतर्मुख थवा लागे छे ते वस्तुए गोपीओने पोताना भणी आकर्षवाने कृष्णे करेला नादने कवि उल्लेखे छे. ए नादथी आकर्षाई भक्तहृदय अन्य संसार छोडी कृष्णप्रत्ययमां लय पामे छे अने ते लय ए प्रेमसमाधि–ए तन्मयता–ए संसारमांथी मृत्यु अने अखंड रसभोग. आ अवस्थानो आनंद प्रकट अने पूर्ण गणी कवि अन्य योगने अने ज्ञानने तुच्छ गणे छे, अने ए चित्रना वर्णनने माटे कवि जे भाषाने योजे छे ते भाषा लौकिक शृंगारनी छे; पण तेनी भावना लौकिक शृंगारने आवरणरूप अने त्याज्य गणी (खंड ४२–४९) लौकिक देह विनानां केवळ ध्येयप्रत्ययरुप राधाकृष्णमां रमे छे अने ए ध्येय स्वरूपनी सर्व सामग्रीने " साभिप्राय " गणे छे अने ते ज प्रमाणे ए स्वरूपने पण गणे छे (खंड ३४–३५). आवी दृष्टिवाळो कवि प्रकट स्वरूपनो साक्षात्कार संप्रदाय प्रमाणेनो (खंड ७३ करे छे के ए स्वरूपमां पण पोते ज लखेला अभिप्राय प्रमाणे साक्षात्कार करे छे ते स्पष्ट समजवानुं साधन नथी. संप्रदाय प्रमाणेनुं ए स्वरूप शुद्धाद्वैतसिद्धान्तप्रदीपना कर्त्ताए अलंकाररहित अने यथाक्षरार्थ गणेलुं होय तो एवा साक्षात्कारप्रत्ययमां खडुं थतुं चित्रस्वप्नना लौकिक शृंगारमां जेवो दोष गणीये तेवा ज दोषनुं स्थान थाय छे, कारण तेमां अस्थूल पण सचेष्ट अवयवोना प्रत्यय छे. परंतु जे भावनाना अभिप्रायो अने भाषानां अलंकारादिक साधनो आपणा कविना हृदयने प्रदीप्त करे छे तेवी भाषानां जाळ भेदी ए

अभिप्रायो प्रमाणेनी भावनाओमां आवा प्रकट स्वरूपनो आत्मा जाणी ते आत्माने प्रेमसमाधिथी पामवानो उद्देश होय तो तो प्रेमभक्तिना शिखर सुधी च्हडवाना श्रमना प्रमाणमां फळनो उत्कर्ष पूजनीय गणावा जेवो छे. जे उच्च दृष्टिथी कविए नवधा भक्तिओनां स्थूल स्वरूपनां जाळ भेदी तेमनां सूक्ष्म मर्म प्रकश्यां छे (खंड ९८–६६) ते ज दृष्टिनो त्याग ए नवधा भक्तिना शिखररूप प्रेमसमाधिना विषयमां कवि, उक्त चेष्टाप्रत्ययोने स्वीकारीने, करता होय तो तो कविने विषये आपणे एवुं ज कहेवुं पडे के कवि महासागर तरी जई खाबोचीयामां डुब्या अथवा He passed from the Sublime to the ridiculous. आनो न्याय हवे करीशुं.

१३ प्रेमयोग अने तेनी परिभाषा.

९० दशमा प्रकारनी भक्ति, जेने आपणे प्रेमसमाधि कहीशुं ते नवधा भक्तिना सर्व प्रकारथी केवी रीते भिन्न छे ते कवि जणवे छे के

"नवधा खरी, पण प्रेमभक्तितणुं बळ छे सत्य;
"ते विना रसिकचूडामणि हरि वश न थाय ए सत्य.
"ज्यम पुष्प नानाजाति पर टकी मधुप ले क्षणुं गन्ध,
"पण कमळ वण बन्धन न क्यहुं एम समज उभयसंबन्ध.
"जीते अजीत, बांधे अबध, बळ पाश अतिशय प्रेम,
."हरि क्रीडाम्रृग प्रेमी कर्या, भुलव्या वचन श्रुतिनेम,
"कदी त्रुटे वज्रनी शृंखला, पण प्रणयपाश न त्रुटे,
"ज्यां दयाप्रीतम कृष्णने मन वेऊनुं बळ खुटे".

र. व. पद ६८.

भगवत्प्रीतिना दशे प्रकारमां सहजप्रीति क्रममां छे तेमां अने स्त्रीपुरुषनी सामान्य प्रीतिमां कवि एवो फेर जुवे छे के,

"रूप, द्रव्य, गुण त्रण ए कारण प्रीति थवानां क्हावे,
"ए त्रण विकाररहित सहज स्नेह श्रीकृष्णने भावे.

द. का. सं. ६४. भक्तिपोषण, छंद, ३४.

उपरना बे उतारा एकठा करी अर्थ करीए तो एवो सार नीकळे के (१) कृष्णप्रीतिमां रूप, गुण, अने द्रव्य ए त्रण विकारोथी रहित छे, (२) नवधा भक्तिथी क्षणभोग छे पण प्रेमसमाधिथी सतत भोग छे, अने (३) प्रेमसमाधिथी जामेली प्रीतिने त्रोडतां भक्तनुं अने साथे हरिनुं पण बळ खुटे एवी दृढ एकवार ए प्रीति बंधाई ते बंधाई. जे प्रीति कविमते आम रूपादिक विकारोथी रहित छे ते प्रीतिना शिखरसमाधिमां ए विकारोना प्रत्ययसाक्षात्कार कविमते इष्ट होय ए असंभवित नथी अने साक्षात्कृत प्रत्यय ए विकारो विना गमे ते अन्य पदार्थना होय पण विकारोना तो न ज होय ए अर्थ घटे छे. जे पदार्थनो क्षणभोग नवधाभक्तिमां थाय छे तेनो ज सततभोग प्रेमसमाधिमां थाय छे तो पछी कोईपण रूपादिरहित पदार्थनो जेवो ए क्षणभोग तेम ज सततभोग समजवो घटे छे. स्त्रीपुरुषना रस अने भोग जाते अथवा परबळथी तोड्या त्रुटे छे तेथी उलटी रीते सतत प्रभुप्रेममां तन्मयता जामे छे अने ते तोडवा प्रभु पण अशक्त छे. वेदान्तना "ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति" ए वाक्यना बोध पेठे प्रेमरसनो कवि तन्मयताना बोधमां "रसविद् रस एव भवति" एवुं कहेतो होय एम समजाय छे अने ए स्थिति एक वार पामेला जीव तेमांथी **न पुनरावर्तते** एम पण ए प्रेम तोडवामां प्रभुनी अशक्ति जणावतां बोधे छे. आ सर्व विचारतां कृष्णगोपिकाओनी प्रेमभावनानी गरबीओमां स्थूलशृंगारना प्रत्ययो खडा करनार वाक्योमां ए प्रत्ययोने मात्र अलंकारना अने परिभाषाना प्रयोजनथी ज कवि मुके छे एवुं समजाय छे. केवळ योगशास्त्रना कवियो पण भक्तिमार्गना जेवी ज परिभाषा अने अलंकाररचना

पोताना दुर्बोध अनुभवने प्राकृत मनुष्योनी बुद्धिमां उतारवा माटे योजे छे ए दृष्टांत उपर दृष्टि करीये छीये त्यारे तो आपणा कविये पण तेम ज कर्युं होय एवुं लागवानुं कारण मळे छे. जेम के योगीकवि धीरो योगसमाधि वर्णवतां "प्रकट पीयु". नुं दर्शन करावना जाय छे के,

"जेने पीयु मळवानो प्रेम होय ते आवो देश अमारे जो,
"आडुं अर्णवे उतरी नावडुं आवे छे आ आरे जो.
"दूर बतावे नाथने तेने प्रकट पास देखाडुं जो,
"एक सद्गुरुनी कृपावडे तेने ब्रह्मलोक प्होचाडुं जो.
"एक अचरज म्हारा देशमां गौवां ने सिंह रमे भेळां जो,
"अवळांनां सवळां थयां, करमदीये लाग्यां केळां जो.
"एक सदापुनम म्हारा देशमां, अमास भुवन नव आवे जो,
"शीत ने ताप व्यापे नही, एक बकरो बळदने धावे जो.
"एक अमृतरूप म्हारा देशमां, तेना भोगदार त्रिपुरारि जो,
"भरे वारि दोरीगागर विना सुरता सोहागण पणीयारी जो.
"एक अझड झडे पर्जन्य पडे, पृथ्वीनां पड रह्यां कोरां जो,
"प्होड्या हंसराय चोगानी चोतरे तेने अंगे न अडके फोरां जो.
"कंठ विना एक गाय नायका, चरण विना ते चाले जो;
"एक धीरसखी पीयु पास रमे, महानंद सुख म्हाले जो"

२ बृ. का. दो. ७७२.

धीरोभक्त पोताने प्रभुनी प्रिया गणी प्रभुसाथे रसभोग भोगवतो वर्णवे छे अने ए उपमा उपरांत समाधिकाळना पोताना अने ब्रह्मना योगने सामान्य लोकबुद्धिमां उतारवा गायसिंहनी, बकराबळदनी, अने फळ अने फळभोगी ईश्वरनी उपमाओ वापरे छे. **सोहम्** जाप करनार हंस–जीव–नी (खंड ७६) आ समयनी योगावस्थाने पणीयारीना, पर्जन्यना, अने नायकानां दृष्टांतोथी समजावी छे. आवा अनेक अलंकारो अने अनेक दृष्टांतो वाप-

स्थाने ठेकाणे पुष्टिपथनो कवि सर्वत्र कृष्णगोपीना अने कृष्ण-राधाना विहारनी परिभाषा योजे छे. अनेक दृष्टांतोथी अने उपमाओथी परिभाषकना श्रोताओनी बुद्धिने विक्षेप (खंड ५०-५८) थवानो संभव गणी तेनो प्रतीकार करवा उक्त प्रकारनी एक ज परिभाषाने संप्रदायना लेखको वळगी रह्या होय ए ज परिभाषाने पुष्ट करवामां दृढ रह्या होय एवुं अनुमान न करवा जेवुं नथी.

९२. ए ज प्रेमसमाधिमां साक्षात्कृत थयेला प्रत्ययने (खंड ९२) वर्णवती गोपिका पासे आदि कवि नरसिंह म्हेतो गवडावे छे के,

"सांभळ सहीयर, सुरत धरीने आज अनुपम दीठो रे,
"जे जोयो ते जोवा सरखो अमृतथें अति मीठो रे.
"दृष्टे न आवे, निगम जगावे, वाणीरहित विचारो रे.
"सत्य अनंत ज जेने कहीये, ते नवधाथी न्यारो रे;
"नवधामां तो नही नरवेडो, दशधामां देखाशे रे,
"अचवो रस छे एनी पासे, ते प्रेमी जनने पाशे रे.
"अद्वैत ब्रह्म अनुपम लीला, असंख्य जुगनो एवो रे,
"जोग जगन जप तप मुनि दुर्लभ माने तेवो मेवो रे.
"ज्यां लगी ज्यम छे त्यमनो त्यम छे, वधे घटे नही व्हालो रे,
"आवे ना जाये, जाय ना आवे, नही भर्यो नही ठालो रे.
"पूर्णानंद पोते पुरुषोत्तम अपरम गत छे एनी रे,
"ए पद क्षर अक्षरनी उपर तमे जो जो चित्तमां चेती रे."

'४ बृ. का. दो. २६. पद ७.

९३. अक्षरब्रह्मथी उपर रहेला पुरुषोत्तम ते आदि कवि आ स्थाने जे विशेषणोथी समाधिकाळे साक्षात्कृत, वर्णवे छे ते विशेषणोने स्थाने अन्यत्र जुदी ज भाषा योजे छे.

९४. एक स्थाने महावाक्यनी पृष्ट ९९ मां दर्शाव्या प्रमाणे योजना करी आदि कवि स्त्री भावनाने स्वीकारी पोते करेला साक्षात्कारने वर्णवे छे के,

"नीरख ने गगनमां कोण घुमी रह्यो, ते ज हुं ते ज हुं शब्द बोले !
"श्यामना चरणमां इच्छु छुं मरणरे कोई अहीयां नथी कृष्ण तोले.
"श्यामशोभा घणी, बुद्धि न शके कळी, अनंत ओच्छवमां पंथ भुली;
"जड अने चेतन रस करी जाणवो, पकडी प्रेमे सजीवन मुळी.
"जळहळ ज्योत उद्योत रविकोटमां, हेमनो कोर ज्यां नीकळे ताले,
"सच्चिदानंद आनंद क्रीडा करे, सोनाना पारणा मांही झुले.
"बतीवण, तेलवण, सूत्रवण, जो वळी अचळ झळके सदा अनळ दीवो,
"नेत्रवण नीरखवो, रूपवण परखवो, वणजिह्वासे रस सरस पीवो.
"अकळ अविनाश ए, नव ज जाये कळ्यो, अरध ऊरधनी मांही म्हाले,
"नरसंहीया ए स्वामी सकळ व्यापी रह्यो प्रेमना तंतमां संत झाले."

४. वृ. का. दो. २६ पद. ६.

"अरध ऊरध"—अधः ऊर्ध्व—नी मांही सूक्ष्म प्राणापान-रूप अथवा तेथी पण सूक्ष्मतर आघात-प्रत्याघातमय प्रवाह-प्रतिवाह-रूप (खंड ७६) प्रमाणे म्हालतो अने ते प्रवाह-प्रतिवाह-रूपने पण पोतानुं सोनानुं पारणुं करी दई तेमां झुलतो नरसिंहनो स्वामी नरसिंहने प्रत्यक्ष थाय छे. गगनमां-चिदाकाशमां-सोहम् शब्दनो साक्षात्कार ए स्वामी करावे छे तो "रविकोट" (अनंत कोटि सूर्यमंडळो अथवा रविरूप कील्लो) रूप पारणामां तेनी क्रीडा प्रत्यक्ष थाय छे. एवा अनंत उत्सवमां बुद्धि "पन्थ भुली" एवो उद्गार करतो नरसिंह कहे छे के आवा स्वामीने आवी रीते संतो प्रत्यक्ष करे छे ते काळे ए स्वामीने "प्रेमना तंतमां झाले छे," प्रेमसमाधिथी म्हाले छे—ते झालवाथी आ साक्षात्कारने संतो पामे छे.

९५. आ उत्सव जोवानुं साधन आदिकवि अन्यत्र ध्यानने गणे छे. "नेत्रने अंतर्वृत्ति करी सुरता लगाववी–पातंजलिनी भाषामां नेत्रदृश्य अंतःप्रत्ययनी एकतानता करवी–जेथी नाथ स्वर अने रूप एम बे भावे देखाशे. प्रथम तो मोरलीनो–वेणुनो–नाद संभळाशे, तेमांथी बीजो नाद प्रतीत थशे ते साद रूपे संभळाशे अने तेनी साथे बीजा अनेक झांझरी, झालरी, मृदंग, चंग, अने भेरीना जेवा नाद पण एकतालथी संभळावा लागशे. नादयोगना आवा अनेक साक्षात्कार थतां बीजी पासथी नेत्रयोगना प्रत्ययोनो साक्षात्कार थशे. "ब्रह्मव्रजवनवेली" देखाशे–ब्रह्म एटले अक्षरब्रह्म एटले दयारामे कहेलुं कृष्णसदन ते व्रज-वन–तेमांना वेलाओ प्रत्यक्ष थशे. तेना ललित कुञ्जोमां श्रीकृष्ण नित्य केलि करता प्रत्यक्ष थशे. आदिकवि प्रेमसमाधिनुं आ फल दर्शावी हजी वधारे बोले छे के आ साक्षात्कारकाळे श्रीकृष्ण "सुरत संग्राममां" विलसे छे एवुं आ ध्यानथी अंते जणाशे: ४ बृ. का. दो. २४, नरसिंहविलास, पद २. आ "सुरत संग्राम" नामनुं काव्य पण आदिकविए रचेलुं छे. ए नामना ग्राम्य अर्थनुं भाषांतर आ देशकाळ सांभळी शके एम नथी पण ए अने एवा अन्य शब्दोनी परिभाषा ज्यां लखाइ छे त्यां रहेवा देइ ए परिभाषा नीचे गुप्त रहेलां विषयरत्नने आपणे तपासीशुं.

९६. आदि कवि एक प्रसंग एवो मुके छे के गोपीओए कृष्णने आमन्त्रण कर्युं पण कृष्ण कहे के म्हारे पगे वाग्युं छे तेथी चलाय एम नथी–हाथी होय तो बेसीने आवुं. आ उपरथी नव गोपिकाओ एक बीजा उपर गोठवाई गई अने "नव-नारी-कुञ्जर" नामे प्रसिद्ध गजरूपे आ नारीओनो गज थयो. कृष्णने हजी पण तेमां न्यूनता लागी त्यारे हाथीनी सुंड, दन्तुसळ, अने कुम्भस्थळनी रचना राधाए पोताना अवयवोथी हाथीने शि-खरस्थाने करी अने कृष्णने अंकुश आप्यो तेनी साथे हाथी

वायुवेगथी चाल्यो अने कुञ्जमां गयो त्यां श्रीकृष्णे मथुरां जता प्हेलां छेली रासलीला करी: ३ बृ. का. दो. ३८–३९, गोविन्द-गमन, पद २६–२९. आ अंकुश अने गजारोहणनुं वर्णन म्हेतो करेछे के.

"कठिणमां कठिण, मृदुमां मृदु, एवो अंकुश कीधो रे.
" **सर्व प्रेम भेगो करी घडीयो, पछी अंकुश हरिने दीधोरे.**
"हरि न नासे माटे करी रचना, प्रेम–भाला सखीकर लीधारे'
३. बृ. का. दो. ३८.

आमां नवधाभक्तिसमूहरूप नव गोपिओनो कुञ्जर हरिना आमन्त्रण माटे अशक्त नीवड्यो दशमी प्रेमसमाधिरूप राधा शिखर स्थाने च्हडी त्यारे ज हरि ते उपर च्हड्या, ए भक्तिसमुच्चयनी गतिनो प्रेरक अंकुश हरिए लीधो, अने हरि पोते पण समाधिना आ समाधि काळना सततयोगमांथी नासे नही माटे तेमने वश राखवा बीजी सखीओए प्रेमभाला हाथमां लीधा. आ सततयोगमांथी सर्व मंडळ कुञ्जवनमां जई रासलीलामां योजायुं एटले सुधीनुं रूपक स्पष्ट छे. राधा ते प्रेमसमाधिकाळनी प्रीति–भक्ति–ए पण हवे स्पष्ट छे. एटला स्पष्टीकरणरूप साधनथी बीजी वीगतनुं पण स्पष्टीकरण थशे.

९७. कृष्णराधानो एकांत विहार ते प्रेमसमाधि पामेला एक ज भक्तने साक्षात्कारे प्रतीत थयेलो उक्त अनंत उत्सव छे. ए प्रेमसमाधि एक ज पामे छे त्यारे तेना ध्यानविधिनो अने तेना फळनो साक्षात्कार पण उक्त प्रकारथी म्हेते वर्णवेलो छे. भक्तिसमुच्चयकाळे नवधा भक्तिना भक्तोने शिर प्रेमसमाधि पामनार भक्त च्हडेछे त्यारे ते सर्व हरिसाथे रासलीला रमी शकेछे. रासलीलां ए आवी रीते सामाजिक भक्तिनी शिखर-भावना छे.

९८. रासलीलामां श्रीकृष्ण राधानी अने तेनी सखीओनी साथे रमेछे त्यारे सुरतसंग्राममां वळी बीजी भावना छे. नरसिंहनु

सुरतसंग्राम काव्य (४ बृ. का. दो १-२३) भक्तोना बे वर्ग पाडेछेः एक वर्ग गोपीओनो अने बीजो पुरुष भक्तोनो. गोपीवर्गनी सेनाने शिर सेनापतिनुं काम राधा करेछे अने पुरुषभक्तोना सेनापति कृष्ण छे. गोपीओ पासे कृष्ण दाणमार्गमां दाण मागे छे अने बळथी लेछे तेने तेम करतो अटकाववा राधा अने गोपीओ विचार करे छे. ते पछी कृष्ण पोतानी सेना साथे अने राधा पोतानी सेना साथे युद्ध करवा नीकळी पडे छे. युद्धना आरंभ प्हेलां राधा नरसिंहम्हेताने कृष्ण पासे विष्टि करवा मोकले छे अने कृष्ण राधा पासे जयदेव कविने मोकले छे. नरसिंह विष्टिमां फावतो नथी पण कृष्णनो संदेशो सावधानताथी लेई पाछो फरेछे, त्यारे जयदेव राधापासेथी केवळ मोहित थईने पाछो फरेछे. युद्धमां गोपीओ फावेछे पण कृष्ण मोखरे आवेछे त्यारे गोपीओ हारे छे; पुरुषभक्तो अने कृष्ण फावे छे त्यां राधा गोपीओनी व्हारे च्हडे छे अने कृष्ण सहित सउ पुरुषो हारी जई दीन दशामां आवे छे. राधाना पक्षमां रहेलो नरसिंह कृष्णने पकडवा लागे छे. पण अंते कृष्ण, बळराम, अने सुदामो त्रण जण युद्ध क्षेत्र छोडी न्हास्री जाय छे अने हरिवदनी राधा "हर हर" नी, जयगर्जना करती रणस्थळमां देश सर करी आवे छे अने गोपीओने बोध करे छे के हवे आ दीन थयेला पुरुष गोवाळीयानी सेनाने दुःख देशो नही. त्यां आदिकवि गाय छे के

"गोप उपाधिनो बोध जे राधीनो, मानीने सर्व कोई सीधी चाली"

४. बृ. का. दो. २३ पद. ७१.

उपाधिमां पडेला गोप भक्तोने वधारे नडशो नही एवो राधानो बोध थतां उपाधिहीन गोपी– भक्तो युद्धमांथी विरत थया एवो आ बोधनो आशय समजायछे. आ युद्धमां एक पक्षमां उपाधिवाळा ज्ञानी भक्तो कृष्णने शरणे रहेला छे अने उपाधिहीन प्रेमी भक्तो राधाने शरणे रहेला छे. जयदेव ज्ञानी भक्तो भणीथी विष्टि करे

छे. एना गीतगोविन्दना प्रथम श्लोकमां ए पोतानी स्त्री पद्मावतीने उद्देशी **पद्मावती चरणचारण चक्रवर्ती** ए चक्रवर्तीपणाने पूण तेनी उपाधि गणती राधा तेने कहे छे के "धिक्पद्मिनी काज तुं दास कहाव्यो ! पद्मिनी दउ अमो !" वगेरे (४ बृ. का दो. ९ पद २७). नरसिंह पोते तो राधाना ज पक्षमां छे तेने ज्ञानीभक्त-नी सेनावाळा बांधे छे त्यारे कृष्ण पोते तेने छोडावे छे. प्रेमी भक्तोने पोताना पक्षमां लेई प्रेमसमाधिनुं शिखर च्हडेली .राधा अने ज्ञानीभक्तोनो पक्ष लेनार कृष्ण ए बेनो सुरतसंग्राम नित्य मची रहेलो छे ते संग्रामना विलासनो प्रेमसमाधिथी साक्षात्कार थाय छे एम नरसिंह सूचवे छेः खंड ९५. नवनारीकुंजरने शिर च्हडेली प्रेमसमाधिरूप दशमी भक्तिरूप राधा ए कुञ्जरना कुम्भस्थळरूप पोताना अवयवो उपर श्रीकृष्णने अंकुश आपी बेसाडे छे अने घनकुञ्जमां जई रास रमे छे अने तेनुं रहस्य समजावतां स्थूल शृंगारनी भाषाने आदिकवि मात्र परिभाषारूपे ज वापरे छे ए स्पष्ट करवा हवे कांई वधारे विवेचन आवश्यक नथी.

९९. हवे आपणे आपणा प्रसंगना कवि दयारामनी भावना-ओने चर्चीशुं अने ए चर्चामां आदि कविनी भावनाओने साधन-भूत करीशुं, कारण ए आदि कविने दयाराम पुष्टिपथना सिद्धान्तोना बीजरूप गणे छे एवुं मानवानुं कारण आपणे जोई गया छीए.

१००. नवधा भक्ति करतां दशमी भक्तिनो उत्कर्ष उक्तप्रकारे आदिकवि जे कारणथी गणे छे ते ज कारण दयाराम आपे छे (खंड ९०. र. व. पद. ६८). ए भक्तिने माटे अमुक प्रकारनो प्रेमरस जोईए, अने ते प्रेमरस अधिकारी ज पामी जीरवी शके छेः र. व. पद. २६. १ बृ. का. दो. ८१०. पद ४. ब्रह्मज्ञान जेम वेदांत प्रमाणे अधिकारीने ज प्राप्त थाय छे तेम आ प्रेमरस पण अधिकारी ज पामे छे, अने अनधिकारीओ मळे तो तेनी वान्ति करे छे. जेवी

रीते कोई स्त्री पोताना पतिने छोडी पराया नर उपर आसक्त थाय छे, तेनुं एने व्यसन लागे छे, अने तेने ज ए देखी र्‌हे छे ते रीते आवरणरूप संसारने छोडी प्रभु माटे आवी बंठेली स्त्रीना हृदय जेवुं हृदय करी नांखी जारपरनी ए स्त्रीना जेवी प्रीति प्रभु उपर राखवी. आवी "जारप्रीति" प्रभु उपर राखवी कल्याणरूप छे. (र. व. पद ८४) अने संसारी जारप्रीत राखवी ए तो महान् दोष अने अनर्थ छे (१ बृ. का. दो. ८०६ ग. ३,).

"जेम नट दृग दोरमां, पणीहारीनुं बेडला मांह्य,
"चित्त परस्पर जारनुं, वळग्युं र्‌हे त्यांनुं त्यांह्य;
"तेम मन प्रभुमां नित्य देवुं, संसारमां साक्षीवत् रहेवुं;
"जगत जाणे ए छे जंजाळी, राख हृदे त्रिकमशुं ताळी."
(द. का. सं. ६२. भक्तिपोषण, कडी २१.)

१०१. कविनी गरबीओमां गोपीओने बंठेली जेवी, लोकलाजने न गणती, कृष्ण साथे व्यभिचारवासना राखती कविए पूरवेगथी गाई छे तेनुं मर्मस्थान आ उपरनी व्याख्याथी स्पष्ट थशे. आ देशनी भाषामां योगीओ जेने "सुरता लगाववी" क्‌हेछे तेवी ज भक्तियोगनी परिभाषामां आ "जारप्रीत" छे. भक्तनी आ "सुरता" नी परिपूर्ण दशाथी प्रेमसमाधि प्राप्त थायछे माटे ज भक्तिनी ए दशाने प्होंचेली गोपीओना संबंधमां आ परिभाषा योजी छे.

१०२. आ जारप्रीतिरूप भक्तियोगनी योगिनीओ पासे कृष्ण दाण मागे छे. तेओ दंहीमाखण वेचवा जायछे त्यारे कृष्ण दंही माखणना भाग लुटी लुटी खाय छे ने तेने पोते लेवानुं दाण कहीने लेछे. ए दाणनी परिभाषा समजावतां दयाराम कृष्ण पासे गोपीओने कहेवडावे छे के

"आपो दधिनुं दाण नागरी, ए लाग्युं मम चित्त;
"तमारे काजे नित्य हुं उभो, अर्पो तन मन वित्त.

"वृन्दावनमां धेनु चरावुं, मागुं गोरसदान;
"नाना खेल सखासंग खेलुं, पीयूष पीउ नृपयान.
"अलि ग्वालीनी ! महामत्त वचन ए बोलुं करी विचार;
"अचळ राज्य गोवर्धन म्हारुं, वृन्दावन मोझार.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"**चोरी करुं भक्तना चित्तनी** वळी दधि नवनीत;
"सखावृन्द सउ मित्र अमारा, महाराज रजनीत.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"कमळकोशमां वसे मधुप त्यम भूमि रहुं मोरार.
"दुध दहींनी नात बनावुं, वात करुं गोपाळ."

१३. प्रा. का. मा. २३३.

१०३ योगनी एक अवस्थामां इन्द्रियो अंतर्मुख थायछे ते इन्द्रियोरूप गायोने श्रीकृष्ण वेणुनादथी अंतर्मुख करे छे(खंड ७५) एटले व्हार दोडी जती अटकावी तेमणे अंतर्मुख रही चरवानी गोचर भूमिमां तेमने कृष्ण अने गोकुळना गोवाळो चरावे छे. ए गोवाळो वगेरे एमनुं सखामंडळ एवी संज्ञा आदि कविए ज्ञानी भक्तोने आपेली समजाय छे (खंड ९८). ए गोचर भूमिनो एक भाग गोवर्धन-गिरि छे तेने विषये श्रीकृष्ण उपरनी कडी-ओमां कहे छे के "अचळ राज्य गोवर्धन म्हारुं"–ए गोवर्धननी चोखुंट सीमाओमां रहेनार तथा आवजाव करनार उपर एटले इन्द्रियरूप गायो अंतर्मुख थइ चरे छे ते प्रदेशमां–चिदाकाशमां–कृष्णनुं अचळ राज्य छे. ए गायोनुं दोहन करनार भक्तो पासे तेमणे दोहेला गोरसनुं अने गोरसना बनेला पदार्थोनुं दाण कृष्ण लुटीने पण ले छे अर्थात् अंतर्मुख थयेलां इन्द्रियोमांथी ध्यान विषय थयेला प्रत्ययो–एकाग्र विषयो–(खंड६८–७०, ७२–७३) वगेरे नें पोताना भणी आकर्षी ले छे ए रहस्यनी परिभाषा समजावी कृष्ण गोपीओने उपर प्रमाणे कहे छे के "चोरी करुं

भक्तना चित्तनी; वळी दधि नवनीत.'' ज्ञानी भक्तो जेओ जगतमां कृष्णभक्तिना उपदेश करे छे तेओ कृष्णना सखाओ–सख्यभक्तिथी तेमने मळेला–छे तेमनी साथे मळी श्रीकृष्ण प्रेमी भक्तोनां चित्त आम चोरी ले छे माटे ज दाणी कृष्णनी सेनामां ज्ञानी भक्तोने अने राधानी दाण आपनारी सेनामां प्रेमी भक्तोने आदिकविए योजेला (खंड ९८) समजाय छे. ए सेनाओन संग्राममां ज्यारे ज्ञानी भक्तो हारे छे त्यारे नवधा भक्तिवाळा भक्तो तेमनां चित्त चोरे छे, ज्यारे ज्ञानीभक्तोमां कृष्ण सेनानी थायछे त्यारे ए भक्तो जीते छे ने नवधाभक्तोनां चित्त लुटाय छे, अने ज्यारे राधा युद्धमां च्हडे छे त्यारे श्रीकृष्णसहित सर्व ज्ञानी भक्तो हारी न्हासी जायछे–तेमनां चित्तने राधा लुटी ले छे. आ चित्तोनां आकर्षण-प्रत्याकर्षण अने आघात–प्रत्याघातरूप सुरतसंग्राममां ज्ञानीओना कृष्ण उपर आम प्रेमसमाधिने जय मळे छे. दयाराम "कृष्ण"ना "राधाकान्त"रूप स्वरूपने अने "अक्षरब्रह्म" स्वरूपने जुदां गणी अक्षरब्रह्म स्वरूपने कृष्णसदनने नामे ओळखेछे त्यारे अक्षरब्रह्मना पण अंतर्मां–पर भागमां–राधाकान्तनुं स्थान गणे छे. पण तेनां पदो वगेरेमां ईश्वरवाचक शब्दो वापरतां आवा विवेक करवा कवि भुली जायछे, पण सामान्य रीते गोपीओना संबंधमां ज्यारे कृष्णादिक संज्ञाओ ए वापरे छे त्यारे तेमनां प्रिय स्वरूपने ज उद्देशे छे. उपर आपेली कडीओमां ए प्रियस्वरूपने ज उद्देशेलुं छे अने तेने उद्देशीने कहेलुं छे के कमळकोशमां मधुकर बीडाय छे तेम मोरारिनुं आ प्रियस्वरूप भूमिमां बीडायुं छे एटले गोपिकाओमां तेनुं चित्त बन्धायलुं छे तेथी ते गोपीओनां चित्तमांथी पण चोरी करे छे ने उक्त प्रकारे दुधदंहीनी नात बनावे छे. बाकी अन्य उद्देशोने माटे तो ए "प्रभुदेह" धरे छे (१९ प्रा. का. मा. २३३, कडीओ ८८७–८८८). ए प्रभुदेह-अवताररूप अने क्षर-अक्षर

ब्रह्मरूप-ए सर्व भूमिकाओना मध्यबिन्दुमां राधाकान्तस्वरूप मधुकर पेठे रहेछे अने तेमांथी प्रेमसमाधिने पामनार योगी भक्तना ध्यानबिन्दुमां ए स्वरूपनो साक्षात्कार थायछे. आ मध्यबिन्दुमां राधाकान्तना आवा वासने उद्देशीने अखिलरूपना "वामपद्मां बिन्दुरूपे वसे राधाकान्त" (र. व. पद १२; ४) एवुं कविए गायेलुं समजाय छे. जेवी रीते मानवादिक शरीरमां इडापिंगला नामनी वाम दक्षिण नाडीओ छे तेमां इडा अथवा चन्द्र नाडी स्त्रीरूप छे अने पिंगला अथवा सूर्यनाडी पुरुषरूप छे तेवां ज वाम दक्षिण अंग संप्रदायमां मानेलां समजाय छे. जेम योगीना ध्येय पदार्थ तेना ध्यानबिन्दुमां जणाय छे (खंड ७१) तेम राधाकान्त अखिलना वामपद एटले वामांगमां बिन्दुरूपे प्रतीत थायछे अने ए बिन्दुमांथी भक्तियोगना प्रेमसमाधिकाळे भक्तना ध्यानबिन्दुमां ए राधाकान्तनो अने तेना विहारनो साक्षात्कार थाय छे. आ प्रमाणेनी भावना आपणा कविना ध्यानमां कांइक होय एम एना समग्र निरीक्षणथी लागे छे.

१०४ राधाकृष्णना "रूप" मां कविनी आवी ज भावना जणाय छे. एक पासथी कवि गोपीओना प्रेमने "रूप" वगेरे विकारोथी रहित गणे छे (खंड ९०) अने बीजी पासथी पुरुषोत्तममां रूपनो आरोप इष्ट गणी कहे छे के तेना "रूप विना कांइ नही सुखकारी जी" (र. व. पद ३२, २) अने "रसिकने रूप रसाळ प्रिय" अने "जन दयाप्रीतम कृष्णमनमोहना राधारूप" (र. व. पद ९६; ६, ८). जे रूप कविने इष्ट नथी ते स्थूलरूप जे नेत्रादिक जोइ शके छे ते. जे रूप कविने इष्ट छे ते कवि "रूपलीला" नामना लघुकाव्यमां चर्चे छे. कृष्णनी जात अने रूप केवां छे ते राधाए जाणवा इच्छेलुं तेना उत्तरमां "जात जाणतां जात ज पामो, रूप जाणतां रूपभंडार (१३ प्रा. कां. मा. ५१ पद ६) अर्थात् कृष्णनां जात अने रूप जाणतांनी

साथे ज राधा ए जातनां अने ए रूपनां थइ जशे—तन्मयता पामशे. **ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति** वाक्यना जेवा ज आशयथी प्रेमसमाधिथी प्रेमरूप हरि तन्मय थवा निर्मेली राधाने आ उपदेश छे. अथवा ईशने जोवा पामतां अनीश जीव ईशनुं साम्य पामेछे ए **द्वासुपर्णा** वाळी श्रुतिने अनुसरी राधारूप भक्तहृदय कृष्णरूप थइ जाय छे.*

१०५ आवी जातनी तन्मयता पामवानुं स्थान "सघनकुंजमां मनहर शय्या" छे त्यां राधा जाय तो कृष्णनां जात अने रूप जाणे अने तेनी ज साथे ते रूप अने जात पामे: १३ प्रा. का. मा. ५१. पद ५. अर्थात् ब्रह्मनाडी अने ब्रह्मरन्ध्रादिक जे स्थानोमां योगी ध्यानबिन्दुने पामे छे, जे बिन्दु योगी अने तेना ध्येयसत्त्व उपरांत त्रीजा सत्त्वने अगम्य छे, जे बिन्दु रमणीय अने घन लताओना समागमथी रचायला "सघन कुंज" जेवा स्थानमां ध्याता अने ध्येयना समागम माटे शय्या पेठे तैयार थइ रहे छे, ते स्थानमां अने ते बिन्दुमां राधायुक्त थाय तो नित्यकृष्ण अखिलना वामपद्मांथी आ ध्यानबिन्दुमां आवी भक्तने रस-भोग आपे. राधाकृष्णनी रूपादिक सामग्रीने साभिप्राय गणनार कवि भक्तियोगना आवा समाधिस्थाननुं चित्र आपवा लौकिक-शृंगारनी परिभाषाने वापरे छे पण ए परिभाषारूप माटी नीचे आवी गुप्त गंगानो सतत प्रवाह छे आवी ज सघन शय्याने "कील्लो" (castle) कही तेमां प्रेमसमाधि पामनार पाश्चात्य योगिनी सेंट थेरीसाए दशधाना जेवी सप्तधा भक्ति वर्णी छे.

१०५. गोपिकाओनां वस्त्रहरणना प्रसंगमां तेमने सर्व उपाधिओथी—सर्व आवरणथी—मुक्त करवानो आशय छे. कविए "स्वभाव बदलावनार" गणेली यमुनामैयामां स्नान करवा पेठेली स्त्रीओने आम निवारण करवानुं कारण भक्तिपोषक हरिना अनुग्रह विना बीजाथी बने एम नथी एवी भावनावाळा भागवत-

* जुवो सरस्वतीचंद्र भाग ३, पृष्ठ १२५.

कारने प्रेमरसना प्रथम पानने माटे आ परिभाषा जडी. सुविरक्त थयला ज्ञानीने जिज्ञासा अने मुमुक्षुताने मार्गे दोरनार गुरुनी अपेक्षा र्‌हे छे; पण सुविरक्त उपाधिमुक्त प्रेमी भक्तने हरि पोते ज पोताने मार्गे प्रथम वेणुनादथी बोलावे छे, पछी पोताना ज स्वरथी साद करी बोलावे छे, पछी पोतानुं मुख देखाडे छे, पछी कंइक संभाषण करवा जेवुं करे छे, अने क्रियाओथी भक्तनां अंतर्मुख श्रवण अने नेत्र पासे आंतर प्रत्ययरूपे हरि घडीक प्रत्यक्ष थई भक्तने ललचावे छे तो घडीक परोक्ष थइ भक्तने विरहातुर करे छे अने विरहातुरनी पासे हरिने साधवा पुरुषप्रयत्न करावे छे. ज्यां सुधी योगीनी ध्यानावस्था परिणाम पामी समाधिदशाने पामती नथी त्यां सुधी तेना ध्याननुं फळ आवुं छिन्नभिन्न थाय छे. प्रेमयोगनी दशावाळा भक्तनी आ सर्व दशाओ आपणा कविराज सूक्ष्म अनुभवथी वर्णवे छे अने विस्तारे छे त्यारे एना अनुभवहीन श्रोताओ एनी श्रृंगारपरिभाषा विना अन्य समजवानी अशक्तिने लीधे भ्रान्त थाय छे. बाकी कवि तो आ योगदशाना क्रम स्पष्ट दर्शावे छे अने "महीयारी मळी चाली मही वेचवा" नी गरबीमां कवि गाय छे के प्रथम तो

"एवामां श्री गोवर्धननी तळेटीमां
"अंतर्यामीए कीधो मोरलीनाद जो;
"ते पछी गाय मिषे गिरि च्हड्या गोपाळजी,
"समजण पडवा लांबो कीधो साद जो;"

अने सखीओ आकर्षाई ने

"आवी त्यां सउ ज्यां अलबेलाजी हता,
"सामासामी मळ्यां नेहनां नेण जो;

अने ते पछी दाण मागवाने माटे हरि राधानो पालव झाले छ अने एनो मार्ग रोके छेः द. का. सं. १७३–१७५ ग. १. राधा दाण आपे छे–एनुं चित्त चोराय छेः द. का. सं. १७५ ग.

२. कडी ११. ए कडीमां ए "जुगल स्वरूपनुं ए पवित्र चरित्र" गाइ पोतानी कृतार्थता गणे छे. आदिकविए सुरतसंग्राममां कृष्णने जीतनारी राधा पासे आपणो कवि कृष्णना चित्तने चोरावे छे. अने "साचुं माननी रूपाळी शी राधिका जो" अने "सांभळ वदन म्हारुं कृष्ण कहे कामिनी" ए बे गरबीओ (द. का. सं. १७७–१८०; ग. ४, ५) कृष्ण पासे गवडावे छे तेमां ते राधाने कहे छे के

"म्हारे ठरवानो ठाम त्हारी जातडी जो"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"भूषण जगतनुं हुं, तुं म्हारो श्रृंगार छे जो,
"आपण बेनो दास दयाने आधार छे जो."

१०७ समाधिकाळ सुधीनी योगदशामां साक्षात्कार थनार विषयना आ प्रमाणेना क्रम वर्णवतां भक्तना अने हरिप्रत्ययना परस्पर आकर्षणविधिमां कवि अनेक वाग्विनोदना मशाला उमेरे छे तो घडीमां प्रत्यक्ष अने घडीमां परोक्ष थता साक्षात्कारो (खंड १९६) ना संबंधमां हरिने दक्षिण नायकनुं रूप आपे ते सर्वमां कविने पोतानो कविस्वभाव प्रेरेछे एटलुं लक्षमां राखी तेना बाकीना उद्गारोनुं नवनीत प्रेमपुष्टिनां रहस्यथी ज भरेलां जाणी चाखवानां छे.

१०८ रासलीलाना लेख माटे दयारामकृतकाव्यसंग्रह पृष्ठ १६८–१७०, २१७ (पद ७२), ६३१ अने ६३२ वांचवा जेवां छे, परंतु ते तेम प्रेमसमाधि पामेला भक्तना साक्षात्कार विषयोनो उल्लेखो, आ बे दशाओना प्हेली दशाओमां कवि जेवा अनुभवना उद्गारो करे छे तेवा उद्गारोथी लगभग रहित छे. आ बे शिखरदशाओने माटे तो गुजराती साहित्यसृष्टिमां आपणा आदिकविना ज उद्गारोमां परिपाकदशानां चित्रो छे अने तेना नमुना आपणे जोया छे. ए बे कवियोना अनुभव, ए बेनां हृदय,

ए बेनी ज्वालाओ, ज्यां सुधी लोक भक्तिरसना आस्वाद करता त्यां सुधी पूजातां अने तेमना कीर्तिदेह पुरुषोने तेम स्त्रीओने, वृद्धोने तेम युवकोने, पवित्र अने पूजनीय लागता. ए कीर्तिदेहना अने अक्षरदेहना प्रसाद ए पूजकवर्गने स्वादनीय, पथ्य, अने श्रेयस्कर लागता. मातापिताना अने स्वामीओना देखतां तेमना शृंगारपरिभाषावाळा लेख स्त्रीओ गाती, पण कविओनी अने आ सर्वेनी भावनाओ समान वृत्तिनी होवाथी कोइने ए स्त्रीओनां गावाना पदार्थोमां कोई शब्द वर्ज्य लागतो न हतो अने कोइना श्रवणमां के हृदयमां अपवित्रता पेसती न हती. केवळ वत्सल-भावथी भरेलां बाळकोना हृदयमां पोतानुं वय गमे तेवुं छतां माता-पिताना दम्पतीभावविषये तर्क सरखो उठतो नथी अने पोताना जन्मविधिना चित्रनी लेखा पण तेमनी बुद्धिमां दोराती नथी तेम आ बे कविओ पोताना युगमां लोकनी दृष्टिए गुरुरूपे पूजनीय वसता अने तेमना उद्गारोमां पवित्र भावनाओ ज शोधाती. ए युग गयो अने बीजो युग बेठो छे. भावनाने स्थाने व्यवहार, बुद्धि, अने तर्क प्रतिष्ठा पाम्यां छे. आवा युगमां आ कविओना कीर्ति-देह ध्वस्त थइ अपकीर्तिदेह बंधाय नही ए ज आ युगनुं भाग्य गणवा जेवुं छे. पण नवा युगमां आ सर्व साथे न्यायबुद्धिनो पण जन्म छे अने भक्तकविओनी भावनाओ सांप्रत युगमां राज्य न करे पण ते भावनाओनां रहस्य अने विस्तार समज्या विना ए कविओनुं गुणगान के निन्दा करवाथी दूर रहेवुं एटली न्यायबुद्धि प्रवर्तशे तो भविष्यमां आपणा पूर्वजोना पुण्यसंचयना शोध थशे तेमां आ म्हारा जेवा प्रयत्न "फुल नही ने फुलनी पांखडी" जेटली पूजा पेठे स्वीकाराय अने आटला अल्प निरीक्षणना आरंभ वधारे समीक्षण अपाणा विद्वानो पासे करावे ए आशा मां गुर्जरसाहित्यना पोषको संमत थशे एवी श्रद्धा छे.

१४ प्रेमसमाधि अने सिंहावलोकन.

१०९. प्रेमयोग अने तेनी परिभाषा समजवानो प्रयत्न आपणे करी रह्या एटले आपणा कविनुं ते विषयमां सत्त्व दृष्टिगोचर करीशुं.

११० कविना शृंगाररसना प्रकरणमां खंड. ८४–८९ मां आपणे जोयुं छे के रसशास्त्र, योगशास्त्र, ने प्रेमभक्तिशास्त्र ए त्रणेनी मेळवण करी कविए एक नवुं शास्त्र विस्तार्युं छे. पुष्टिमार्गना ग्रन्थो वर्तमान गोस्वामीयोनां मन्दिरमां हशे पण प्रसिद्ध थया नथी अने शोधाया नथी, एटले ते ग्रन्थोमांथी कविए केटलुं लीधुं छे अने कविनी पोतानी रचना केटली छे तेनो विवेक करवानुं साधन म्हारी पासे नथी. परंतु ए ग्रन्थो उपरांत कविना हृदयमांथी ज केटलीक ज्वालाओ उद्भव्यानां अनुमान करवानां कारण ज्यां जणायां त्यां आपणे जोयां छे, अने विशेष करीने प्रेमसमाधिमां थता साक्षात्कारना विषयमां कवि पोताना संप्रदायने नीचे मुकी जातशक्तिथी उपर चढ्यानुं अनुमान आपणे कांइक कर्युं छे. उक्त शास्त्रोना संमेलनथी जे नियमोमां अथवा सिद्धान्तोमां पोताना कवित्वने मेळवी कवि स्पष्ट करे छे तेवो भाग आदिकविए रचेलो नथी. कविना शृंगारलेखो ए नियमोनां अने सिद्धान्तोनां दृष्टान्तरूप छे अने ए सर्वना संबन्ध अने अन्वय एकठा करी बेसाडवाथी कविना शक्तिपातनुं जे चित्र खडुं थाय छे तेनी कांइक रेखाओ जोवा आपणे प्रयत्न करेलो छे. राधाकृष्णनी प्रतिमामां अने यमुना, तुलसी, आदि स्थूल सामग्रीओमां प्रकट वस्तु पाछळ गुप्त रहेला अभिप्रायोने कवि शोधे छे अने ए अभिप्रायो प्रमाणे भक्त हृदयने घडे छे. ए प्रतिमाने बाह्यध्यानविषयरुपे कवि पूजे छे तो तेने ज अनुसरी कृष्णावतारना स्वरूपने आंतरध्यानविषय करवानी योजनाने दर्शावे छे. ए आंतरध्यानबिन्दुमांथी नवी योगप्रतीतिओने उद्भूत थती कवि देखे छे तेवी उत्कट

શ્રૃંગારરૂપે પોતાના કવિત્વમય ઉદ્ગારોમાં ઉતારે છે. અને અંતે પ્રેમસમાધિના વિષયમાં અવગાહન કરવા પ્રયત્ન કરે છે ત્યાંસુધી આદિકવિના લેખોનાં રહસ્ય સમજવાની સામગ્રી દયારામ પુરી પાડે છે.

૧૧૧. પ્રેમસમાધિના વિષયમાં આ આપણા પ્રાચીન કવિઓમાંના અન્તિમ કવિનું અવગાહન ઉપરઉપરનું છે અને આદિકવિ તે વિષયના મર્મભાગને પ્હોચે છે એવું ઉપર મ્હેં સૂચવ્યું છે.

૧૧૨. જે બ્રહ્મરન્ધ્રાદિક સ્થાનોને કૃષ્ણભક્ત કવિઓ "સઘનકુઞ્જ" ને નામે ઓળખે છે (ખંડ ૧૦૫) તેમાં એક ભક્ત જીવ એક કૃષ્ણનો સાક્ષાત્કાર પામે છે અને રાધારૂપે કૃષ્ણરૂપ પામે છે (ખંડ ૧૦૩-૧૦૪), તેમાં જ એનું ચિત્ત ચોરાય છે (ખંડ ૧૦૬), તેમાં જ કૃષ્ણને ઠરવાનું એક ઠામ એ રાધા થઇ જાય છે (ખંડ ૧૦૬), તેમાં જ ભક્તિસમુચ્ચયને કાળે કૃષ્ણ ગોપીઓના પ્રેમભાલાથી બંધાય છે અને તેમની સાથે રાસલીલા રમે છે (ખંડ ૯૬–૧૨૩–૧૨૪), તેમાં જ આદિકવિ "અનંત ઉત્સવ" પ્રત્યક્ષ કરે છે અને તેના "પંથમાં" ભુલે છે અને તેમાં જ એ કવિનો સ્વામી "પ્રેમતંતમાં ઝલાય" છે (ખંડ ૯૩–૯૭), તેમાં જ એ કવિ અનંત અક્ષરાતીતને અનેક યુગો થયાં એવો ને એવો દેખે છે અને તે પ્રેમીજનને અચ્યુત રસ પાય છે તે પીયે છે (ખંડ ૯૨), તેમાં જ યોગી ધીરો પીયુને મળે છે (ખંડ ૯૧), તેમાં જ અજિત અને અબધ હરિનું ભક્તને હાથે બન્ધન અને ભક્તનું હરિને હાથે બન્ધન થતું દયારામ દેખે છે (ખંડ ૯૦), તેમાં જ કૃષ્ણ ગોવર્ધન ઉપર ચ્હડી વેણુનાદ કરે છે ગોપીઓને સાદ કરી બોલાવે છે, અને તેમની સાથે દક્ષિણ નાયક જેવી ચેષ્ટા કરી "કિતવતા" આદિ આરોપનો પાત્ર થાય છે (ખંડ ૧૦૬–૧૦૭)—અને તેમાં જ આદિ કવિ ધ્યાનદ્વારા શ્રવણયોગથી રાસલીલાના અનેક અનાહત નાદોને અને નેત્રયોગથી કૃષ્ણની નિત્યકેલિને પ્રત્યક્ષ કરે છે અને તે કેલિમાં શ્રીકૃષ્ણનો

सुरतसंग्राम (जेनुं वर्णन तेना एक काव्यमां छे खंड ९८) पण ए कविने प्रत्यक्ष थाय छे (खंड ९५).

११३. जे भक्त जीवो आवी सृष्टिमां विहार कर्या करे छे तेमनी अने अन्य जीवमात्रनी सृष्टिओ जुदी छे एवी आपणा कविए करेली उत्प्रेक्षा (खंड १९) हवे स्पष्ट थाय छे. आ अन्य जीवो क्षरब्रह्ममां वसे छे– तेना अंश छे– अने भक्त जीवो अक्षर-ब्रह्ममां तेम नित्य कृष्णरूपमां वसे छे. क्षरब्रह्मना जीवो अक्षरब्रह्मरूप नियांमक कारणशक्ति ईश्वरना नियममां छे (खंड १८). अक्षर ब्रह्मनी चारे पासे क्षर ब्रह्म, सूर्यनी आसपास तेज सर्या करे तेम, प्रवाहरूपे सर्या करे छे, अने मध्यनो सूर्य गोळाकार देखाय छे तेथी तेना स्वरूपनी भ्रांति थाय छे पण स्वरूप तो जुदुं ज छेः र. व. पद ३१, ५, ६. ए "अक्षरधाम" –अक्षरतेज–अक्षरब्रह्म–नुं स्वरूप कूटस्थ छे एथी तेना कूट–एरण–उपर–क्षरब्रह्म क्षर्यां करे छे पण ते एरण एवी ने एवी रहे छे. र. व. पद ३१; ७. शालिग्रा-मनी प्रतिमा आ कूटस्थ अक्षरधामनी सांकेतिक छे, अने ए प्रति-माना कोमळ अंतर्भागमां " राधारमण " नी स्थितिनो संकेत छे तेम अक्षरब्रह्म अथवा कृष्णसदनमां राधारमणनी प्रकटता छेः र. व. पद ३१; ७, ८. राधारमण, क्षर अने अक्षरब्रह्म मळी " अखिल " रूप थाय छे. कवि घडीकमां अखिल ने घडी-कमां राधारमण ने घडीमां नटवर तो घडीमां रसाळ कहे छेः (खंड १७, १८). ते जे हो ते हो. राधारमण भक्तो साथे नट्टक्रीडा करे छे, शिव तो दक्षिण हींदुस्थानमां नटेशने नामे ज ओळखाय छे, शक्तिनुं नृत्य पण सुप्रसिद्ध छे, तो ईश्वरनी सर्व भावनाओना सरवाळारूप 'अखिल' नटवर गणाय तो तेपण सम-जाय एवुं छे. आपणा कविनी भावना संबंधे आपणे जाणवा माटे एटलुं बस छे के क्षरब्रह्मरूप आवरणने भेदी भक्तसमाज, तेमांना मध्य भागमां बे भागे व्हेंचाय छे तेमांनो एक भाग ज्ञानी भक्तोनो

छे ते अक्षरब्रह्ममां मग्न थाय छे अने बीजो भाग प्रेमी भक्तोनो छे ते राधारमण एटले प्रेमभक्तिना पोषक कृष्णमां मग्न थाय छे.

११४. ईश्वरने ज्ञानी भक्तो ज्ञानादिक साधनोथी पामवा आत्मप्रयत्न करे छे अने ए कूटस्थ अक्षरब्रह्मनी एरण उपर एक पास क्षर पदार्थो घडाई घडाई खर्यां करे छे तो बीजी पास ज्ञानी भक्तजीवो ए एरणने वळगी रही ते उपरना अक्षरधाममां भळे छे. आथी बीजी रीते प्रेमी भक्तजीवो साधनहीन होवा छतां ए अक्षरधामना पण "धामी पुरुषोत्तम" मां (र. व. पद ३१; ७) सहज प्रेमने बळे आकर्षाय छे अने ए पुष्टिपुरुषोत्तम तेमनी भक्तिनुं पोषण करी तेमने पोतानामां आकर्षी ले छे. आथी जेम ईश्वरना नियामक स्वरूपमां कूटस्थभावना राखी छे तेम तेना प्रेमस्वरूपमां रसात्मक भावना राखी छे. ईश्वरना रसस्वरूपनुं ध्यान करवानो विधि आदिकवि दर्शावे छे के "जड अने चेतन रस करी जाणवो पकडी प्रेमे सजीवनसुळीः" खंड ९४. हरिनी सर्वात्मभावनाना एकाग्र ध्यान साथे "पीयुनी ट्हेल" नांखवानो प्रकार आत्मनिवेदन भक्तिमां दयाराम बतावे छे ते ज भावनामांथी ते पछी प्रेमसमाधिनो आदर थाय छे एवा ज आशयथी उक्त वाक्यमां आदिकवि कहे छे के जड अने चेतन पदार्थमात्रमां रसरूप हरिनी भावना करवी, अने ते पदार्थोमां नवो जीव आणवानी प्रेमरूप सजीवन-सुळी वापरवी. आम करनारने हरि रसरूपे– प्रेमरूपे– प्रत्यक्ष थाय छे, हरिनुं ए स्वरूप एक देशमां छे ने बीजा देशमां नथी एम नथी. आज छे काल नथी एम नथी, पण सर्व देशकाळमां– सर्वत्र सर्वदा– हरिनुं ए रसरूप पोतानुं काम कर्या करे छे. ईश्वरनुं अक्षरब्रह्म स्वरूप नियामक शक्तिरूपे ज्ञानथी जोवाय छे तेनाथी पण उंडाणमां आ रसरूप नित्य कृष्ण मृत्यु पामेला अने जीवता प्रेमी भक्तोनां सूक्ष्म शरीर साथे नित्य विहार कर्यां करे छे, अने जीवता

ભક્તો પ્રેમસમાધિથી એ વિહારને પ્રત્યક્ષ કરી શકે છે એટલું જ નહી પણ તેમાં ભાગ પણ લેઇ શકે છે. એ વિહાર કેવા કેવા પ્રકારે થાય છે અને તેમાં કેવી કેવી રીતે ભાગ લઇ શકાય છે તે આપણે હમણાં જ જોયું છે (ખંડ ૧૧૨). એ વિહારમાં એક પાસ રસશક્તિરૂપ અથવા રસરૂપ કૃષ્ણ હોય છે તો બીજી પાસ આ મૃત્યુ લોકમાં એ રસશક્તિના અથવા રસના પ્રવાહને આકર્ષે અને તે જોઈ શકનારને આત્મમય-રસમય- કરે એવી શક્તિ પ્રેમી ભક્તોના પ્રેમમાં હોય છે અને ભક્તોને, એ શક્તિસમુચ્ચયને, તેમ જ ભક્ત જીવોને પોતાને રસોદ્બોધક શક્તિને નામે દયારામે ઓળખ્યા છે- (ખંડ ૩૪) એ ઉભય શક્તિઓ એક રૂપ છે અને કોઇ વાર રસશક્તિ પ્રધાન દેખાય છે-આકર્ષક દેખાય છે-તો કોઇ વાર રસોદ્બોધક શક્તિ પ્રધાન અને આકર્ષક દેખાય છે. અને તે વાતનું રૂપક કથતાં કવિ કહે છે કે ઘડીમાં રાધા કૃષ્ણ થાય છે અને ઘડીમાં કૃષ્ણ રાધા થઇ જાય છે (ખંડ ૩૪). રાધાકૃષ્ણના શૃંગારમાં આ રૂપકનો વિસ્તાર કરેલો છે તેમાં ભક્ત કવિઓ નિરંકુશ થાય છેઃ જુવો દ. કા. સં. ૨૧૭ ગ. ૭૧.

૧૧૫. આપણા કવિએ પોતાની પાંખ કેટલી ઉંચી ઉડાવી છે તેની તુલના કરવાને માટે તેના કાળના લોકની સામાન્ય દૃષ્ટિ ઉપર એ પાંખ કેટલે ઉંચે ઉડી હતી તેનું માપ લીધા વિના થાય નહીં. આવું માપ લેવાનો પ્રયત્ન આજના આપણા આરંભથી જુદે માર્ગે અને જુદાં સાધનોથી કરવો પડે માટે આપણે તે પડતો મુકીશું. કવિના કાળના બીજા કવિઓની પાંખો કરતાં તો કવિની પાંખ ઉંચે ગઈ હતી અને એ કવિઓમાં એની તુલના થઈ શકે એવું કોઇ નામ નથી. સામાન્ય રીતે એમ કહીએ કે આપણા આદિ કવિ અને આ અન્તિમ કવિ એ બે જણ પોતાના યુગોની વચલા દીર્ઘ કાળની બે પાસ ભક્તિમાર્ગનાં જે શિખરો રચી તે ઉપર પોતાનાં સ્થાનક સાચવી બેઠા છે તે શિખરો વચ્ચે તેનાથી

अर्धी उंचाइनुं पण शिखर कोइ कविए देखाड्युं नथी. प्रेमानन्दादिक महाकविओ वच्चे थइ गया, पण आ बे भक्त कवियोनाथी तेमना विषय केवळ भिन्न हता. आथी मात्र एक विषयवाळा आदि कवि अने अंतिम कविना सत्त्वनी तुलना ज बाकी रहे छे. तेमां पण कविरूपे एमनी तुलना करवानी नथी, कारण तेम करतां अति विस्तार थाय एम छे एटलुं ज नही पण केवळ कवि करतां भक्तकविरूपे ज आपणा कविना अक्षरदेहनुं आपणे निरीक्षण करेलुं छे.

११६. आटली तुलनानो पूर्वार्ध आपणे करी गया छीये (खंड ११०), अने उत्तरार्ध बाकी छे ते संक्षेपथी करी लेईशुं. प्रेमसमाधि ए उत्तरार्धनो विषय छे. तेनां प्रकरण आपणे गणी गया छीये (खंड ११२). तेनुं वर्गीकरण आ प्रमाणे थशे.

(१) आपणां संस्कृत नाटकोमां नान्दी अने सूत्रधार नटीनो देखाव श्रोताओने अने द्रष्टाओने नाटकना प्रसंगने माटे तैयार करे छे माटे तेने पूर्वरंग कहेवामां आवे छेः **पूर्वरङ्गः प्रसङ्गाय नाटकीयस्य वस्तुनः ॥** इंग्रेजी नाटकशाळामां नाटकारम्भ प्हेलां गानवाद्यादिक पूर्वरंगने मुकाय छे अने ते पूर्वरंग overtures कहेवाय छे. पूर्वरंग अथवा overtures समाप्त थाय तेनी साथे नाटकनां पात्रने माटे पडदो उपडे छे अने नाटक सांगोपांग भजववानो आरंभ थाय छे. आ ज रीते प्रेमसमाधिना पूर्वरंगरूपे वेणुनाद, कृष्णस्वर, वगेरे अनेक रमणीय अनाहत स्वर प्रथम संभळावा लागे छे अने मेघनी गर्जना मयूरने उन्मुख करे तेम प्रेमयोगीनी वृत्तिओने आ पूर्वरंग करे छे. आ ज पूर्वरंगने, एक योगी कवि कोई महाराजानी स्वारी आवता प्हेलां तेनां नोबत नीशान संभळावा देखावा लागे तेनी साथे, सरखावी क्हे छे के

"ददामां वाग्यां देवनां, नाथतणां नीशान,
"पूर्वना पाछा नही फरे, नर प्होच्या निर्वाण.

नोबत वागे तेम वेणुनाद अने कृष्णस्वर दूरथी संभळाय छे, अने नीशान देखावा लागे तेम चक्षुने चमकावनार हरिवदन प्रेमयोगीने प्रत्यक्ष थाय छे जेने उद्देशी आदि कवि गाय छे के

"हळवे हळवे हळवे हरिजी म्हारे मन्दिर आव्या रे."

१ बृ. का. दो. २०. पद २८.

परंतु आ प्रत्यक्षता सततवाहिनी धारा जेवी होती नथी. धंधादारी पुरुषने धंधो करतां करतां समाचार मळ्या होय के घेर कोइ मांदुं छे अथवा कोइ स्नेही आव्यो छे ते उपरथी धंधानुं काम आटोपी लेइ ते घेर जवानो निश्चय करे पण काम आटोपतां आटोपतां वच्चे वच्चे गमे तेवे समये घरनो मंदवाड अथवा घेर आवेला स्नेहीनुं मुख सांभरी आवे, ते ज रीते पूर्वरंगकाळे वारेघडीए अनुकूळ तेम प्रतिकूळ समये ढंगधडाविना हरिमुखनो साक्षात्कार भक्त पासे थाय छे, बंध थाय छे, अने पाछो थाय छे. तेने पोताना भावी स्थिर भाग्योदयनुं पगलुं गणी आदि कवि गाय छे के,

"तुं म्हारे चांदलीये च्होट्यो, राज, सारा मुहूर्तमां सामळीयो;
"क्षणुं एक अळगा न थाओ, राज, प्राणजीवन वर पातळीओ.
"खडकीए जाउं त्यारे अडकीने ऊभो, बारीए जोउ त्यारे बेठो रे,
"शेरीए जाउ त्यारे सन्मुख आवे, व्हालो अमृतपें अति मीठो रे.
"जमतां जोउ त्यारे जोडे बेठो, सुती जोउ त्यारे सेजडीए रे,
"**वृन्दावनने मारग** जातां, आवीने वळग्यो बेलडीए रे.
"प्रीत करे तेनी केड न मुके, रस आपे अति रसीयो रे,
"नरसैयाचो स्वामी भले मळीयो, म्हारा हृदयकमळमां वसीयो रे.

बृ. का. दो. ७ पद २४.

स्थूल अवतारी शरीरवडे कृष्ण गोपीने तेना श्वशुरगृहमां खडकीए, बारीए, शेरीये, जमतां अने सुतां मळे एवो असंभाव्य अर्थ करवा करतां ए सर्व क्रियाओने गोपीना समाधिना पूर्वरंग-

मां ज सूक्ष्म प्रत्ययरूप साक्षात्कृत कृष्ण करे छे एवो एक ज अर्थ अंही घटे छे. दयारामनी गरबीओ तो प्रायशः आ पूर्वरंगना ज प्रसंगोनी छे एम गणी तेना रसनुं आस्वादन करनारने ज कविनी प्रेमभक्तिनुं शुद्ध स्वरूप प्रतीत थशेः जुवो खंड १०५–७.

(२) प्रेमसमाधि प्राप्त थया पछी भक्त अमुक प्रत्ययोनो साक्षात्कार केवळ साक्षीरूपे करे छेः जेम के ते कृष्णरूपनो प्रत्यय पूर्वरंगनी पेठे क्षणदृष्टनष्ट न थतां स्थिर थाय छे, अने विश्वव्यापी अनंत उत्सवनो अने अक्षरातीत पुराणपुरुषोत्तमनो साक्षात्कार थाय छे. हवे अंतिम कविना केटलाक उद्गारो उपर उपलक दृष्टि करीये छीए त्यारे एवो भास थाय छे के पूर्वरंगना जेवो ज मानुषाकार कृष्णप्रत्यय समाधिमां स्थिर थाय छे ए विना पूर्वरंगना अने समाधिना आ प्रत्यय सरखा लेखाया हशे. एक पासथी आवो अर्थ करवामां आपणे चर्चेलो (खंड ८९) दोष आवे छे त्यारे बीजी पासथी सामान्य भक्तो शिव, विष्णु, शक्ति आदि अनेक देवोना साक्षात्कार करवानी कथाओमां श्रद्धा राखे छे. आ श्रद्धा छेक पायाविनानी छे एम कहेवानुं कारण नथी, कारण के मूर्धज्योतिमां संयम करवाथी सूक्ष्म शरीरवाळा सिद्धो साथे योगी व्यवहार राखी शके छे ते प्रमाणे आवा देवस्वरूपना प्रत्यय पण एवा ज संयमादिकथी साक्षात्कृत केम न थाय ? आ विषयनी योगभावना आपणे उपर (खंड ७२–७३) जोई गया छीए ते ज भावनाए लोकश्रद्धामां रूपान्तर पामी देवयोनिनां अने प्रेतयोनिनां सत्वोना साक्षात्कारनी श्रद्धा उत्पन्न करी देखाय छे. आपणो प्रश्न एवो छे के आपणा कविए प्रेमसमाधिना विषयमां आ सामान्य श्रद्धा स्वीकारी छे के कोइ अन्य भावना स्वीकारी छे. आ प्रश्नना उत्तरमां कांइ विस्तारथी आपणे चर्चा करेली छे (खंड ९९–१०५) अने अखिलना वामपदमां अधिष्ठित थयेल राधाकान्तनो साक्षात्कार प्रेमसमाधिलीन भक्तने थाय छे. ए

राधाकान्तनुं रूप जोतां ज भक्त ए रूप पामे छे ए विना राधाकान्तना रूपनी बीजी व्याख्या नथी. ए राधाकान्त अने भक्त वच्चे नित्यकेलि चाली रही छे तेनो पण ए भक्तने साक्षात्कार थाय छे एटलेसुधीनी आपणा कविनी भावना आपणने समजाइ छे. परंतु ए भावनानी वधारे वीगत कविए आपी नथी अने ते जाणवानुं प्रत्यक्ष प्रमाण आपणी पासे नथी.

(३) ज्यां आगळ अंतिम कवि आम अटकी पडे छे त्यां आगळ आदि कवि वायुवेगथी चाले छे. श्रीकृष्णे अर्जुनने विराट स्वरूप देखाडयुं छे अने माता यशोदाने पोताना मुखमां विश्वरूप देखाडेलुं छे ए ज विश्वरूपनुं अनंतकोटिब्रह्मांडमय दर्शन योगदृष्टिने केवुं थाय छे ते अनेक प्रकारना विस्तारथी योगवासिष्ठमां अनेक स्थानोए मळी आवे छे अने अनेक तारागण उपर दूरदर्शक अने अन्य यन्त्रोवडे दृष्टि करी पाश्चात्य शास्त्रशोधको अवनवां चित्र आपे छे. आदि कविनुं अनंत उत्सवनुं चित्र (खंड९२–९५) थोडा पण सगर्भ शब्दोमां आपेलुं छे. लंबगोळ बेवडी गतिरेखाओ Orbits–मां ग्रहगणोनी गति एकवार रेखाना एक अर्धमां एक दिशामां थई बीजीवार बीजा अर्धमां एथी उलटी दिशामां थाय छे अने त्यांथी फरी प्रथम अर्धमां थाय छे अने तेथी ए ग्रहनुं गतिजीवन सतत चाले छे एवी पाश्चात्य दृष्टिमां अने " अरध–उरध " मां म्हालता अविनाश विषये आपणा आदि कविनी दृष्टिमां झाझुं अंतर नथी. अविनाश वस्तुनुं पारणुं तेनुं ज्योतिः वगेरेनुं आ कविए करेलुं मिताक्षर पण भव्य वर्णन योगवासिष्ठादिकमां आ देशमां थयेलां अने पाश्चात्य शास्त्रशोधकोने हाथे इतर देशमां वर्णनोथी बहु जुदुं पडे एम नथी. जुनागढनी एक झुंपडीमां रहेनारा आ कविए आवुं सत्य वर्णन करवानुं साधन क्यांथी प्राप्त कर्युं तेना उत्तरमां ए पोते ज कहे छे के आ अनंत उत्सवनो स्वामी नेत्रादिक विना एटले अंतर्मुख इन्द्रियोथी

गगनमां एटले चिदाकाशमां एटले कविना ज योगदृष्टिना ध्यान-विन्दुस्थानमां घुमी रहेलो प्रत्यक्ष थाय छे. ए स्वामीने ए कवि "श्याम" अने "कृष्ण" नामथी–"अलक्ष्य" अर्थवाळी संज्ञाथी ओळखे छे अने तेना चरणमां मरण–लय–इच्छे छे. प्रेमसमाधिथी आदि कवि आवा उत्सवोनो–आवा कृष्णस्वरूपनो–साक्षी थाय छे. अंतिम कविनी दृष्टिमां एवो चमत्कार उभरायो नथी. ए ज उत्सवनी लीलाने अन्य स्वरूपे पण कंइक पोताना शब्दोमां तो कंइक प्रधान उपनिषदोना शब्दोमां आदि कवि वर्णवे छे अने रसमय प्रेममय सत्य अनंत अक्षरातीत पुरुषोत्तमना "पोते करेला साक्षात्कारनुं सुंदर भव्य चित्र ए कवि आपे छे". (खंड ९२–९९ अने १२२) ते पण अंतिम कविनी ज्वालाओमां परोक्ष छे. दयाराम करतां आटली ज्वालाओ आदि कविमां विशेष छे अने तेने लीधे आदि कवि पासे ए अंतिम कवि मात्र शिष्य-स्थाने बेसवा योग्य छे. कारण जाते महाभक्त होवा छतां भक्तिनुं आदि कविए दीठेलुं परम शिखर ए शिष्य जेवाने जोवानुं बाकी रही गयुं छे. ते शिखरनो ए शिष्य साक्षी थयो हत तो एनी ज्वालाओ आदि कविना करतां पण वधारे प्रदीप्त कदाचित् थात.

(४) प्रेमयोगी जो उक्त प्रकारोथी दिव्य स्वरूपनो मात्र साक्षी थाय छे तो अन्य प्रकारोथी ए स्वरूपनो भोक्ता पण थाय छे. ज्यां राधारूपे भक्त कृष्ण पामे छे, अनंत उत्सवने प्रत्यक्ष करी तेना पन्थमां भुले छे, अने प्रभुने हाथे अच्युत रस पीये छे (खंड ११२), त्यां भक्त केवळ साक्षी मटी साथे साथे उक्त प्रकारे साक्षित्वना विषय थयेला अनंत उत्सवनो अने अक्षरातीतनो ए भक्त रसभोग करे छे. शेलीना प्रोमीथींयस अने एशियाना रस-भोगमां अने आदि कविना आ रसभोगमां प्रत्यक्ष फेर बहु नथी, पण केवळ कविना अने योगीना आनंदोमां जे फेर होवो जोइए ते तो अनिवार्य छे. परंतु आनन्दवृत्ति राणीना शब्दोमां प्रति-

बिम्बित करवी ते काम मात्र समर्थ कवियो ज करे छे अने जेटले अंशे पोतपोताना अनुभवथी पोताने थयेलो आनन्द शब्दगोचर थवानी आपणे आशा राखीए तेटले अंशे आदि तेम अंतिम कवि ए आशाने सफळ करे छे.

(५) भक्तहृदय हरिथी आकर्षाय छे, चोराय छे, लुंटाय छे, अने बंधाय पण छे ते मानुषी दशावाळाथी पण समजाय एवी कथा छे. पण हरिनुं हृदय भक्तथी आकर्षाय छे, चोराय छे, लुंटाय छे, अने बंधाय पण छे ए बोध ते विषयना अनुभवथी साध्य थयेली श्रद्धा विना सामान्य भावने गळे उतरे एम नथी. एवी वार्तोमां एवा भक्तोए सामान्य मनुष्योने, गोपीओए उद्धवने कह्युं हतुं तेम, कहेवुं पडशे के " बोल्युं अमारुं तमो परखाय ना जो " (खंड ८८) परंतु एक योगीनो अनुभव बीजा योगीनी अनुभवकथाने साची पाडी शके तो धीरानो अनुभव (खंड९१) प्रेमयोगीओनी अनुभवकथाने मळतो ज छे. कृष्णथी भक्तहृदय आकर्षाय छे, चोराय छे, बंधाय छे (खंड १०६) तेमज कृष्ण-हृदय भक्तथी आकर्षाय छे, चोराय छे, अने बंधाय छे (खंड १०५–१०६ द. का. सं. १७७–१८० ग. ४. ५; खंड ९०, र. व. पद ६८) अने प्रथम पगथीएथी प्रेमसमाधि सुधी भक्त च्हडी शके छे तेनुं एक कारण भक्तनो पुरुषप्रयत्न छे तो बीजुं प्रभुनो अनुग्रह छे. प्रभुना अनुग्रहना प्रवाहने भक्त पुरुष प्रयत्नथी पोतरना उपर धीमे धीमे आकर्षे छे, अने अभ्यासादि बळथी प्रयत्नबळ वधे छे अने प्रभुना अनुग्रहने ते ज क्रमे वधवुं पडे छे अने ते क्रियाथी संप्रदायश्रद्धा प्रमाणे भक्तिपोषण थाय छे. ए पोषणनी अने अनुग्रहनी संपूर्ण कला आवी रहे छे त्यां भक्त जीवन्मुक्त थाय छे अने देह छोड्या पछी नित्य कृष्णसाथे नित्यकेलि कर्या करे छे. राधाकृष्णना विहारना आ शिखरस्थानमां दयारामने आवी भावना छे, ए भावना आ स्थान सुधी

बेसे छे, अने आदिकविए मानेला ए शिखरस्थानमां ए भावना केवी रीते बेसती आवे छे ते शोधन करवानो अत्र अवकाश नथी.

(६) आदि कविना शिखरस्थानमां रासलीला वगेरे भावनाओ छे तेमां भक्तसमाज मळी नित्य कृष्ण साथे अने परस्पर साथे समकालीन भक्तियोग पामवानी भावना छे अने तेमां पण परस्पर आकर्षण अने परस्पर बंधननी भावना अंगीभूत छे. आदि कविनी आ विषयमां भावना आपणे जोई गया छीए, (खंड ९६-९८.) दयारामनी भावना आदिकविना शिखरस्थान जेटली उंची प्होंची नथी, तो पण तेमां उंची भावना छे. सामान्य दृष्टिए जोइए तो रासलीलामां इंग्रेजोना अथवा भील लोकना स्त्रीपुरुषोना भेगा नृत्य करतां विशेष नथी. आ नर्तकमंडळ भक्तिभावनी सामान्य उर्मिओथी तालबंध राखी उछळे छे एवी भावना उमेरीये तो पण तेवां भक्तमंडळ सर्व धर्मोमां मळी आवे छे अने आपणा आदि कविनुं पण एवा मंडळमां ज प्रमुख स्थान हतुं. भागवत लखायुं त्यारथी ते आज सुधीमां कृष्णगोपीओना रासमां सोळ सहस्र गोपीओ वच्चे एक ज कृष्ण नाचे छे एटलुं ज नही पण ए एक ज कृष्ण पोतानां सोळ सहस्र शरीरो निर्मीने एकेकेक शरीर वडे एकेकेक गोपी साथे नृत्य करे छे एटले एक कृष्ण शरीरना वामदक्षिण भागे जुदी जुदी मळी बे गोपीओ र्‌हे छे अने प्रत्येक गोपीनी बे पास बे कृष्ण शरीर र्‌हे छे. कृष्ण पोताना योगबळथी के ऐश्वर्यथी आटलां रूप धरे छे. अवतारी कृष्णे योगबळथी अनेक शरीर धर्यां होय तो तेवो प्रभाव योगसिद्धिओमां आवी जाय छे. देहत्याग पछी प्रेमी भक्तोनां सूक्ष्म शरीरो जीवात्माओरूपे भिन्न भिन्न रही व्यापक नित्यकृष्णना रसरूपने पोतपोतानी वच्चे सरी जतुं देखतां होय अने ते सर्वनो अनंत काळ रास मची र्‌हेतो होय एवी भावना पण समजाय एवी छे. पाश्चात्य शास्त्रनुं एक सर्वव्यापि इश्वर

(Ether)असंख्य परमाणुओना अंतराल भागोमां सरी जई एक छतां असंख्य भागमय देखाइ ए असंख्य परमाणुओने नचावी जाते तेमना भेगुं तेमने वळगी नृत्य कर्यां करे छे अने ते नृत्य अनादि अनंत छे ए चमत्कार अनंत उत्सवना साक्षी आदि कविए अनादि रासलीलाने नामे वर्णव्यो छे एवो पक्षवाद करनार कोई मळे तो तेनो उत्तर–पक्ष पण सहसा थाय एम नथी. दयारामनां वाक्य आ अनादि अनंत परमाणुरासने लागु पडे एवां छे; बाकी ते लागु पाडवा जेवी भावना ए कविना लेखमां के हृदयमां छे एवो आशय नथी ज; कारण गोपीओमां ए कवि मात्र भक्तभावना देखे छे, अने ए भावना सिद्ध करी शुकदेव अने चरणदास जेवा भक्तो तेम शिवजी पोते पण गोपीरूप धारण करीने ज रासलीलाना साक्षी बनी शक्या छे एवी कथाओ स्थूल वृन्दावनमां हजी श्रवणगोचर थाय छे.

"एक एक गोपी वच्चे नाथने रे नीरखे रुडीपेरे पास
" मांहो मांहे भरावी बाथने रे कहे कहो केम जइए घेर "?
"वचमां लीधा वळी नाथने रे रूप जुवे रुडीपेर "

द. का. सं. १६९, रासलीला.

रासकाळे गोपी "रूप" जुवे छे ते रूपनी व्याख्या दयारामे ज आपेली आपणे जोई छे (खंड १०४). ते प्रमाणे रासमां मळेली सर्व गोपी कृष्णने जोतां कृष्णरूप बने छे. भागवतकाररासमां सर्व गोपीओ सूक्ष्म देहोथी गयानो ध्वनि छे. दयाराम कहे छे के ए सर्व पोताना स्वामीओनी संमतिथी गई हती अने तेमांनी मात्र एकने एना रीसाळ स्वामीए संमति आपी नही ते सूक्ष्म शरीर

"रीस तजी न रीसाळवे रे, दीन गई दीनानाथ,
"सर्वे प्हेली जई ते मळी रे, तेनी देह पडी घरमांह्य.
"मोहनजीना अंगमां जई मळी रे, थाय अचरज सउ त्यांय.

द. का. स. १६९. रासलीला.

११८ रासलीलानी रात्रिने भागवतकार ब्रह्मरात्रि कहे छे. तेने विषये दयाराम गाय छे के ते दिवस रात्रि "सर्दमास पुनमका था" अने ते गोपीओने पूर्णानंद आपवा

" छे महीनेकी निसा बनाई
" जब रास बास सुख पाई "

द. का. सं. ६३२. ग. ९८

ए गोपीओमांनी एक किरताल बजावे छे, बीजी करताल बजावे छे, त्रीजी गाय छे, चोथी नृत्य करे छे, पांचमी सारंगी सुर वगाडे छे, छठ्ठी नाथने कंठे कर नांखे छे, अने केटलीक तो
" दो दो सखी मील फरे फुंदडी, दो दो बीच रहे बनमाली. "
स्थूल वृन्दावनना ललित किशोरना मन्दिरमां आवी अनेक क्रीडाओमां मग्न गोपीओने चित्रोमां ने शिल्पकार्यमां मूर्त्त करी छे. आवा आवा हरिना अनेक ख्याल जोई आनन्दमां आवी जइ कवि उद्गार करी उठे छे के

" सुरनर मुनिवर देख डंग भये,
" ऐसे, प्रभु तुम हो ख्याली ! "

द. का. सं. ६३२ ग. ९८.

ध्रुव नीचेना प्रदेशमां छ मासनी एक रात्रि होय छे तेमां 'ज्यारे शुक्लपक्ष होय छे त्यारे त्यां छए मास पूर्ण चंद्र आकाशमां प्रकाशे छे ने तेनी आशपाश बाकीना त्यांना आकाशमां चंद्र अने तारागण फुंदडी जेवुं नृत्य कर्यां करे छे, अने केटलाक पाश्चात्य कविओए ताराओमां (music of the spheres)तारागणनुं संगीत थतुं उत्प्रेक्षेलुं छे. अनेक आकारोवाळा व्यूह रची ए ताराओ आपणे शिर मात्र धीमी नदीना प्रवाह पेठे व्हे छे ते ध्रुव आगळ चक्रगतिमां फरे छे.' छ मासनी ए ध्रुवस्थाननी रात्रिना आ ताराओनां गान अने नृत्यने बधी रीते लागु पडे ए आपणा कविनुं रासवर्णन छे.

"ख्याली" प्रभु ए प्रेमयोगना अभ्यासी "ख्याली" कविनी योग-दृष्टि पासे आवो "ख्याल" जोवडाव्यो अने तेना प्रेमी हृदय पासे गवडाव्यो होय एवो ख्याल आपणे पण करीये तो कांइ अनुचित नही थाय. बाकी रसरूप अने रसोद्बोधक शक्तिना अने ते साभिप्राय सामग्रीओना रसिक कविराजनी राससंबंधी भावना जोया पछी राधागोपीओना वृन्दरूप रसोद्बोधक शक्तिना सिद्धासिद्ध भक्तोरूप जीव-अणुओनो अने एक रसरूप नित्यकृष्णनो, "इथर" अने परमाणुओना जेवो सतत रास कविनी भावनामां केवे रूपे खडो थयो हशे तेनुं चित्र भक्तिरसिक चतुर पुरुषो जाते ज प्रत्यक्ष करी शकशे.

नडिआद–देशाईनो
पांटीआ बाग.
१२–४–१९०६.

आ ग्रन्थकर्तानां पुस्तको.

(*संज्ञावाळां पुस्तको आ ग्रंथकर्ताए जाते लखेलां नथी.)

		रु. आ. पै.
सरस्वतीचंद्र भा. १ (चोथी आवृत्ति)		१–८–०
,, ,, (मराठी भाषांतर)*		१-१२-०
,, भा. २ (बीजी आवृत्ति)		१–४–०
,, ,, (मराठी भाषांतर)*		१–४–०
,, भा. ३ (बीजी आवृत्ति)		१–८–०
,, भा. ४		३–८–०
स्नेहमुद्रा (काव्य) (बीजी आवृत्ति)		१–०–०
युरोप, एशिया वगेरे खंडोमांनी महाप्रजाओमां जनस्वभावनां लाक्षणिक दृष्टांत		१–२–०
लीलावतीजीवनकला		०–१२-०
दयारामनो अक्षरदेह		१–४–०
श्रीईशावास्य तथा केन उपनिषद् सटीक (भाषांतर करनार शास्त्री जीवराम लल्लुभाई)*		०–४–०
स्नेहमुद्रानी टीका* (स्वर्गवासी जयंतीलाल मगनलाल देसाइ बी. ए.)		०-१२-०
The Classical Poets of Gujarat	Re.	1 0 0
Conflict of Laws between Converts and Non-Converts in India	Re.	0 4 0
Marriage forms under Ancient Hindu Law	Re.	0 12 0

उपरनां पुस्तको नीचे लखेले ठेकाणेथी मळशे.

मुंबाई–एन. एम. त्रिपाठी एन्ड कंपनी. प्रिन्सेस स्ट्रीट–कालकादेवीरोड पोस्ट नं. २. तथा सर्व प्रसिद्ध बुकसेलरो.

ब्हारगाम–सुरत, वडोदरा, अमदावाद, राजकोट, भावनगर वगेरे गामोना प्रसिद्ध बुकसेलरो.